माहनामा

(हिन्दी-माहनामा)

फ़ैज़ाने मदीना

FAIZAN E MADINA

सितम्बर सिने 2021 ईसवी | Trial Edition-5

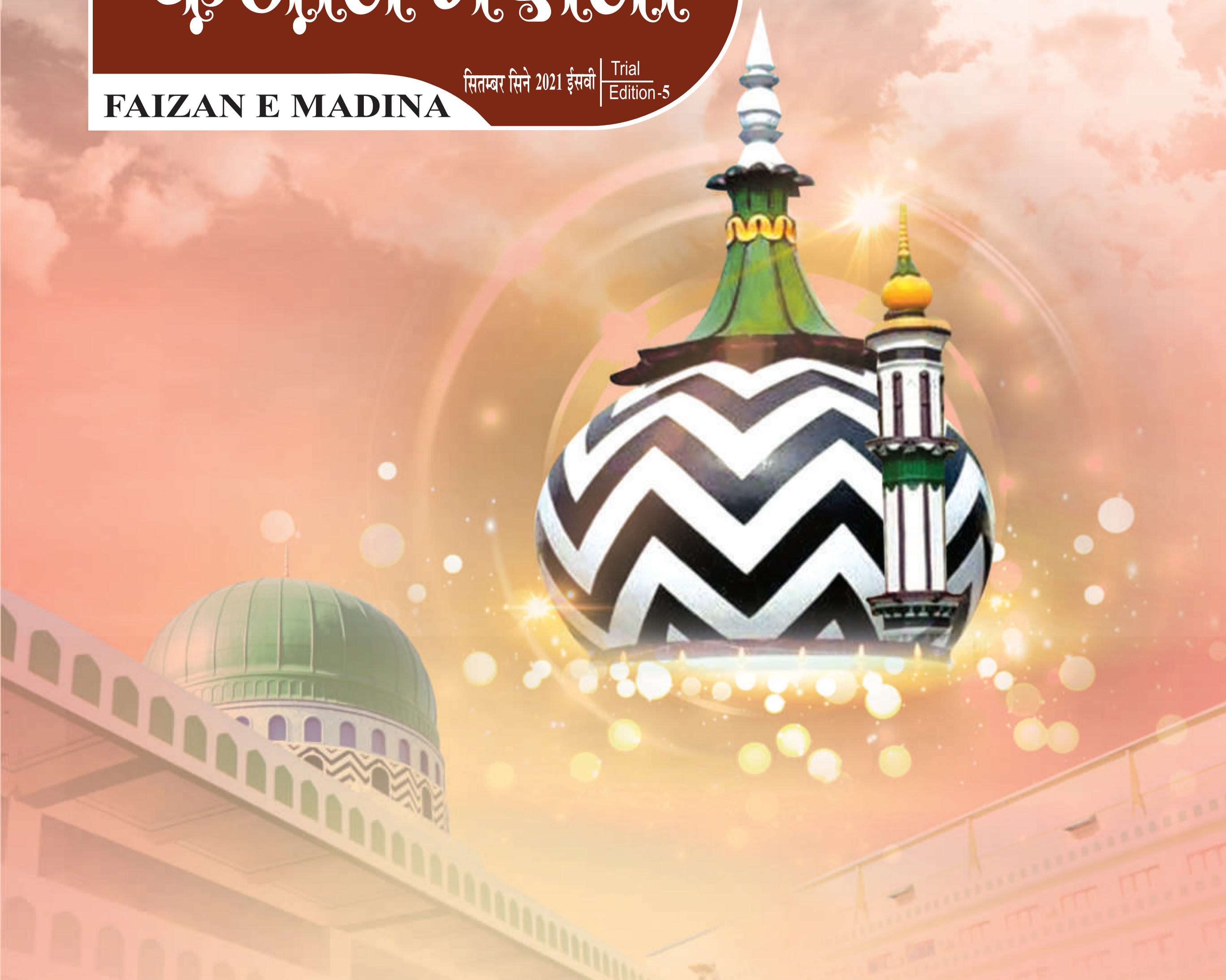

दामت برکاتہم العالیہ
फ़रमाने अमीरे एहले सुन्नत :

ज़मीन को अपनी नेकियों पर गवाह बनाएं गुनाहों पर नहीं।

- हक़ीक़ी कामयाबी और इस के हुसूल का त़रीक़ा 04
- शाने ख़त्मे नबुव्वत 20
- तू मुजद्दिद बन कर आया ऐ इमाम अह़मद रज़ा 32

माहनामा
फ़ैज़ाने मदीना
Monthly Magazine
FAIZAN E MADINA (HINDI)
सितम्बर सिने 2021 ईसवी | ट्रायल एडिशन-6

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर
(अज़ : अमीरे एहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

ब फ़ैज़ाने नज़र सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह, इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सैयदना इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رحمۃ اللہ تعالی علیہ

ब फ़ैज़ाने करम आला हज़रत इमामे एहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالی علیہ

इस्तेग़ासा / मन्क़बत — 3

क़ुरआनो हदीस
- हक़ीक़ी कामयाबी और इस के हुसूल का तरीक़ा — 4
- अच्छे किरदार का एक पैमाना — 6
- दीदारे रसूल और इस की बरकतें — 8
- अक़ीदए ख़त्मे नबुव्वत और सहाबा ए किराम का किरदार — 10

फ़ैज़ाने अमीरे एहले सुन्नत
- माहे सफ़र में सूरए मुज़्ज़म्मिल पढ़ना कैसा ? मअ़ दीगर सवालात — 12

दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत
- क़र्ज़ वापस करने पर कुछ फ़ीसद रेट मुक़र्रर करना कैसा ? मअ़ दीगर सवालात — 14

मज़ामीन (Articals)
- दुन्या के बजाए आख़ेरत का ज़्यादा सोचिए — 16
- पाकीज़ा लोगों के सरदार — 18
- शाने हबीब ब ज़बाने हबीब (क़िस्त : 09) — 20
- नसीहत और इस के तक़ाज़े — 22

ताजिरों के लिए
- अहकामे तिजारत — 24
- कारोबार में वादे की अहमियत — 26
- क़ुरआने पाक में मज़्कूर पेशे (क़िस्त : 01) — 27

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत
- हज़रते ख़ब्बाब बिन अरत رضی اللہ تعالی عنہ — 28
- अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए — 30

मुतफ़र्रिक़ (Mix)
- तू मुजद्दिद बन के आया ऐ इमाम अहमद रज़ा — 32
- फ़तावा रज़विया अज़ीम इल्मी शाहकार — 35
- जुम्अ़ा की 16 ख़ास बातें — 37

सेहत व तन्दुरुस्ती
- थेलीसीमिया और एनीमिया — 38
- तबीबों के लिए आला हज़रत के मदनी फूल — 40

क़ारेईन के सफ़हात
- नए लिखारी — 43

बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
- सब्रो शुक्र / जूते कैसे पेहनें ? — 46
- हाथी सब का साथी — 47
- चांद ग्रहन — 48
- अफ़्सोस नाक हादसा — 50
- ज़रूरत मन्दों की मदद — 51

इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
- रूहे आमाल — 53
- हज़रते सुमैया बिन्ते ख़ुब्बात رضی اللہ تعالی عنہا — 54
- औरत का इद्दत में पर्दे का एहतेमाम कितना ज़रूरी ? — 55

आफ़तों से घर की हिफ़ाज़त

يَاوَالِی जो कोई कोरे प्याले पर लिख कर इस में पानी भर कर घर के दरो दीवार पर डाले तो اِن شَآءَ الله वोह घर आफ़तों से मेहफ़ूज़ रहेगा। (मदनी पंजसूरह, सफ़हा 256)

सिलसिलए क़ादरिया में आ जाइए

पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सियत, शैख़े त़रीक़त, आ़लिमे निय्यत, रेहबरे शरीअ़त, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रूहानी फ़ैज़ान से माहाना कमो बेश 3 लाख 35 हज़ार मरीज़ और उन के नुमाइन्दे फ़ैज़याब होते हैं जिन्हें तक़रीबन 6 लाख तावीज़ात व अवरादे अ़त्तारिया फ़ी सबीलिल्लाह पेश किए जाते हैं। यूं सालाना कमोबेश 4 Millions (यानी 40 लाख) परेशान ह़ालों को तक़रीबन 7 Millions (यानी 70 लाख) तावीज़ात व अवरादे अ़त्तारिया फ़ी सबीलिल्लाह पेश किए जाते हैं। **मुरीद बनने के लिए** हज़ारों नाम अ़त्तारी बनने के लिए मौसूल होते हैं जिन्हें अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सिलसिले में दाख़िल कर के रिप्लाए के तौर पर अमीरे एहले सुन्नत का मक्तूब भी ई मैल किया जाता है।

नज़रे बद और हाथ पाउं के दर्द से नजात

يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ 786 बार काग़ज़ पर लिख (या लिखवा) कर तावीज़ की त़रह़ लपेट कर प्लास्टिक कोटिंग कर के रेगज़ीन या कपड़े वग़ैरा में सी कर बाज़ू में बांध या गले में पहन लीजिए اِن شَآءَ الله नज़रे बद का असर ख़त्म हो जाएगा। जिस के हाथ पाउं में दर्द हो उस के लिए भी येह तावीज़ اِن شَآءَ الله मुफ़ीद है। (बीमार आ़बिद, सफ़हा 35)

रिज़्क़ में बरकत

जो कोई माहे सफ़र के आख़री बुध को सूरए اَلَمْ نَشْرَح, सूरए وَالتِّيْن , सूरए نَصْر (اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ) और सूरए इख़्लास (قُلْ هُوَ اللهُ اَحَد) अस्सी अस्सी बार पढ़े उस महीने के ख़त्म होने से पेहले اِن شَآءَ الله वोह ग़नी हो जाएगा। (لطائفِ اشرفی، 2/231)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जिस ने येह कहा :

"اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ" उस के लिए मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई । (معجم کبیر، 25/5، حدیث:4480)

मन्क़बते इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ

किस से फ़रियाद करें प्यारे रज़ा तेरे बाद
कौन पुर्सां है ग़रीबों का भला तेरे बाद

शाम होती है सह़र होती है लेकिन मौला
ज़िन्दगी का न रहा कोई मज़ा तेरे बाद

तू ने हम जैसे गंवारों को नवाज़ा ऐसा
ख़ल्क़ अंगुश्त बदन्दां है शहा तेरे बाद

एहले सुन्नत पे वोह एह़सान किए हैं तू ने
कोई जचता ही न मोह़सिन है सिवा तेरे बाद

लाडले ग़ौस के ! फ़रियाद हमारी सुन ले
एक हंगामा ए मेह़शर है बपा तेरे बाद

मैं भिकारी हूं तेरा, ऐ मेरे ग़ैरत वाले
मांगते ग़ैर से आती है ह़या तेरे बाद

आले सादात के ऐ नाज़ उठाने वाले
क्यूं परेशान है अय्यूब तेरा तेरे बाद

अज़ : मौलाना सैयद अय्यूब अ़ली रज़वी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

शमाइमे बख़्शिश, स. 37

इस्तेग़ासा

क़बूल बन्दए दर का सलाम कर लेना
सगाने त़यबा में तेह़रीर नाम कर लेना

मेरे गुनाहों के दफ़्तर खुलें जो पेशे ख़ुदा
हुज़ूर उस घड़ी तुम लुत़्फ़े ताम कर लेना

तुम्हारे हुस्न में रख कर कशिश, कहा ह़क़ ने
कि दुश्मनों को दिखा कर ग़ुलाम कर लेना

मिला है ख़ूब ही नुस्ख़ा गुनाहगारों को
तुम्हारे नाम से दोज़ख़ ह़राम कर लेना

ह़बीब अ़र्श से भी पार जा के रब से मिले
कलीम को था मुयस्सर कलाम कर लेना

ख़ुदा ने केह दिया मेह़बूब से कि मेह़शर में
गुनाहगारों का तुम इन्तेज़ाम कर लेना

जमीले क़ादरी उठो जो अ़ज़्मे त़यबा है
चलो येह उम्र वहीं पर तमाम कर लेना

अज़ : मद्दाहुल ह़बीब मौलाना जमीलुर्रह़मान क़ादरी रज़वी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

क़बालए बख़्शिश, स. 21

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी

सगाने त़यबा : मदीनए मुनव्वरा के कुत्ते । **पेशे ख़ुदा :** **अल्लाह** पाक के सामने । **लुत़्फ़े ताम :** कामिल लुत़्फ़ो करम । **ह़क़ :** **अल्लाह** पाक । **कलीम :** ह़ज़रते सैयदना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام । **पुर्सां :** मददगार । **गंवारों :** गंवार की जम्अ़, नादान । **ख़ल्क़ :** मख़्लूक़ । **अंगुश्त बदन्दां है :** दांतों में उंगली दिए हुवे है यानी ह़ैरत ज़दा है । **जचता :** पसन्द आता । **आले सादात :** सैयदों की औलाद ।

ह़क़ीक़ी कामयाबी और इस के हुसूल का त़रीक़ा

(तीसरी और आख़री क़िस्त़ 03)

मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम अ़त्त़ारी

इरशादे बारी तआला है :

﴿وَالَّذِیْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَۙ(۴) وَالَّذِیْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَۙ(۵) اِلَّا عَلٰۤى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَیْرُ مَلُوْمِیْنَۚ(۶) فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْعٰدُوْنَۚ(۷)﴾

तर्जमा : और वोह जो ज़कात देने का काम करने वाले हैं। और वोह जो अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करने वाले हैं। मगर अपनी बीवियों या शरई बान्दियों पर जो उन के हाथ की मिल्क हैं पस बेशक उन पर कोई मलामत नहीं। तो जो इन के सिवा कुछ और चाहे तो वोही ह़द से बढ़ने वाले हैं। (پ18، المؤمنون:4تا7)

कामयाब लोगों की तीसरी ख़ूबी

फ़लाह़ पाने वालों के अवसाफ़ में एक वस्फ़ येह बयान फ़रमाया : ﴿وَالَّذِیْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَۙ(۴)﴾ **तर्जमा :** और वोह जो ज़कात देने का काम करने वाले हैं। (پ18، المؤمنون:4) इस का माना येह है कि वोह पाबन्दी के साथ, ख़ुश दिली से, इबादत समझते हुवे और हुक्मे इलाही पर सरे तस्लीम ख़म करते हुवे वक़्त पर ज़कात की अदाएगी करते हैं। ज़कात की अदाएगी में कई त़रह़ फ़लाह़ है। (1) ज़कात देने वाले के दिल से माल की मह़ब्बत निकलती है और माल की मह़ब्बत बुराइयों की जड़ है। (2) ज़कात देने वाले के दिल में मुआ़शरे के मोह़ताज व ग़रीब लोगों के साथ भलाई का जज़्बा पैदा होता है। (3) ज़कात से लोगों की ग़ुर्बत व तंगदस्ती का ख़ातमा होता है। (4) ग़रीब की ग़ुर्बत आ़म त़ौर पर उसे अमीर से नफ़रत ही सिखाती है, लेकिन ग़रीबों को ज़कात देने से उन के दिल में अमीरों के लिए नफ़रत के बजाए शुक्र गुज़ारी का जज़्बा पैदा होता है। इसी लिए जिन मुआ़शरों में ज़कात का तसव्वुर नहीं था, वहां ग़रीबों ने अमीरों के ख़िलाफ़ शदीद तरीन एह़तेजाज किया और हज़ारों लाखों की तादाद में अमीरों को क़त्ल किया। इन्क़िलाबे फ़्रान्स और इन्क़िलाबे रूस के पीछे सब से बड़ा बुन्यादी सबब येही था। (5) ज़कात देने वाले से शर दूर कर दिया जाता है, चुनान्चे नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने अपने माल की ज़कात अदा कर दी, बेशक **अल्लाह** तआ़ला ने उस से शर दूर फ़रमा दिया। (المعجم الاوسط، 1/431) (6) ज़कात देने से रेह़मते इलाही का नुज़ूल होता है, जबकि ज़कात की अदाएगी न करने से रेह़मते इलाही रुक जाती है, चुनान्चे ह़दीस में फ़रमाया : जब लोग ज़कात की अदाएगी छोड़ देते हैं तो **अल्लाह** पाक बारिश को रोक देता है, अगर ज़मीन पर चौपाए मौजूद न होते, तो आस्मान से पानी का एक क़त़रा भी न गिरता। (ابنِ ماجه، 4/368)

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत में मज़कूर लफ़्ज़े "ज़कात" का एक माना "तज़्किया" यानी "तज़्कियए नफ़्स" भी किया है, मुराद येह है कि ऐसे एहले ईमान कामयाबी से हमकिनार होते हैं जो दुन्या की मह़ब्बत और मज़्मूम सिफ़ात मसलन तकब्बुर व रियाकारी और बुग़्ज़ व ह़सद वग़ैरहा से ख़ुद को पाक करते हैं। इसी "नफ़्स के तज़्किए" के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** तआ़ला ने एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : ﴿قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰىۙ(۱۴)﴾ **तर्जमा :**

बेशक जिस ने खुद को पाक कर लिया वोह कामयाब हो गया । (پ30، الاعلی:14) एक और जगह फ़रमाया गया : तर्जमा : बेशक जिस ने नफ़्स को पाक कर लिया वोह कामयाब हो गया और बेशक जिस ने नफ़्स को गुनाहों में छुपा दिया वोह नाकाम हो गया। (پ30، الشمس:9،10) तज़्कियए नफ़्स करने वाले को कामयाबी का मिलना बहुत वाज़ेह है कि आख़ेरत में नजात व जन्नात उन लोगों के लिए हैं, जो क़ल्बे सलीम यानी सलामती वाला दिल ले कर खुदा की बारगाह में हाज़िर होंगे । इस के साथ दुन्यावी एतेबार से भी वोही लोग ज़्यादा कामयाब होते हैं, जो तज़्कियए नफ़्स करते हैं, यानी खुद को मालो दुन्या की महब्बत और तकब्बुर व हसद वग़ैरा से बचा कर रखते हैं, क्यूंकि जाइज़ तरीक़े से माल का हुसूल बुरा नहीं है, लेकिन माल की महब्बत में डूब जाना बहुत बुरा है, कि येह इन्सान को कन्जूस, मफ़ाद परस्त, इब्नुल वक़्त और खुद गर्ज़ बना देता है और ऐसे आदमी को कोई भी पसन्द नहीं करता है । यूंही हसद व तकब्बुर वाला भी बरबाद होता है कि हसद उसे तमाम तर मालो दौलत के बा वुजूद चैन से जीने नहीं देता कि वोह अपने माल से चैन पाने की बजाए दूसरों की तरक़्क़ी से बेचैनी मेहसूस करता रेहता है और इसी तरह तकब्बुर वाला लोगों में बद दिमाग़, अना परस्त, मग़रूर और फ़िरऔनियत वग़ैरा के अल्फ़ाज़ से मशहूर होता है और लोगों में ऐसी बदनामी और बुरी शोहरत कामयाबी नहीं, बल्कि नाकामी ही है।

﴿قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۙ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ؕ﴾

कामयाब लोगों की चौथी ख़ूबी

फ़लाहो कामरानी पाने वाले लोगों की चौथी ख़ूबी येह बयान फ़रमाई गई : وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۙ और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (پ18، المؤمنون:5) इस ख़ूबी का तअ़ल्लुक़ शर्मो हया के साथ है जो दीने इस्लाम की निहायत बुन्यादी अक़्दार व अख़्लाक़ में से है। आख़ेरत की कामयाबी का तअ़ल्लुक़ तो शर्मो हया के साथ बहुत वाज़ेह है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स मुझे उस चीज़ की ज़मानत दे जो उस के जबड़ों के दरमियान और टांगों के दरमियान है, यानी ज़बान और शर्मगाह की ज़मानत दे (कि उन्हें नाजाइज़ इस्तेमाल नहीं करेगा) तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।

(صحیح بخاری، 4/240، حدیث:6474)

बे हयाई से बचने में दुन्या की कामयाबी और फ़लाह कैसे है ? इस की तफ़्सील येह है कि शर्मो हया के ज़रीए बे हयाई की तबाहियों से बचा जा सकता है। अब बे हयाई की तबाहियां एक नज़र मुलाहज़ा कर लें तो अन्दाज़ा हो जाएगा कि इन बरबादियों से बचने में कितनी बड़ी कामयाबी छुपी हुई है।

येह एक आ़लमी सच्चाई (Universal Truth) है कि जिन्सी बे राहरवी के नताइज बड़े भयानक और तबाह कुन हैं कि ऐसे तमाम मुआ़शरों में ख़ानदानी निज़ाम तबाह हो चुका है। मियां बीवी का तअ़ल्लुक़ अगर बन भी जाए तो चन्द साल से ज़्यादा नहीं चलता और बक़िया मां-बाप बहन भाइयों का तो होना, न होना बराबर है और चचा मामूं तो उन के लिए गली महल्ले में फिरने वाले लोगों की तरह आ़म से आदमी ही होते हैं।

1 बे हयाई के मुर्तकिब लोगों को बारहा ब्लेक मेलिंग (Black Mailing) का सामना करना पड़ता है और यूं माल भी बरबाद होता है । 2 ख़ानदान के रूबरू शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है । 3 अगर बे हया शख़्स मुसलमान हो तो नमाज़ और दीगर इबादात की मिठास पाने का सवाल ही पैदा नहीं होता । 4 बे हया शख़्स के दिमाग़ में गन्दे ख़यालात जमे रेहते हैं, जिस से नींद, सुकून और वक़्त सब बरबाद होता है । 5 ऐसे लोग गन्दी गुफ़्तगू करते हुवे घंटों ज़ाएअ़ कर देते हैं। 6 बे हयाई के कामों से ऐडज़ (Aids) और दीगर मूज़ी और मोहलिक अमराज़ लगते हैं।

बे हयाई का इलाज : एक ख़ास उ़म्र को पहुंचने के बाद जिन्सी ख़्वाहिशात नफ़्से इन्सानी में ज़ुहूर पज़ीर होती हैं, जिन की तसकीन का नफ़्स हम से तक़ाज़ा करता है । ऐसे अफ़राद के लिए अल्लाह करीम ने अपनी रेहमत से जाइज़ ज़रीआ़ अ़ता फ़रमाया है और वोह "निकाह" है । निकाह में जाइज़ ख़्वाहिशात की जाइज़ ज़रीए से तक्मील भी है और ज़ेहनी सुकून समेत बे शुमार दीनी व दुन्यावी फ़वाइद भी हैं।

"सूरतुल मुअमिनून" की आयाते तृय्यिबात में बयान कर्दा इन अवसाफ़ को अपना लिया जाए तो खुदा के फ़ज़्लो करम से फ़लाहो कामयाबी के दरवाज़े खुल जाएंगे। मज़ीद अवसाफ़ और तफ़्सीलात के लिए "तफ़्सीरे सिरातुल जिनान" में इन ही आयात की तफ़्सीर मुलाहज़ा फ़रमाएं।

अच्छे किरदार का एक पैमाना

मौलाना मुह़म्मद नासिर जमाल अ़त्तारी मदनी

रेह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِاَهْلِهٖ وَاَنَا خَيْرُكُمْ لِاَهْلِي तुम में बेहतरीन शख़्स वोह है जो अपने अहलो अ़याल के मुआ़मले में बेहतर हो और मैं अपने अहलो अ़याल के मुआ़मले में तुम सब से बेहतर हूं।(1)

"ख़ैर (भलाई)" शर (बुराई) की ज़िद है, रेह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चूंकि ख़ैरुल ख़लाइक़ (यानी मख़्लूक़ात में सब से बेहतर) हैं आप ने ज़िन्दगी के कई मुआ़मलात में भी "सब से बेहतर" की निशानदेही फ़रमाई है जिस में इ़बादात व मुआ़शरत जैसे अहम तरीन शोबे भी शामिल हैं।

मज़्कूरा ह़दीसे पाक में "अहल" के साथ बेहतर सुलूक करने और ह़ुस्ने अख़्लाक़ से पेश आने वाले को बेहतरीन क़रार दिया है।(2)

याद रहे कि "अहल" का लफ़्ज़ "ख़ूनी रिश्तों, बीवी बच्चों, दोस्तों अ़ज़ीज़ों और हम ज़माना लोगों" के लिए बोला जाता है।(3)

तालीमाते नबवी के मुत़ाबिक़ मुआ़शरे के तमाम त़ब्क़ों के साथ ह़ुस्ने अख़्लाक़ से पेश आने की ताकीद है। घर के बाहर ह़ुस्ने अख़्लाक़ का पैकर बनना आसान है, कमाल तो येह है कि घर के अन्दर और बिल ख़ुसूस बीवी के साथ ह़ुस्ने अख़्लाक़ से पेश आए, **अल्लाह** पाक क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन से अच्छा बरताव करो।(4)

यानी तुम अपनी बीवियों से अच्छा बोलो, अपने अफ़्आ़ल और शक्लो सूरत को उन के ख़ात़िर अपनी त़ाक़त के मुत़ाबिक़ उसी त़रह़ ख़ूब सूरत बनाओ जैसे तुम उन से चाहते हो।(5)

एहले ख़ाना से मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

1 जब तुम ख़ुद खाओ तो बीवी को भी खिलाओ, जब ख़ुद पेहनो तो उसे भी पेहनाओ, उस के

चेहरे पर मत मारो, उसे बुरे अल्फ़ाज़ न कहो और उस से (वक़्ती) क़त्ए तअ़ल्लुक़ करना हो तो घर में करो ।(6)

2 सब से बदतरीन इन्सान वोह है जो अपने घर वालों पर तंगी करे । अ़र्ज़ की गई : वोह कैसे तंगी करता है ? इरशाद फ़रमाया : जब वोह घर में दाख़िल होता है तो बीवी डर जाती है, बच्चे भाग जाते और गुलाम सेहम जाते हैं जब वोह घर से निकल जाए तो बीवी हंसने लगे और दीगर घर वाले सुख का सांस लें ।(7)

3 कामिल तरीन मोमिन वोह है जिस के अख़्लाक़ सब से बेहतर हों और जो अपने घर वालों पर सब से ज़्यादा नर्मी करने वाला हो ।(8)

इस सिलसिले में आख़री नबी صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की मुबारक ज़िन्दगी हमारे लिए रोल मोडल है कि आप इस्लाम की दावत भी देते, आने वाले वुफ़ूद का इस्तेक़बाल भी करते, जनाज़ों में शिर्कत और मरीज़ों की इयादत, ग़रीबों की मदद भी करते, इन जैसी ला तादाद मसरूफ़ियात के बा वुजूद अज़्वाजे मुतृहहरात के साथ हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आते, उन के सामने मुस्कुराते, उन को भी हंसाते, उन के अख़राजात का ख़याल फ़रमाते, उन पर लुत़्फ़ो करम फ़रमाते, उन के ह़ालात से बा ख़बर रेहते, अ़स्र की नमाज़ अदा फ़रमा कर उन की ख़ैर ख़ैरियत मालूम करने तशरीफ़ ले जाते, जिस ज़ौजए रसूल के घर रेह़मते आ़लम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم रात ठेहरते बक़िया अज़्वाजे मुतृहहरात भी उस घर में जम्अ़ हो जातीं, बसा अवक़ात रात का खाना भी वहीं होता और फिर वोह तमाम अपने घर वापस चली जातीं । **अल्लाह** के रसूल صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم नमाज़े इ़शा के बाद सोने से पेहले एहले ख़ाना के साथ कुछ देर उन्सियत भरी गुफ़्तगू भी फ़रमाते ।(9) रसूलुल्लाह صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم अपने अहल के पास सफ़र से रात में नहीं तशरीफ़ लाते, आप सुब्ह़ को आते या शाम को ।(10) येह ज़ेहन में रहे कि अज़्वाजे मुतृहहरात का तअ़ल्लुक़ अलग अलग क़बीलों से था, उ़म्रें भी यक्सां नहीं थीं, मिज़ाज भी जुदा जुदा थे इस के बा वुजूद रेह़मते आ़लम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने अपनी अ़मली ज़िन्दगी से कामिल बनने का मेयार वाज़ेह़ फ़रमा दिया ।

सीरते रसूल के इन ख़ूब सूरत गोशों को सामने रख कर शौहर अपनी बीवी के लिए कामिल और परफ़ेक्ट बनना चाहता है तो वोह अपनी बीवी के साथ अच्छा बरताव करे, नर्म लबो लेहजे में गुफ़्तगू करे, मह़ब्बतो चाहत का इज़्हार करे, इस के साथ ख़ुश मिज़ाजी और बे तकल्लुफ़ी से पेश आए, ग़लतियां मुआ़फ़ कर दे, लड़ाई झगड़ा न करे, उस की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करे, बह़सो तकरार से बचने की पूरी कोशिश करे, उस पर ख़र्च करने में कन्जूसी से बचे, उस के घर वालों की भी इ़ज़्ज़त करे ।

यूंही बीवी अपने शौहर के लिए कामिल (परफ़ेक्ट) बनना चाहती है तो हमेशा शौहर से इ़ज़्ज़तो एह़तेराम का मुआ़मला रखे, उस से झगड़ा न करे, शौहर की त़रफ़ से शरीअ़त के मुत़ाबिक़ दिया जाने वाला हर हुक्म माने, वोह बात कर रहा हो तो आदाबे गुफ़्तगू का ख़याल रखे, उस की बात न काटे, पेहले ख़ामोशी से उस की बात सुने फिर कोई जवाब दे, उस की ग़ैर मौजूदगी में उस की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करे, शौहर के माल में ख़ियानत न करे, ख़ुश्बू वग़ैरा लगाए, मुंह की सफ़ाई और कपड़ों की पाकीज़गी का ख़ास ख़याल रखे, न मिलने पर सब्र और मिल जाने पर शुक्र की आ़दत डाले, मह़ब्बतो शफ़्क़त का अन्दाज़ अपनाए, अपनी ह़ैसियत के मुत़ाबिक़ ज़ैबो ज़ीनत अपनाए, शौहर के घर वालों और अ़ज़ीज़ों का एह़तेराम करे, अच्छे अन्दाज़ में उन का ह़ाल पूछे, उस के हर जाइज़ काम को सराहे, उसे देख कर ख़ुशी का इज़्हार करे ।

अगर तालीमाते नबवी के मुत़ाबिक़ परफ़ेक्ट होने का येह मेयार हम ने अपना लिया तो मुआ़शरे से शर और फ़साद का खुद ब खुद ख़ातमा हो जाएगा और ''ख़ैरो भलाई'' हमारी शनाख़्त (पेहचान) बन जाएगी ।

---

(1)ترمذی،5/475،حدیث:3921(2)لمعات التنقیح،6/121، تحت الحدیث: 3252، فیض القدیر،3/661، تحت الحدیث:4100(3)مرقاۃ المفاتیح،6/400، تحت الحدیث:3252 (4)پ4،النساء:19 (5) تفسیر ابن کثیر، 2/ 212 (6)ابو داود ،2/356،حدیث:2142(7) معجم اوسط،6/287، حدیث:8798 (8) ترمذی،4/278،حدیث:2621 (9) تفسیر ابن کثیر ، 2/ 212 ماخوذاً، التیسر بشرح جامع الصغیر، 1/533(10) مسلم،ص819،حدیث:4962۔

मौलाना मुहम्मद अदनान चिश्ती अत्तारी मदनी

दीदारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और इस की बरकतें

अल्लाह पाक ने बे शुमार मख़्लूक़ात को पैदा फ़रमाया, जिन में बाज़ ख़ूब सूरत और कुछ ख़ूब सूरत तरीन भी हैं कि जिन्हें देखते रेहने को जी चाहता है। एक पैकरे दिल नशीन ऐसा भी पैदा फ़रमाया कि जिस ने उसे देखा, बस देखता ही रेह गया और दोबारा देखने का अरमान दिल में लिए रहा। जो ज़ाहिरी आंखों से न देख सका जब उस ने उस पैकरे नूर के ज़िया बार चेहरे, सुरमगीं आंखों, गुले क़ुद्स की पत्तियों जैसे लबों, दुर्रे अदन जैसे नूर बरसाते दांतों, ज़ुलाले हलावत से तर कुन्जी ए कुन ज़बां और ऊंची बीनी मुबारक की रिफ़्अत का ज़िक्र सुना या पढ़ा तो इस जमाले जहां आरा की झलक देखने को तरसने लगा, दिन रात इसी रुख़े जानां की ज़ियारत को तड़पने लगा, करम हुवा और वोह नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم करम फ़रमाते हुवे ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए। जी हां ऐसा करम बे शुमार उम्मतियों पर फ़रमाया कि अपने दीवानों की आंखों को नूर और दिलों को सुरूर से मामूर करने के लिए वोह पैकरे नूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बारहा बेदारी में और बे शुमार बार ख़्वाबों में ज़ुहूर फ़रमा हुवे।

चेहरए मुस्तफ़ा की ज़ियारत इबादत है : जिस ख़ुश बख़्त ने उस रुख़े والضحی को ईमान की हालत में जागते हुवे देखा या उन की सोहबत से फ़ैज़याब हुवा और ईमान की हालत में दुन्या से रुख़्सत हुवा वोह सहाबी केहलाया और जिस ने ख़्वाब में उस रुख़े रौशन को देखा वोह भी बरकतों और रेहमतों से मेहरूम न रहा। जैसा कि हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरा देखना भी आला इबादत है जैसे क़ुरआने मजीद का देखना भी इबादत है बल्कि क़ुरआने मजीद को देखने से चेहरए अन्वर देखना आला ओ अफ़्ज़ल है कि क़ुरआन को देख कर मुसलमान सहाबी नहीं बनता। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरा देख कर सहाबी बन जाता है, उन का नाम मुसलमान बनाए, उन का चेहरा सहाबी बनाए और उन का तसव्वुर आरिफ़ बनाता है। फ़रिश्ते क़ब्र में वोह चेहरा ही दिखाते हैं, पेहचान कराते हैं, क़ुरआने मजीद या काबा ए मोअज़्ज़मा नहीं दिखाते। उन्हीं के चेहरे की शनाख़्त पर क़ब्र में बेड़ा पार होता है।[1]

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर का हुस्नो जमाल इतना बे मिसाल था कि सहाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ख़्वाहिश होती कि हर वक़्त इस ख़ूब सूरत व नूरानी चेहरे को देखते रहें, सहाबा ए किराम नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर के दीदारे फ़रहत आसार से किस तरह अपनी आंखों को ठन्डक और दिलों को राहत पहुंचाते थे इसे इस वाक़िए से समझा जा सकता है : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास एक सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه आप को यूं देख रहे थे कि नज़र हटाते

ही नहीं थे। पुरनूर चेहरे को टिकटिकी बांधे देखते ही रेहते थे। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस की क्या वज्ह है ? तो उन्हों ने अ़र्ज़ की :

بِاَبِیْ اَنْتَ وَاُمِّیْ اَتَمَتَّعُ مِنَ النَّظَرِ اِلَیْكَ यानी मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! मैं आप के चेहरए अन्वर की ज़ियारत से लुत्फ़ अन्दोज़ होता हूं।[2]

दीदारे रसूल की बरकतें : सहाबा ए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان की खुश नसीबी के भी क्या केहने ! उन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार का शरफ़ पाया, कोई ह़ाजत होती तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बे कस पनाह में ह़ाज़िर हो जाते और अपना मस्अला ह़ल करवा लेते। जिस त़रह़ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते ज़ाहिरी में फ़ैज़ लुटाया और अपने सह़ाबा की मुश्किलात को ह़ल फ़रमाया, इसी त़रह़ ह़याते ज़ाहिरी के बाद भी येह सिलसिला जारी रहा, कभी ख़्वाब में अपने आ़शिक़ों को ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमाया, किसी को अपने पास बुलाया, तो किसी की मुश्किल कुशाई फ़रमाई, किसी को शहादत का मुज़्दा सुनाया, तो किसी की दादरसी फ़रमाई। ऐसे बे शुमार वाक़िआ़त से किताबें मालामाल हैं।

ख़्वाब में नबिय्ये पाक को देखना : ख़्वाब में नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार होना ऐसी रौशन ह़क़ीक़त है कि जिसे झुटलाया नहीं जा सकता क्यूंकि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खुद इरशाद फ़रमाया : وَمَنْ رَاٰنِیْ فِی الْمَنَامِ فَقَدْ رَاٰنِیْ، فَاِنَّ الشَّیْطَانَ لَا یَتَمَثَّلُ فِیْ صُوْرَتِیْ यानी और जिस ने ख़्वाब में मुझे देखा तो बेशक उस ने मुझे ही देखा, क्यूंकि शैत़ान मेरी सूरत इख़्तियार नहीं कर सकता।[3]

एक और ह़दीसे पाक में यूं फ़रमाया :

مَنْ رَاٰنِیْ فِی الْمَنَامِ فَسَیَرَانِیْ فِی الْیَقَظَةِ وَلَا یَتَمَثَّلُ الشَّیْطَانُ بِیْ यानी जिस ने ख़्वाब में मुझे देखा वोह अ़न क़रीब बेदारी में भी मुझे देखेगा और शैत़ान मेरा हम शक्ल नहीं हो सकता।[4]

ह़िफ़ाज़ते ईमान की सनद : इस ह़दीसे पाक के तह़त शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : बादे विसाल भी अगर कोई हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस पर करम फ़रमाएंगे और बेदारी में भी अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमाएंगे। दूसरी तावील येह की गई है कि वोह (ख़्वाब में दीदार करने वाला) आख़िरत में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार करेगा यानी मख़्सूस त़रीक़े से क़ुर्बे ख़ास में बारयाब (यानी ह़ाज़िरी की इजाज़त पाने वाला) होगा और उस का ख़ातिमा ईमान पर होगा।[5]

येह बात भी याद रखनी चाहिए कि हर ज़ियारत करने वाला अपनी अपनी ईमानी ह़ैसियत के मुत़ाबिक़ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करता है, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में ज़ियारत की और कोई ना पसन्दीदा बात नहीं थी (मसलन सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नाराज़ नहीं थे) तो वोह उ़म्दा ह़ाल में रहेगा, अगर वीरान जगह पर दीदार किया तो वोह वीराना सब्ज़ाज़ार में बदल जाएगा।[6]

हर रात दीदारे मुस्त़फ़ा : करोड़ों मालिकियों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते थे, कोई रात ऐसी नहीं गुज़री कि मैं ने जिस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत न की हो।[7]

क्या ख़्वाब में देखने वाला भी सह़ाबी है ? खूब याद रहे कि जिसे ख़्वाब में रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हो वोह हरगिज़ हरगिज़ सह़ाबी नहीं। सह़ाबी होने के लिए ज़रूरी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में ईमान की ह़ालत में आप की ज़ियारत या सोह़बत का शरफ़ ह़ासिल हो, चाहे एक लम्ह़े के लिए ही हो और फिर ईमान पर ख़ातिमा भी हो।[8] ऐसे भी बद नसीब हुवे जिन्हों ने ईमान की ह़ालत में ज़ियारत का शरफ़ पाया लेकिन बाद में इस्लाम से फिर गए। मुनाफ़िक़ीन भी कलेमा पढ़ते थे लेकिन दर अस्ल वोह काफ़िर थे इस लिए कि वोह अन्दर से नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुख़ालिफ़ थे, इसी लिए सह़ाबी न हुवे।

---

(1) مراٰۃ المناجیح، 8/60 (2) الشفاء، 2/20 مختصراً (3) بخاری، 1/57، حدیث:110
(4) بخاری، 4/406، حدیث:6993 (5) نزہۃ القاری، 5/846 (6) روح البیان، 9/230، پ27، النجم، تحت الآیۃ:18 (7) حلیۃ الاولیاء، 6/346، رقم:8855
(8) فتح الباری، 8/3۔

अक़ीदए ख़त्मे नबुव्वत और सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का किरदार

मौलाना अबू मुहम्मद अ़त्तारी मदनी

अल्लाह पाक ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दुन्या में तमाम अम्बिया ओ मुर्सलीन के बाद सब से आख़िर में भेजा और रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर रिसालत व नबुव्वत का सिलसिला ख़त्म फ़रमा दिया। सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने या हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाद क़ियामत तक किसी को नबुव्वत मिलना नामुमकिन है, येह दीने इस्लाम का ऐसा बुन्यादी अ़क़ीदा है कि जिस का इन्कार करने वाला या इस में ज़र्रा बराबर भी शको शुबा करने वाला काफ़िर व मुर्तद हो कर दाइरए इस्लाम से निकल जाता है। "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" के साबेक़ा शुमारों[1] में क़ुरआनो ह़दीस और तफ़ासीर की रौशनी में इस अ़क़ीदे को बड़े उ़म्दा पैराए में बयान किया गया है। इस मज़मून में ख़त्मे नबुव्वत पर सह़ाबा ए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم के आमालो अक़्वाल बयान किए जाएंगे जिन के पढ़ने से اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ अ़क़ीदए ख़त्मे नबुव्वत को मज़ीद तक़्वियत व पुख़्तगी मिलेगी कि अ़क़ीदए ख़त्मे नबुव्वत सह़ाबा ए किराम, ताबेईन, तब्ए़ ताबेईन, सलफ़ सालेह़ीन, उ़लमा ए कामिलीन और तमाम मुसलमानों का इजमाई व इत्तेफ़ाक़ी अ़क़ीदा है।

सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते फ़ीरोज़ दैलमी का अ़क़ीदए ख़त्मे नबुव्वत के लिए जज़्बा : नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में अस्वद अ़न्सी नामी शख़्स ने यमन में नबुव्वत का दावा किया, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के शरो फ़साद से लोगों को बचाने के लिए सह़ाबा ए किराम से फ़रमाया कि इसे नेस्तो नाबूद कर दो। ह़ज़रते फ़ीरोज़ दैलमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के मह़ल में दाख़िल हो कर उसे क़त्ल कर दिया। रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बर देते हुवे मदीनए मुनव्वरा में मरज़े विसाल की ह़ालत में सह़ाबा ए किराम को येह ख़बर दी कि आज अस्वद अ़न्सी मारा गया और उसे उस के अहले बैत में से एक मुबारक मर्द फ़ीरोज़ ने क़त्ल किया है, फिर फ़रमाया : فَازَ فَیْرُوز यानी फ़ीरोज़ कामयाब हो गया।[2]

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और जमाअ़ते सह़ाबा का अ़क़ीदा : मुसलमानों के पेहले ख़लीफ़ा, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सैयदना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में नबुव्वत का झूटा दावा करने वाले मुसैलमा कज़्ज़ाब और उस के मानने वालों से जंग के लिए सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सरबराही में 24 हज़ार का लश्कर भेजा जिस ने मुसैलमा कज़्ज़ाब के 40 हज़ार के लश्कर से जंग की, तारीख़ में इसे "जंगे यमामा" के नाम से याद किया जाता है, इस जंग में 1200 मुसलमानों ने जामे शहादत नोश फ़रमाया जिन में 700 ह़ाफ़िज़ व क़ारी ए क़ुरआन सह़ाबा भी शामिल थे जबकि मुसैलमा कज़्ज़ाब समेत इस के लश्कर के 20 हज़ार लोग हलाक हुवे और **अल्लाह** पाक ने मुसलमानों को अ़ज़ीम फ़त्ह़ नसीब फ़रमाई।[3] मुफ़क्किरे इस्लाम ह़ज़रते अ़ल्लामा शाह तुराबुल ह़क़ क़ादरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि रेह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस सालह मदनी दौर में ग़ज़्वात और सराया मिला कर कुल 74 जंगें हुईं जिन में कुल 259 सह़ाबा शहीद हुवे जबकि मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ जो "जंगे यमामा" लड़ी गई वोह इस क़दर ख़ूंरेज़ थी कि सिर्फ़ इस एक जंग में 1200 सह़ाबा शहीद हुवे जिन में सात सौ हुफ़्फ़ाज़ सह़ाबा भी शामिल हैं।[4] ख़त्मे नबुव्वत के मुआ़मले में जंगे यमामा में 24 हज़ार सह़ाबा ए किराम ने शरीक हो कर और 1200 सह़ाबा ए किराम ने अपनी जानों के नज़राने पेश कर के अपना अ़क़ीदा वाज़ेह़ कर दिया कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** पाक के आख़री नबी व रसूल हैं, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाद कोई नया नबी नहीं हो सकता और अगर कोई नबुव्वत का दावा करे तो उस से एलाने जंग किया जाएगा।

ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म का अ़क़ीदा : मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सैयदना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बाद रोते हुवे इस त़रह़ फ़रमाया : या रसूलल्लाह मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान ! **अल्लाह** पाक की बारगाह में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मर्तबा इस क़दर बुलन्द है कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अम्बिया ए किराम में सब से आख़िर में भेजा है और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र इन सब से पेहले फ़रमाया है।[5]

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी का अ़क़ीदा : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कूफ़ा में कुछ लोग पकड़े जो नबुव्वत के झूटे दावेदार मुसैलमा कज़्ज़ाब की तश्हीर करते और उस के बारे में लोगों को दावत देते थे। आप

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते सैयदना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस बारे में ख़त़ लिखा। ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब में लिखा कि उन के सामने दीने ह़क़ और لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللہِ की गवाही पेश करो। जो इसे क़बूल कर ले और मुसैलमा कज़्ज़ाब से बराअत व अ़लाह़दगी इख़्तियार करे उसे क़त्ल न करना और जो मुसैलमा कज़्ज़ाब के मज़हब को न छोड़े उसे क़त्ल कर देना। उन में से कई लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया तो उन्हें छोड़ दिया और जो मुसैलमा कज़्ज़ाब के मज़हब पर रहे तो उन को क़त्ल कर दिया।[6]

ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा का अ़क़ीदा : मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के औसाफ़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : بَیْنَ كَتِفَیْهِ خَاتَمُ النُّبُوَّةِ وَهُوَ خَاتَمُ النَّبِيِّيْنَ यानी रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोनों कन्धों के दरमियान मोहरे नबुव्वत थी और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आख़री नबी हैं।[7]

सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते सुमामा का अ़क़ीदा : ह़ज़रते सैयदना सुमामा बिन उसाल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नबुव्वत के झूटे दावेदार मुसैलमा कज़्ज़ाब से इस क़दर नफ़रत किया करते थे कि जब कोई आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने उस का नाम लेता तो जोशे ईमानी से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्म पर लरज़ा त़ारी हो जाता और रोंगटे खड़े हो जाते। आप ने एक मरतबा मुसलमानों से ख़ित़ाब करते हुवे येह तारीख़ी जुम्ले अदा किए : मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ न तो कोई और नबी है न इन के बाद कोई नबी है, जिस त़रह़ **अल्लाह** पाक की उलूहिय्यत में कोई शरीक नहीं है इसी त़रह़ मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नबुव्वत में कोई शरीक नहीं है।[8]

सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा का अ़क़ीदा : बुख़ारी शरीफ़ में है : ह़ज़रते इस्माईल बिन अबी ख़ालिद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ केहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से पूछा : आप ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साह़बज़ादे ह़ज़रते इब्राहीम को देखा था? ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : इन का बचपन में इन्तेक़ाल हो गया था। अगर रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाद किसी नबी का होना मुक़द्दर होता तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साह़बज़ादे ज़िन्दा रेहते, मगर हुज़ूर के बाद कोई नबी नहीं है।[9]

सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते अनस का अ़क़ीदा : ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : (रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साह़बज़ादे) ह़ज़रते इब्राहीम इतने बड़े हो गए थे कि उन का जिस्म मुबारक गेहवारे (झूले) को भर देता, अगर वोह ज़िन्दा रेहते तो नबी होते मगर उन का ज़िन्दा रेहना मुमकिन नहीं था क्यूंकि तुम्हारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आख़िरुल अम्बिया हैं।[10]

सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द का अ़क़ीदा : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को उ़म्दा और अह़सन त़रीक़े से दुरूदे पाक पढ़ने की तरग़ीब दिलाई तो लोगों ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हमें उ़म्दा दुरूदे पाक सिखा दीजिए। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि इस त़रह़ दुरूदे पाक पढ़ो :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صَلٰوتَكَ وَرَحْمَتَكَ وَبَرَكَاتِكَ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ، وَاِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ،
وَخَاتَمِ النَّبِيّٖنَ مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ...

यानी ऐ **अल्लाह**! अपनी रेह़मतें और बरकतें रसूलों के सरदार, मुत्तक़ियों के इमाम और आख़री नबी मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमा जो तेरे बन्दे और रसूल हैं।[11] यानी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब ज़ाते ख़ुद ख़ातमुन्नबिय्यीन के अल्फ़ाज़ के साथ नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा और दूसरों को भी इस त़रह़ दुरूदे पाक पढ़ने की तरग़ीब दिलाई।

ह़ज़रते उम्मे ऐमन का अ़क़ीदा : ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ाहिरी विसाल फ़रमाने के बाद ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : आइए ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मुलाक़ात के लिए चलते हैं जैसा कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन से मुलाक़ात फ़रमाया करते थे। जब दोनों उन के पास पहुंचे तो वोह रोने लगीं। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : आप क्यूं रोती हैं? ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा : इस वज्ह से रो रही हूं कि (नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल की वज्ह से) आस्मान से वह़ी आने का सिलसिला ख़त्म हो गया है। येह सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी रोने लगे।[12]

अल्लाह करीम हमें अ़क़ीदए ख़त्मे नबुव्वत की ह़िफ़ाज़त करने और इस पर साबित क़दम रेहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) محرمُ الحرام، ربیع الاول، ذوالحجۃ الحرام 1439ھ، جُمادَی الاُخریٰ 1440ھ، محرمُ الحرام 1441ھ اور 1442ھ (2) خصائص الکبریٰ، 1/467، مدارج النبوۃ مترجم، 2/481 ملخصاً (3) الکامل فی التاریخ،2/218 تا 224، سیرتِ سید الانبیاء مترجم، ص608،609، مراٰۃ المناجیح، 3/283 (4) ختمِ نبوت، ص83 (5) الشفا، 1/45 (6) سننِ کبریٰ للبیہقی، 8/350، رقم: 16852 (7) ترمذی،5/364، حدیث:3658 (8) ثمار القلوب فی المضاف والمنسوب، 1/261 (9) بخاری،4/153، حدیث:6194 (10) زرقانی علی المواھب،4/355 (11) ابنِ ماجہ، 1/489، حدیث:906 (12) مسلم، ص1024، حدیث:6318، مراٰۃ المناجیح،8/301۔

मदनी मुज़ाकरे के सवाल जवाब

शैखे़ त़रीक़त अमीरे एहले सुन्नत, बानी ए दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इबादात और मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ किए जाने वाले सवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमाते हैं, इन में से 9 सवालात व जवाबात ज़रूरी तरमीम के साथ यहां दर्ज किए जा रहे हैं :**

1 इन्सान के लिए कौन सी चीज़ मन्हूस होती है ?

सवाल : क्या मकान, दुकान, गाड़ी, बहू या बीवी को मन्हूस कहा जा सकता है कि जब से येह आई है नुक़्सान ही हो रहा है ?

जवाब : येह सब लोगों की अपनी बनाई हुई बातें हैं, न कोई चीज़ मन्हूस होती है और न ही कोई दिन मन्हूस होता है, सारे दिन **अल्लाह** पाक के हैं। अलबत्ता किसी के लिए वोह घड़ी ज़रूर मन्हूस है जिस में वोह गुनाह कर रहा है। (تفسیر روح البیان، پ10، التوبة، تحت الآیة:37، 3/428 ماخوذاً)

(मदनी मुज़ाकरा, 20 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1441 हिजरी)

2 माह़ी ए बिदअ़त का मत़लब

सवाल : आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه माह़ी ए बिदअ़त थे, इस का क्या मत़लब है ?

जवाब : माह़ी ए बिदअ़त आप का लक़ब है, इस का मत़लब है : बिदअ़त को मिटाने और सुन्नतों को ज़िन्दा करने वाले। सुन्नतों की जगह जो बिदअ़तें और गुमराहियां राइज हो गई थीं आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उन को मिटाया है इसी लिए आप को "माह़ी ए बिदअ़त" कहा जाता है।

(मदनी मुज़ाकरा, 20 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1441 हिजरी)

3 माहे सफ़र में सूरए मुज़्ज़म्मिल पढ़ना कैसा ?

सवाल : क्या सफ़र के महीने में सूरए मुज़्ज़म्मिल पढ़ना ज़रूरी है ?

जवाब : सूरए मुज़्ज़म्मिल पढ़ना कारे सवाब है, चाहे सफ़र में पढ़ें या किसी और महीने में, यूंही किसी भी दिन या रात में पढ़ें, जाइज़ है। अलबत्ता सफ़र में इस लिए पढ़ना कि अगर नहीं पढ़ी तो बलाएं नाज़िल हो जाएंगी या बलाएं चिमट जाएंगी या मुसीबतें आएंगी तो येह तसव्वुर ग़लत़ है। सूरए मुज़्ज़म्मिल सिर्फ़ **अल्लाह** पाक को राज़ी करने के लिए पढ़नी चाहिए और सिर्फ़ सफ़र में नहीं, **अल्लाह** तौफ़ीक़ दे तो रोज़ाना ही पढ़ लेनी चाहिए।

(मदनी मुज़ाकरा, 27 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1441 हिजरी)

4 आला ह़ज़रत पर आंखें बन्द होने का मत़लब

सवाल : आप केहते हैं आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर हमारी आंखें बन्द हैं इस का क्या मत़लब है ?

जवाब : आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर आंखें बन्द होने का मत़लब येह नहीं कि सर की आंखें बन्द हैं बल्कि इस का मत़लब येह है कि हम आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर किसी भी क़िस्म की तन्क़ीद नहीं करते और न ही हमें उन की बयान कर्दा किसी बात के बारे में कोई शुबा होता है। आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मुआ़मले में आंखें बन्द करने में ही आ़फ़ियत है, इस बारगाह में आंखें खोलेंगे तो ठोकर लगने का ख़दशा है। याद रखिए ! हम आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को **अल्लाह** पाक का वली मानते हैं नबी नहीं मानते, **अल्लाह** पाक के बेशुमार औलिया ए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَیْهِم हैं उन्ही में से एक

आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी हैं। विलायत का दरवाज़ा बन्द नहीं हुवा बल्कि नबुव्वत का दरवाज़ा बन्द हुवा है। अब कोई भी नया नबी नहीं आ सकता।

(मदनी मुज़ाकरा 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1440 हिजरी)

5 आप आला ह़ज़रत की किस ख़ूबी से मुतास्सिर हुवे ?

सवाल : आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ात अगर्चे बहुत सारी ख़ूबियों का मजमूआ़ है लेकिन आला ह़ज़रत का अ़क़ीदत मन्द होने के नाते क्या आप को भी इन तमाम अच्छी ख़ूबियों में से बाज़ (कुछ ख़ूबियां) ज़्यादा पुर कशिश लगती हैं ?

जवाब : मैं आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़ूबियों को बाहम तरजीह़ देने में फ़ैसला नहीं कर पा रहा क्यूंकि मुझे आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की किसी ख़ूबी में कोई कमज़ोरी नज़र नहीं आ रही कि जिसे देख कर मैं दूसरी ख़ूबी को उस पर तरजीह़ दे सकूं। सारी ही ख़ूबियां वज़्नदार हैं। **अल्लाह** पाक की मह़ब्बत में उन का कोई जवाब नहीं है। इश्क़े रसूल का वस्फ़ देखो तो मेराज की बुलन्दियों पर है। क़ुरआने करीम के फ़ेहम में उन का कोई मिस्ल नहीं, उन जैसा कोई मुफ़स्सिर नहीं, उन जैसा कोई मोह़द्दिस नहीं, उन जैसा कोई मुफ़्ती नहीं, उन जैसा कोई अ़ल्लामा नहीं, हम केह सकते हैं कि **"जिस सम्त आ गए हैं सिक्के बिठा दिए हैं।"**

(मदनी मुज़ाकरा 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1440 हिजरी)

6 क्या मियां बीवी जन्नत में यक्जा होंगे ?

सवाल : क्या मियां बीवी दोनों जन्नत में एक साथ रहेंगे ?

जवाब : अगर मियां बीवी का ख़ातमा ईमान पर हुवा तो येह दोनों जन्नत में साथ रहेंगे। (التذکرۃ باحوال الموتی وامور الآخرۃ، ص 462) अगर उन में से किसी का مَعَاذَ اللّٰہ ईमान सलामत न रहा तो दोज़ख़ उस का ठिकाना होगा और जो जन्नत में जाएगा उस का किसी दूसरे जन्नती से निकाह़ हो जाएगा। जन्नत में जाने वाले को अपने दूसरे फ़रीक़ के बिछड़ने का कोई सदमा भी नहीं होगा क्यूंकि जन्नत रंजो ग़म का मक़ाम नहीं।

(मदनी मुज़ाकरा 21 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1439 हिजरी)

7 क्या अम्मी अब्बू का अ़क़ीक़ा किया जा सकता है ?

सवाल : क्या औलाद अपने अम्मी अब्बू का अ़क़ीक़ा कर सकती है ? नीज़ अगर किसी का बचपन में अ़क़ीक़ा न हुवा हो तो वोह ख़ुद अपने वलीमे के साथ अपना अ़क़ीक़ा कर सकता है ?

जवाब : अगर अम्मी अब्बू का अ़क़ीक़ा नहीं हुवा था तो अब उन की इजाज़त से कर सकते हैं। इसी त़रह़ अगर किसी का बचपन में अ़क़ीक़ा न हुवा हो तो वोह अपने वलीमे के मौक़ेअ़ पर भी अपना अ़क़ीक़ा कर सकता है। (मदनी मुज़ाकरा 21 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1439 हिजरी)

8 नाराज़ी की ह़ालत में वालिदैन का इन्तेक़ाल हो जाए तो ?

सवाल : अगर औलाद ने अपने वालिदैन में से किसी एक के साथ रूठने वाला अन्दाज़ इख़्तियार किया और इस दौरान उन का इन्तेक़ाल हो गया तो अब औलाद को क्या करना चाहिए ?

जवाब : ऐसी सूरत में औलाद वोही करे जिस का शरीअ़त ने हुक्म दिया है। उन की तजहीज़ो तक्फ़ीन का इन्तेज़ाम, ख़ूब दुआ़ ए मग़्फ़ेरत व ईसाले सवाब करे।

(मदनी मुज़ाकरा 12 मुह़र्रमुल ह़राम 1440 हिजरी)

9 बद अ़मली से बैअ़त नहीं टूटती

सवाल : मुरीद अगर नमाज़ें न पढ़ें, क़ुरआने पाक की तिलावत और दीगर नेक काम न करे तो क्या उस की बैअ़त टूट जाती है ?

जवाब : मुरीद अगर नमाज़ें नहीं पढ़ता और गुनाहों में पड़ा हुवा है तो येह बे अ़मली है और बे अ़मली से बैअ़त नहीं टूटती। मुरीद को चाहिए कि वोह नमाज़ें पढ़े, शरीअ़त के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे और बे अ़मली से बचे। याद रखिए ! गुनाहों से अ़ज़ाबे नार की ह़क़दारी तो होगी मगर बैअ़त नहीं टूटेगी।

(मदनी मुज़ाकरा 12 मुह़र्रमुल ह़राम 1440 हिजरी)

तलफ़्फ़ुज़ (उच्चार) दुरुस्त कीजिए !

ग़लत तलफ़्फ़ुज़	सह़ीह़ तलफ़्फ़ुज़
तह़फ़ुज़ / तह़फ़ुज़ात	तह़फ़्फ़ुज़ / तह़फ़्फ़ुज़ात
ह़मायत	ह़िमायत
तर्यान्वे / तिरा-नवे	तिरान-वे
ख़ासह	ख़ास्सह
ख़रच	ख़र्च

(उर्दू लुग़त, जिल्द 5, 8)

दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत

दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई राहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल है । तेह़रीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ़ से मुल्क व बैरूने मुल्क से हज़ारहा मुसलमान शरई मसाइल दरयाफ़्त करते (पूछते रेहते) हैं, जिन में से 3 मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किए जा रहे हैं ।

1 क़र्ज़ वापस करने पर उस का कुछ फ़ीसद रेट मुक़र्रर करना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्यिाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि हाउस बिल्डिंग फ़ाइनान्स कंपनी की जानिब से कम और मुतवस्सित़ आमदनी वाले अफ़राद को घर फ़राहम करने के लिए एक हाउसिंग फ़ाइनान्स स्कीम का आग़ाज़ किया गया, जिस में मकान, फ़्लेट की तामीर और ख़रीदारी के लिए तक़रीबन पेंतालीस लाख (4500000) तक का क़र्ज़ा दिया जा रहा है और वापसी की मुद्दत बीस साल तक है और इस क़र्ज़े का बारह फ़ीसद रेट मुक़र्रर किया गया है जो कि क़र्ज़ा लेने वाले को इज़ाफ़ी अदा करना होगा । मिसाल के त़ौर पर किसी ने कंपनी से दस लाख रुपिये लिए हैं तो उसे एक लाख बीस हज़ार (120000) रुपिये इज़ाफ़ी देने होंगे । इस स्कीम के मुतअ़ल्लिक़ शरई हुक्म क्या है ? क्या हम इस स्कीम के तह़त क़र्ज़ ले सकते हैं या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

सवाल में बयान कर्दा स्कीम, सूदी स्कीम है कि कंपनी की जानिब से मुक़र्रर कर्दा इज़ाफ़ी बारह फ़ीसद, क़र्ज़ पर मशरूत़ नफ़्अ़ है और ब हुक्मे ह़दीस क़र्ज़ पर मशरूत़ नफ़्अ़, सूद है और जिस त़रह़ सूद लेना, ह़राम है यूंही ह़ाजते शरइय्या के बग़ैर सूद देना और सूदी मुआ़हदा करना भी ह़राम है लेहाज़ा इस स्कीम के तह़त क़र्ज़ लेना जाइज़ नहीं । अलबत्ता अगर कोई शख़्स वाक़ेई मोह़ताज हो यानी उस की वोह ह़ाजत ऐसी हो कि जिसे शरीअ़त भी ह़ाजत तस्लीम करती हो, और सूदी क़र्ज़ के बग़ैर इस का ह़ल मुमकिन न हो तो इस सूरत में उसे ह़ाजत के मुत़ाबिक़ सूदी क़र्ज़ लेने की इजाज़त होगी ।

रेहाइश के लिए एक ऐसा मकान कि जिस में सर्दी, गर्मी वग़ैरा उमूर से ह़िफ़ाज़त हो सके इन्सानी ह़ाजात में से है तो अगर किसी के पास रेहाइशी मकान नहीं है और उस के पास दीगर अस्बाब व ज़राएअ़ भी नहीं कि जिन से रेहाइश के क़ाबिल ज़रूरी मकान ख़रीद सके और कहीं से सूद के बग़ैर क़र्ज़ भी न मिल रहा हो तो इस सूरत में उसे मजबूरन रेहाइशी मकान के लिए सूदी क़र्ज़ लेने की इजाज़त होगी, यूंही मकान मौजूद है मगर उस में तामीरात की ह़ाजत है मसलन छत नहीं है या खिड़की, दरवाज़े कि जिन से सर्दी, गर्मी और चोरी वग़ैरा से ह़िफ़ाज़त हो सके नहीं हैं तो इस सूरत में भी मज़्कूरा बाला शराइत़ के साथ क़र्ज़ लेने की इजाज़त होगी लेकिन अगर ज़रूरत का मकान मौजूद है, और बड़े घर की ख़्वाहिश है या मकान में रंगो

रोग़न और टाइल मार्बल वग़ैरा का काम करवाना चाहता है या अपने पास ज़ेवर वग़ैरा ऐसे अस्बाब मौजूद हैं कि जिन के ज़रीए ह़ाजत पूरी हो सकती है या कहीं से सूद के बग़ैर क़र्ज़ मिल रहा है तो इन तमाम सूरतों में सूदी क़र्ज़ लेना जाइज़ नहीं।

ज़रूरी तम्बीह : ह़ाजते शरइय्या की पेहचान, अ़वाम के लिए कम इ़ल्मी की वज्ह से आसान नहीं है, इस लिए आ़फ़ियत इस में है कि अपनी अ़क़्ल से इस का फ़ैसला करने के बजाए किसी मोतमद सुन्नी मुफ़्ती साह़ब से राबेत़ा किया जाए और उन्हें अपनी मुकम्मल सूरते ह़ाल बयान कर के हुक्म मालूम किया जाए और फिर उन के बताए हुवे हुक्म पर अ़मल किया जाए, वरना गुनाह में पड़ने का क़वी इमकान है कि बहुत सी ह़ाजतें कि जिन्हें अ़वाम ह़ाजत समझती है, ह़क़ीक़त में ह़ाजत नहीं होतीं और उन के लिए सूदी क़र्ज़ लेना ह़राम होता है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلّی اللہ علیہ و اٰلہٖ وسلّم

❷ सूरए फ़ातेह़ा के बाद सूरत मिलाना भूल गए तो ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि जहां सूरए फ़ातेह़ा के बाद सूरत मिलाना वाजिब है, अगर सूरत मिलाना भूल गए और रुकूअ़ में याद आया तो वापस लौट कर क़िराअत मुकम्मल करने का लिखा होता है। इस का दरजा क्या है यानी लौटना वाजिब व ज़रूरी है या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

फ़ातेह़ा के बाद जहां सूरत मिलाना वाजिब है, अगर भूले से न मिलाई और रुकूअ़ या क़ौमे में याद आ गया तो वाजिब है कि वापस लौटे, सूरत मिलाए और रुकूअ़ भी दोबारा करे और आख़िर में सजदए सहव भी करे, इस त़रह़ इस की नमाज़ मुकम्मल हो जाएगी। रुकूअ़ में याद आ जाने के बा वुजूद अगर न लौटा तो जान बूझ कर वाजिब छोड़ने की वज्ह से नमाज़ वाजिबुल इआ़दा होगी यानी दोबारा पढ़ना वाजिब होगा और सजदए सहव किफ़ायत नहीं करेगा और याद रहे कि अगर लौटा तो सही मगर क़िराअत मुकम्मल करने के बाद रुकूअ़ दोबारा न किया तो नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी क्यूंकि रुकूअ़ दोबारा करना फ़र्ज़ है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلّی اللہ علیہ و اٰلہٖ وسلّم

❸ सफ़र के आख़री बुध को ख़ुशियां मनाना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि सफ़रुल मुज़फ़्फ़र के आख़री बुध को बाज़ लोग चोरी बुध केहते हैं, इस दिन उ़म्दा खाने बनाते हैं और बिल ख़ुसूस देसी घी की चोरी बनाते हैं, एतेक़ाद येह होता है कि इस दिन नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सेह़तयाब हुवे थे और सह़ाबा ए किराम ने ख़ुशियां मनाई थीं और उ़म्दा खाने बनाए थे लेहाज़ा हमें भी ऐसा करना चाहिए। येह फ़रमाएं कि इस एतेक़ाद के साथ येह अ़मल करना कैसा है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

सफ़र के आख़री बुध की कोई अस्ल नहीं और न ही इस दिन सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सेह़तयाबी का कोई सुबूत है बल्कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मरज़े अक़्दस कि जिस में वफ़ात हुई उस की इब्तेदा इसी दिन से बताई जाती है। लेहाज़ा लोगों का येह एतेक़ाद और इस की बिना पर उ़म्दा खाने व चोरी बनाना और ख़ुशियां मनाना बे अस्ल है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلّی اللہ علیہ و اٰلہٖ وسلّم

तलफ़्फ़ुज़ दुरुस्त कीजिए !

ग़लत़ तलफ़्फ़ुज़	सह़ीह़ तलफ़्फ़ुज़
अक़्दाम	इक़्दाम
इन्तफ़ाअ़/इन्तफ़ाअ़/अन्तफ़ाअ़	इन्तिफ़ाअ़
मुबतिला	मुब्तला
तदब्बर	तदब्बुर
अफ़ादा	इफ़ादा

(उर्दू लुग़त, जिल्द 1, 5, 17)

मौलाना मुहम्मद इमरान अ़त्तारी

दुन्या के बजाए आख़ेरत का ज़्यादा सोचिए

एक मौलाना साहब किसी सेठ के पास चन्दा लेने गए, जब गुफ़्तगू हुई तो उस ने चन्दा देने से मन्अ़ कर दिया, इसी दौरान सेठ साहब ने अपनी जेब से एक डिब्या निकाली जिस में टेब्लेट्स थीं, एक टेब्लेट निकाल कर उस ने पानी के साथ खा ली, मौलाना साहब ने कहा : सेठ साहब ! त़बीअ़त तो ठीक है ना ? आप दवाई खा रहे हैं, सब ख़ैर तो है ? तो सेठ ने जवाब दिया : हां मौलाना ! बस नींद नहीं आती, टेन्शन में रेहता हूं, सुकून ह़ासिल करने के लिए टेब्लेट खाता हूं । मौलाना साहब ने कहा कि **अल्लाह** पाक आप को शिफ़ा दे । चन्दा न मिलने के बावुजूद भी सेठ साहब को दुआ़ दे कर मौलाना साहब उस की दुकान से बाहर निकले, तो बाहर सड़क पर काम हो रहा था, बड़ी बड़ी मशीनें लगी हुई थीं जिन का अच्छा ख़ासा शोर था और वक़्त भी दोपहर का था, मगर मौलाना साहब येह देख कर हैरान रेह गए कि इतनी गर्मी के बावुजूद छोटे से दरख़्त के मुख़्तसर से साए में एक मज़दूर ज़मीन पर गत्ता बिछाए मज़े से सो रहा है, मौलाना साहब येह सोचने लगे कि क्या शान है मेरे रब्बे करीम की, कि "अन्दर दुकान में सुकून की जगह और ए सी में बैठने के बावुजूद सेठ साहब सुकून ह़ासिल करने के लिए गोलियां खा रहे हैं जबकि यहां तेज़ गर्मी और मशीनों के शोर के बावुजूद ग़रीब मज़दूर को सुकून की नींद मुयस्सर है ।"

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! जो शख़्स सिर्फ़ दुन्या बनाने और उसे बेहतर करने की फ़िक्रों में लगा होता है वोह बज़ाहिर कितना ही मालदार और ऐ़शो मस्ती में सही मगर आ़म त़ौर पर उसे मुख़्तलिफ़ परेशानियों ने भी घेरा हुवा होता है, इन में से कई ऐसी परेशानियां भी होती हैं जो उस की रातों की नींद और दिन के सुकून को बरबाद कर देती हैं, उस का दिल मुख़्तलिफ़ दुन्यावी फ़िक्रों से भरा रेहता है, येह कैसे होगा ? वोह कैसे होगा ? फ़ुलां प्लानिंग कुछ अधूरी रेह गई वोह कैसे मुकम्मल होगी ? फ़ुलां मन्सूबा कुछ बाक़ी रेह गया है वोह इख़्तेताम तक किस त़रह़ पहुंचेगा ? यूंही एक दुकान से दो और दो से चार करने की फ़िक्र, कारोबार को एक शेहर से दूसरे शेहर और एक मुल्क से दूसरे मुल्क तक फैलाने की फ़िक्र, दूसरा कोई मुझ से आगे न बढ़े इस की फ़िक्र, अपनी वाह वाह करवाने और इस में कमी न हो इस की फ़िक्र, हर नए मॉडल की गाड़ी लेने और हर नया आने वाला मोबाइल मेरे हाथों में हो इस की फ़िक्र, बच्चे कुछ बड़े हो जाएं, मेरा कारोबार संभाल लें इस की फ़िक्र और इस त़रह़ की न जाने कितनी फ़िक्रों ने दुन्यादार आदमी को घेर कर रखा होता है । इस त़रह़ की बेजा फ़िक्रें सिर्फ़ अमीर त़ब्क़े में ही नहीं बल्कि मुतवस्सित़ और ग़रीब त़ब्क़े में भी अपनी अपनी सोच के वसीअ़ और तंग होने के एतेबार से पाई जाती हैं जिन से इन की परेशानियां कम होने के बजाए मज़ीद बढ़ती ही होंगी । दुन्यावी सोचों और फ़िक्रों में खुद को घुला देने वालों को समझाते हुवे अमीरे एहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना इल्यास अ़त्तार क़ादरी دامت برکاتہم العالیہ लिखते हैं : जो दुन्यवी मुस्तक़्बिल की बेजा फ़िक्रों में पड़ते, कुढ़ते और ख़्वाह म ख़्वाह दिल मसोसते

रेहते हैं, उन की बच्चियां अभी तो कमसिन होती हैं फिर भी उन की शादियों के लिए सोच सोच कर पागल हुवे जाते हैं। फ़र्ज़ हो जाने के बावुजूद ह़ज की सआ़दत से खुद को मेह़रूम रखते हैं और उ़ज़्र येही होता है कि पेहले बच्चियों की शादी के "फ़र्ज़" से सुबुकदोश हो जाएं ! ह़ालांकि ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं, बच्चियों की जवानी तक खुद ज़िन्दा रहेंगे या नहीं इस की किसी के पास कोई गारंटी नहीं या बच्चियां जवानी की देहलीज़ पर क़दम रखने से क़ब्ल ही मौत के दरवाज़े से क़ब्र की सीढ़ियां उतर जाएंगी इस का किसी को भी पता नहीं। आह ! कई लोग हाए दुन्या ! हाए दुन्या ! करते हुवे दुन्या से रुख़्सत हो जाते हैं, मगर जीते जी आख़ेरत की त़रफ़ उन की कोई तवज्जोह नहीं होती। मुसलमान को हिम्मत और खुश अ़क़ीदगी से काम लेना चाहिए। हमें ख़्वाह म ख़्वाह "दो जान" की फ़िक्र खाए जाती है ह़ालांकि दो जहान को पालने वाला हमारा ह़ामी ओ नासिर है।[1]

दुन्यादार आदमी को इतनी फ़िक्रें क्यूं होती हैं, वोह फ़िक्रें इस पर क्या असर रखती हैं, नीज़ दुन्या के बजाए आख़ेरत की फ़िक्र इन्सान को क्या कुछ दिलाती है इस का जवाब **अल्लाह** पाक के आख़री नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन से ह़ासिल करते हैं। इरशाद फ़रमाया : (1) जो शख़्स (सिर्फ़) दुन्या की फ़िक्र में रेहता है तो **अल्लाह** पाक उस के मुआ़मले को परागन्दा कर देता और उस की तंगदस्ती को उस की आंखों के सामने कर देता है और उसे दुन्या से सिर्फ़ उतना ही ह़िस्सा मिलता है जितना उस के लिए (पेहले से) लिख दिया गया है और जो शख़्स आख़ेरत का इरादा करता है तो **अल्लाह** पाक उस के मुआ़मले को इकठ्ठा कर देता और उस की मालदारी को उस के दिल में रख देता है और दुन्या उस के पास आलूद हो कर आती है।[2] (2) जिस की फ़िक्रें ज़्यादा हो जाती हैं उस का बदन सक़ीम यानी बीमार पड़ जाता है।[3] (3) **अल्लाह** पाक के कुछ फ़िरिश्तों की औलादे आदम के रिज़्क़ पर ड्यूटियां लगी हुई हैं, **अल्लाह** पाक ने उन से फ़रमाया हुवा है कि जिस बन्दे को ऐसा पाओ कि उस ने सब फ़िक्रें छोड़ कर एक (आख़ेरत की) फ़िक्र को अपना लिया है तो आस्मानो ज़मीन, परिन्दों और इन्सानों को उस के रिज़्क़ का ज़ामिन बना दो और जिस बन्दे को रिज़्क़ की तलाश में पाओ और (उस तलाशे रिज़्क़ में) उस ने अ़द्लो इन्साफ़ और सच्चाई का रास्ता इख़्तियार किया हुवा है तो उस के लिए उस का रिज़्क़ पाक व आसान कर दो, और जो (तलाशे रिज़्क़ की राह में शरई) ह़द से बढ़े उसे उस की ख़्वाहिश पर छोड़ दो, फिर वोह उस दरजे से बढ़ नहीं सकता जो मैं ने उस के लिए लिख दिया है।[4] (4) जिस ने अपनी तमाम फ़िक्रों को सिर्फ़ एक फ़िक्र बना दिया और वोह आख़ेरत की फ़िक्र है तो **अल्लाह** पाक उसे उस की दुन्या की फ़िक्र के लिए काफ़ी है और जिस की फ़िक्रें दुन्या के अह़वाल में मश्ग़ूल रहें तो **अल्लाह** पाक को इस की परवाह नहीं होगी कि वोह शख़्स किस वादी में हलाक हो रहा है।[5]

मेरी तमाम आ़शिक़ाने रसूल से **फ़रियाद** है कि दुन्या बेहतर बनाने के बारे में ज़्यादा सोचने के बजाए क़ब्रो आख़ेरत के मुआ़मलात की हौलनाकियों और देहशतों के बारे में ज़्यादा सोचिए, दुन्या को जन्नत बनाने के बजाए अपनी क़ब्र को जन्नत का बाग़ बनाने की फ़िक्र कीजिए, दुन्या में आसाइशें और राह़तें कैसे ह़ासिल होंगी इस पर अपनी क़ुव्वत और वक़्त ज़्यादा सर्फ़ करने के बजाए आख़ेरत की हमेशा और बाक़ी रेहने वाली नेमतों के ह़ुसूल की फ़िक्र कीजिए, इस के लिए दावते इस्लामी का दीनी माह़ोल किसी नेमत से कम नहीं, खुद भी इस पाकीज़ा माह़ोल से वाबस्ता हो जाइए, अपने घर वालों और अपनी औलाद को भी इस से वाबस्ता कीजिए, नेक आमाल के रिसाले के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारिए اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़िक्रे आख़ेरत नसीब हो ही जाएगी।

---

(1) آداب طعام، ص385 (2)ابن ماجہ،4/424، حدیث:4105 (3)شعب الایمان،6/342 (4)نوادر الاصول،2/1189،حدیث:1489، مرقاۃ المفاتیح، 1/522 (5)ابن ماجہ،4/425،حدیث:4106۔

नोट : येह मज़्मून निगराने शूरा की गुफ़्तगू वग़ैरा की मदद से तैयार कर के उन्हें चेक करवाने के बाद पेश किया गया है।

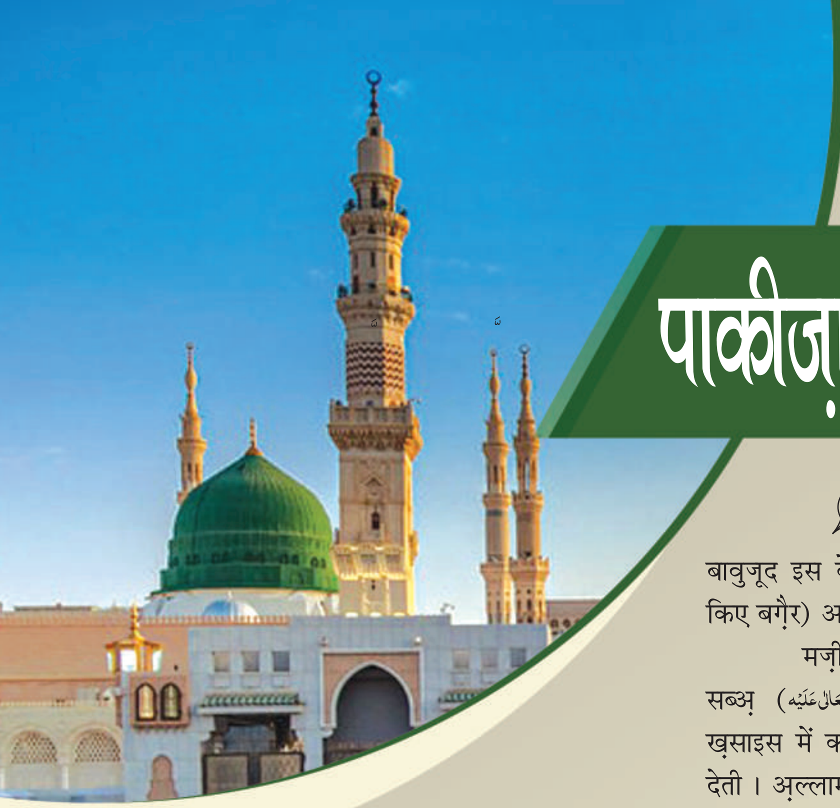

पाकीज़ा लोगों के सरदार صلی اللہ علیہ والہ وسلّم

मौलाना काशिफ़ शेहज़ाद अ़त्तारी मदनी

ऐ आशिक़ाने रसूल ! रेह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने पाक परवरदगार के फ़ज़्लो करम से जो खु़सूसी अ़ज़्मतें ह़ासिल हुई हैं, उन में से एक का तज़्केरा पढ़ कर **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा कीजिए कि उस ने हमें ऐसे आ़लीशान आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उम्मती और ग़ुलाम बनाया है :

मुबारक जिस्म व लिबास पर मख्खी का न बैठना : **अल्लाह** के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूरानी जिस्म और मुबारक लिबास पर मख्खी नहीं बैठती थी।[1] मुबारक जिस्म से मच्छर ख़ून नहीं चूसता था और न ही जूएं तक्लीफ़ पहुंचाती थीं।[2]

उ़लमा ए किराम का इस खु़सूसियत को ज़िक्र करना : इमामे एहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जिस्मे अक़्दस व लिबासे अन्फ़स पर मख्खी न बैठना अ़ल्लामा (इमाम अबुर्रबीअ़) इब्ने सब्अ़ (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने ख़साइस में ज़िक्र फ़रमाया, उ़लमा ने तसरीह़ की (कि) इस का रावी (यानी इस बात को रिवायत करने वाला शख़्स) मालूम न हुवा, और बावुजूद इस के बिला नकीर (यानी इस बात का इन्कार किए बग़ैर) अपनी किताबों में इसे ज़िक्र फ़रमाते आए।[3]

मज़ीद लिखते हैं : (इमाम अबुर्रबीअ़) इब्ने सब्अ़ (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के ख़साइस में कहा : जूं आप को ईज़ा (यानी तक्लीफ़) न देती। अ़ल्लामा (जलालुद्दीन) सुयूती ने ख़साइसे कुब्रा में इस त़रह़ इब्ने सब्अ़ (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) से नक़्ल किया और बरक़रार रखा।[4]

दरबारे नबवी में अ़र्ज़े फ़ारूक़ी : ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक मौके़अ़ पर बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की :

اِنَّ اللّٰہَ عَصَمَکَ عَنْ وُقُوْعِ الذُّبَابِ عَلٰی جِلْدِکَ لِاَنَّہٗ یَقَعُ عَلَی النَّجَاسَاتِ فَیَتَلَطَّخُ بِھَا

यानी बेशक **अल्लाह** पाक ने आप को इस बात से मेह़फ़ूज़ रखा कि मख्खी आप के जिस्म पर बैठे क्यूंकि वोह गन्दगी पर बैठ कर उस से आलूदा होती है।[5]

नबुव्वत की एक निशानी : इमामे एहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं कि शिहाबुल मिल्लते वद्दीन ह़ज़रते अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद ख़फ़ाजी मिस्री ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नबुव्वत की निशानियों में से एक येह है कि मुबारक जिस्म और लिबास शरीफ़ पर मख्खी नहीं बैठती थी। **अल्लाह** पाक ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जो अ़ज़्मतें अ़त़ा फ़रमाई हैं येह खु़सूसियत भी उन में से एक है। (अ़रबी ज़बान में मख्खी को ज़ुबाब केहते हैं) ज़ुबाब का वाह़िद ज़ुबाबह है।

मख्खी का येह नाम इस लिए रखा गया है : اِنَّہٗ کُلَّمَا ذُبَّ آبَ क्यूंकि इसे जब भी उड़ाया जाए तो येह वापस आ जाती है । **अल्लाह** पाक ने अपने मेह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को (तमाम) गन्दगियों से पाक (पैदा) फ़रमाया है जबकि मख्खी खुद घिनावनी होने के साथ गन्दी चीज़ों पर से उड़ कर भी आती है ।

नुक़्ता न होने की ह़िक्मत : एक आ़लिम साह़ब ने कितनी प्यारी बात फ़रमाई है : "مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ الله" में कोई ह़र्फ़ नुक़्ते वाला नहीं है क्यूंकि ह़ुरूफ़ पर लगाए जाने वाले नुक़्ते मख्खियों की त़रह़ होते हैं (कि जिस त़रह़ मख्खी इन्सान पर बैठती है इसी त़रह़ येह नुक़्ते ह़ुरूफ़ पर लगाए जाते हैं) । **अल्लाह** पाक ने अपने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक नाम और सिफ़त (مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ الله) को मख्खी से मिलते जुलते नुक़्तों से भी मेह़फ़ूज़ फ़रमा दिया है ।(6)

येह शान एलाने नबुव्वत से पेहले ही ह़ासिल थी : ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तेह़रीर फ़रमाते हैं : अव्वल (यानी शुरूअ़) ही से जिस्मे पाक बे साया था, ख़ुश्बूदार था, कभी जिस्मे अक़्दस पर मख्खी नहीं बैठती थी, येह ह़ुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के इरहासात हैं जो ज़ुहूरे नबुव्वत से पेहले ज़ाहिर थे ।(7)

नोट : नबी से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत क़ब्ले नबुव्वत ज़ाहिर हो, उस को इरहास केहते हैं ।(8)

हर क़िस्म की गन्दगी और बदबू से पाक हस्ती : प्यारे इस्लामी भाइयो ! मख्खियों की आमद और जुवों का पैदा होना, गन्दगी, बदबू और पसीने वग़ैरा की वज्ह से हुवा करता है । रेह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर क़िस्म की गन्दगियों से पाक जबकि जिस्मे अत़हर और पसीना मुबारक भी ख़ुश्बूदार था इस लिए आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन चीज़ों से मेह़फ़ूज़ रहे ।(9)

मैल का तसव्वुर भी नहीं हो सकता : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह ऐसी बारगाह है कि लफ़्ज़ "मैल" का "मीम" भी इस दरबार के क़रीब नहीं भटकता, पाकीज़गी व सफ़ाई और त़हारत व नफ़ासत इस मुबारक दरबार में ह़ाज़िरी दे कर बरकतें ह़ासिल करते हैं, फिर भला मख्खी, मच्छर या पिस्सू की क्या मजाल कि वोह इस मुक़द्दस हस्ती के जिस्म या लिबास के क़रीब आने का तसव्वुर कर सकें ।

एह़तियात़ लाज़िम है : याद रखिए ! **अल्लाह** के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुतअ़ल्लिक़ कोई बात करते या लिखते हुवे बहुत ज़्यादा एह़तियात़ की ज़रूरत है । इस मुआ़मले में मामूली सी बे एह़तियात़ी भी दुन्या ओ आख़ेरत के नाक़ाबिले तलाफ़ी नुक़्सान का बाइ़स बन सकती है । सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : (जो शख़्स) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिबास मुबारक को गन्दा और मैला बताए, ह़ुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के नाख़ुन बड़े बड़े कहे, येह सब कुफ़्र है ।(10)

लिबास मुबारक कभी मैला न हुवा : शारेह़े बुख़ारी इमाम अह़मद बिन मुह़म्मद क़स्त़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सिर्फ़ पाकीज़गी और ख़ुश्बू ही ज़ाहिर होती थी और इस की निशानी बदन मुबारक में येह थी कि लिबास मैला नहीं होता था, चुनान्चे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक लिबास कभी मैला कुचैला नहीं हुवा ।(11)

इमामे एहले सुन्नत, आ़शिक़े माहे रिसालत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं :

मैल से किस दरजा सुथरा है वोह पुतला नूर का
है गले में आज तक कोरा ही कुर्ता नूर का(12)

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** पाक ! मक्के मदीने के ताजदार, पाकीज़ा लोगों के सरदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल हमें हर क़िस्म की ज़ाहिरी बात़िनी गन्दगी बिल ख़ुसूस गुनाहों की गन्दगी से मेह़फ़ूज़ फ़रमा ।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

कर भला सो हो भला

(1)الشفا، 1/368 (2)مواہب لدنیہ، 2/275 (3)فتاویٰ رضویہ، 30/720 (4)فتاویٰ رضویہ، 30/722 (5)تاریخ الخمیس، 2/287 (6)نسیم الریاض، 4/335، فتاویٰ رضویہ، 30/720 (7)مراٰۃ المناجیح، 8/236 (8)بہارِ شریعت، 1/58 (9)زرقانی علی المواہب، 7/200، سیرتِ مصطفےٰ، ص566 (10)بہارِ شریعت، 2/463، کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب، ص207 (11)مواہب لدنیہ، 2/162 (12)حدائقِ بخشش، ص244۔

(क़िस्त़ 09)

शाने ख़त्मे नबुव्वत

मौलाना अबुल ह़सन अ़त्तारी मदनी

गुज़श्ता से पैवस्ता (पिछले अंक से जारी) . . .

15 اَنَا الْمُقَفِّى قَفَّيْتُ النَّبِيِّيْنَ وَاَنَا قَيِّمٌ **तर्जमा :** मैं ही सब से पीछे आने वाला हूं (यानी दुन्या में सब अम्बिया के बाद आने वाला हूं और मैं आख़री नबी हूं), मैं सब नबियों के बाद आया हूं (यानी मुझ पर नबुव्वत का सिलसिला ख़त्म कर दिया गया) और मैं क़य्यिम हूं।(1)

16 اَنَا الْعَاقِبُ **तर्जमा :** मैं ही आ़क़िब हूं (और आ़क़िब वोह है कि जिस के बाद कोई नबी नहीं)।(2)

17 اَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّيْنَ لَا نَبِيَّ بَعْدِى **तर्जमा :** मैं ख़ातमुन्नबिय्यीन हूं, मेरे बाद कोई नबी नहीं है।(3)

18 اَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّيْنَ وَلَا فَخْرَ **तर्जमा :** मैं आख़री नबी हूं फ़ख़्रिया नहीं केह रहा।(4)

19 اَنَا آخِرُ الْاَنْبِيَاءِ، وَاَنْتُمْ آخِرُ الْاُمَمِ **तर्जमा :** मैं आख़री नबी हूं और तुम आख़री उम्मत हो।(5)

ह़बीबे करीम, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन तमाम फ़रामीन में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का आख़री नबी होना और हमारा अ़क़ीदए ख़त्मे नबुव्वत बयान हुवा है। येह भी रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बहुत ही अनोखी और यक्ता शान है जो और किसी भी नबी व रसूल को अ़त़ा न हुई, ह़दीसे मुबारका में है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अम्बिया ए किराम علیہ الصّلوٰۃُ والسّلام पर छे चीज़ों से फ़ज़ीलत दी गई, उन में से एक आप का ख़ातमुन्नबिय्यीन होना है।(6)

उन फ़रामीन में सैयदल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के 6 अस्मा ए गिरामी बयान हुवे : "अल मुक़फ़्फ़ी", "क़य्यिमुन", "अल ह़ाशिरु", "अल आ़क़िबु", "ख़ातमुन्नबिय्यीन" और "आख़िरुल अम्बिया" صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم।

इस्मे मुबारक "अल मुक़फ़्फ़ी" इस्मे फ़ाइ़ल का सीग़ा है, अ़ल्लामा सालेह़ी शामी ने इस के एराब येही ज़िक्र फ़रमाए और इस का माना है "वोह जिस के बाद कोई दूसरा नबी न हो।"(7)

लुग़त में इस के माना पीछे आने, पैरवी करने, ताबेअ़ होने के भी हैं, येह माना ह़दीसे पाक के लफ़्ज़ "قَفَّيْتُ النَّبِيِّيْنَ" से भी वाज़ेह़ हो रहा है यानी मैं तमाम अम्बिया के पीछे आया हूं। इस माना की मज़ीद वज़ाह़त "अल इस्तिआ़ब" की इस रिवायत से भी होती है

चुनान्चे फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : اَنَا الْمُقَفِّى بَعْدَ الْاَنْبِيَاءِ كُلِّهِم यानी मैं तमाम नबियों के बाद आने वाला हूं।(8)

इस्मे गिरामी "क़य्यिमुन" बहुत बड़े मफ़्हूम का ह़ामिल है, कुतुबे सीरत में इसे मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में यूं ताबीर किया गया है : وَالْقَيِّمُ الْجَامِعُ الْكَامِلُ यानी क़य्यिम जामेअ़ और ह़ामिल होता है। नीज़ लुग़त में इस के माना सरबराह, निगरानकार और मुतवल्ली व मुन्तज़िम के भी हैं।

कोई भी चीज़ या फ़र्द "क़य्यिम" या क़ीमती तभी होता है जब वोह बहुत सी ख़ूबियों का ह़ामिल हो और इस में ज़र्रा भर शक नहीं कि प्यारे मुस्त़फ़ा

ﷺ किस क़दर अ़ज़ीम व जलील ख़ूबियों के ह़ामिल थे, बल्कि ह़क़ीक़त तो येह है कि आप ने जिस अदा को अपनाया वोही अ़मल ज़माने भर के लिए ख़ूबी बन गया, काइनात के लिए येह उसूल बन गया कि कोई भी ऐसा अ़मल जो मदनी मेह़बूब ﷺ की अदाओं के मुत़ाबिक़ हो वोही ख़ूबी है, जो अ़मल इन की अदाओं, फ़रामीन या पसन्द के ख़िलाफ़ हो ख़्वाह लोग उसे कितना ही अच्छा समझें वोह अ़मल अच्छा नहीं हो सकता।

इस्मे गिरामी "अल ह़ाशिरु" के माना हैं जम्अ़ करने वाला, इस के माना खुद रसूले करीम ﷺ ने भी इरशाद फ़रमाए हैं, इरशादे मुबारक है : اَنَا الحَاشِرُ الَّذِی یُحْشَرُ النَّاسُ عَلٰی قَدَمِی **तर्जमा** : मैं ही ह़ाशिर (जम्अ़ करने वाला) हूं लोग मेरे ही क़दमों पे जम्अ़ किए जाएंगे।[9]

इस इस्मे गिरामी की मज़ीद वज़ाह़त अगली अक़सात़ में बयान की जाएगी।

इस्मे गिरामी "अल आ़क़िबु" के माना हैं पीछे आने वाला, इस का मस्दर (Sorce) है अ़क़ब, पीछे आने वाले से क्या मुराद है इस की वज़ाह़त में मुस्लिम शरीफ़ में है : اَلعَاقِبُ الَّذِی لَیْسَ بَعْدَہٗ نَبِیٌّ यानी आ़क़िब वोह (है) कि जिस के बाद कोई नबी नहीं।[10]

"ख़ातमुन्नबिय्यीन" रसूले करीम ﷺ का बहुत ही अ़ज़ीम और ख़ास वस्फ़ व लक़ब व मन्सब है। इस के माना ओ मफ़्हूम बिलकुल वाज़ेह़ व ज़ाहिर हैं कि सब नबियों से आख़िरी, नबियों का सिलसिला ख़त्म करने वाले, सब से आख़िरी नबी, सिलसिलए नबुव्वत पर मोहर लगा कर बन्द कर देने वाले। येही माना आप ﷺ के इस्मे गिरामी "आख़िरुल अम्बिया" और इस मफ़्हूम की तमाम अह़ादीसे मुबारका से भी साबित है। ख़त्मे नबुव्वत के मुन्किर "ख़ातमुन्नबिय्यीन" के माना में त़रह़ त़रह़ के बे बुन्याद, झूटी और धोके पर मब्नी तावीलाते फ़ासिदा करते हैं जो कि क़ुरआन, अह़ादीस, इज्मा ए़ सह़ाबा और मुफ़स्सिरीन, मुह़द्दिसीन, मुह़क़्क़िक़ीन, मुतकल्लिमीन और सारी उम्मते मुह़म्मदिया के ख़िलाफ़ हैं। तफ़ासीर और अक़्वाले मुफ़स्सिरीन की रौशनी में ख़ातमुन्नबिय्यीन का माना आख़िरी नबी ही है, मुफ़स्सिरे क़ुरआन अबू जाफ़र मुह़म्मद बिन जरीर त़बरी (वफ़ात : 310 हिजरी), अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद बग़दादी मावर्दी (वफ़ात : 450 हिजरी), अबुल ह़सन अ़ली बिन अह़मद वाह़िदी नैशापुरी शाफ़ेई (वफ़ात : 468 हिजरी), अबुल मुज़फ़्फ़र मन्सूर बिन मुह़म्मद अल मरवज़ी समआ़नी शाफ़ेई (वफ़ात : 489 हिजरी), मुह़युस्सुन्नह, अबू मुह़म्मद ह़ुसैन बिन मसऊ़द बग़वी (वफ़ात : 510 हिजरी), अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल ह़क़ बिन ग़ालिब उन्दुलुसी मुह़ारिबी (वफ़ात : 542 हिजरी), सुल्त़ानुल उ़लमा अबू मुह़म्मद अ़ज़ीज़ुद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुस्सलाम सुलमी दिमश्क़ी (वफ़ात : 660 हिजरी), नासिरुद्दीन अबू सईद अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर शीराज़ी बैज़ावी (वफ़ात : 685 हिजरी), अबुल बरकात अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद नसफ़ी (वफ़ात : 710 हिजरी), अबुल क़ासिम मुह़म्मद बिन अह़मद बिन मुह़म्मद अल कल्बी ग़रनात़ी (वफ़ात : 741 हिजरी), अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन अ़र्फ़ा वरग़मी मालिकी (वफ़ात : 803 हिजरी), जलालुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद मुह़ल्ली (वफ़ात : 864 हिजरी) और अबुस्सऊ़द अल अ़मादी मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुस्त़फ़ा (वफ़ात : 982 हिजरी) رحمۃُ اللہ علیہم اَجْمعین समेत जमहूर मुफ़स्सिरीने क़ुरआन ने "ख़ातमुन्नबिय्यीन" के माना ओ मफ़्हूम येही बयान फ़रमाए कि हमारे प्यारे आक़ा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ **अल्लाह** करीम के आख़िरी नबी हैं, आप के बाद किसी त़रह़ का कोई नबी, कोई रसूल न आया है, न आ सकता है और न आएगा।

अ़क़ीदए ख़त्मे नबुव्वत पर "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" के तमाम मज़ामीन एक मजमूए़ की सूरत में पढ़ने के लिए किताब "अ़क़ीदए ख़त्मे नबुव्वत" दावते इस्लामी की वेब साइट से मुफ़्त डाउनलोड कीजिए।

---

(1)الشفاء،1/231، شمائل ترمذی، ص214،حدیث:361
(2)مسلم، ص958،حدیث:6105
(3)ترمذی،4/93،حدیث:2226(4)دارمی،1/40،حدیث:49(5)ابنِ ماجہ، 4/414،حدیث:4077 (6)مسلم، ص210، حدیث:1167 (7)سبل الہدیٰ والرشاد، 1/519 (8)الاستیعاب، 1/150 (9)بخاری، 2/484، حدیث: 3532(10)مسلم، ص958،حدیث:6105۔

नसीह़त और इस के तक़ाज़े

मौलाना सैयद नोमान अ़त्तारी मदनी

जैसे जिस्मानी त़बीअ़त ख़राब होने की सूरत में बर वक़्त दवा लेना ज़रूरी है यूंही मुआ़शरती सेह़त ख़राब हो तो बर वक़्त नसीह़त करना और उसे क़बूल करना ज़रूरी है येही वज्ह है कि इस्लाम ने "नसीह़त करने" का हुक्म दिया है चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِیْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से।[1]

जिस नसीह़त के साथ रब के रास्ते की त़रफ़ बुलाने का हुक्म है उस का "ह़सनह" होना ज़रूरी है। अम्बिया ए किराम علیہمُ السّلام ने **अल्लाह** पाक के दीन की दावत लोगों तक पहुंचाने का जो अन्दाज़े नसीह़त इख़्तियार फ़रमाया वोह बिला शुबा "ह़सनह" का मेयार बन कर हमारे सामने आता है। **अल्लाह** पाक के आख़री नबी صلَّى الله تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم के हुस्ने अख़्लाक़ और समझाने के ख़ूब सूरत अन्दाज़ का नतीजा था कि जहालत, क़त्लो ग़ारत गरी का ख़ातमा हुवा, अम्न क़ाइम हुवा और अक़्वामे आ़लम के लिए इस्लाम क़बूल करना आसान हुवा। बा अ़मल मुसलमान इसी नबवी त़रीक़ए कार को इख़्तियार करते हुवे आगे बढ़े और मुआ़शरे में पैदा होने वाले हर त़रह़ के बिगाड़ को सुधारने के लिए अ़मली कोशिशों के साथ पुर असर नसीह़त के ज़रीए भी दावते दीन का सिलसिला जारी रखे। नसीह़त को मुसलमान का ह़क़ क़रार देते हुवे नबिय्ये पाक صلَّى الله تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने फ़रमाया : जब तुम से (कोई मुसलमान) नसीह़त त़लब करे तो उसे नसीह़त करो।[2] नसीह़त के कई फ़वाइद हैं मसलन गुनाहगार नसीह़त सुन कर गुनाहों से तौबा करते हैं। किसी को नेक काम करने का जज़्बा मिलता है तो किसी को दूसरे से हमदर्दी पैदा होती है, किसी के ईमान को ताज़गी मिलती है किसी की रूह़ को सुकून मिलता है।

पुर असर नसीह़त कैसे करें ? नसीह़त को मोअस्सर बनाने के चन्द आदाब मुलाह़ज़ा कीजिए :

1 मश्हूर है कि गुफ़्तगू लोगों की ज़ेहनी सत़ह़ के मुत़ाबिक़ करनी चाहिए। इस के मुत़ाबिक़ नसीह़त करने के लिए सामने वाले की नफ़्सियात का ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है कि येह दिलो दिमाग़ में जल्द असर अन्दाज़ होती है, एक फ़र्ज़ी ह़िकायत मुलाह़ज़ा कीजिए : एक बुज़ुर्ग चन्द शागिर्दों के साथ दरिया के किनारे किनारे जा रहे थे, एक

मक़ाम पर खड़े हो गए, काफ़ी देर गुज़रने के बाद शागिर्दों ने पूछा : हम यहां क्यूं खड़े हैं ? बुज़ुर्ग ने कहा : इस इन्तेज़ार में कि सारा दरिया बेह जाए तो दूसरी त़रफ़ जाएं, येह सुन कर शागिर्दों ने कहा : येह कैसे मुमकिन है ! न तो सारा दरिया बहेगा और न हम कभी उस पार जा सकेंगे ? तो बुज़ुर्ग ने नसीह़त भरे अन्दाज़ में कहा : बेटा ! येही बात मैं आप लोगों को समझाना चाहता हूं कि हम लोग हमेशा येह केहते रेहते हैं कि एक बार घर की ज़िम्मेदारियां पूरी हो जाएं तो फिर नमाज़ पढ़ेंगे, ह़ज करेंगे, फ़ुलां नेक काम शुरूअ़ करेंगे और फ़ुलां नेक काम करेंगे । याद रखो ! जैसे दरिया पार करने के लिए पानी ख़त्म होने का इन्तेज़ार नहीं करना चाहिए ऐसे ही नेकियां करने के लिए दुन्या की ज़िम्मेदारियां ख़त्म होने का भी इन्तेज़ार नहीं करना चाहिए । शागिर्दों के चेहरे बता रहे थे कि बुज़ुर्ग की येह नसीह़त उन के दिलो दिमाग़ में उतर चुकी है ।

2 नसीह़त करते हुवे लोगों की त़बई कैफ़ियात का ख़याल रखना भी ज़रूरी है । माली नुक़्सान की वज्ह से परेशान होने वाले को तसल्ली देने के बजाए उसी की ग़लत़ियां बताने लग जाना, यूंही बीमार को दुआ़एं देने के बजाए उसी की बद परहेज़ियां बताने लग जाना दुरुस्त नहीं कि इस त़रह़ लोग आप से बदज़न हो सकते हैं या फिर नौबत लड़ाई झगड़े तक भी पहुंच सकती है ।

3 नसीह़त ग़लत़ी का एह़सास दिलाने और आइन्दा उस से बचने के लिए की जाती है लेहाज़ा इस में अल्फ़ाज़ और लेहजे की नर्मी को बहुत ज़्यादा अहमियत ह़ासिल है । **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते हारून علیہما السّلام को फ़िरऔ़न की जानिब जाने का हुक्म फ़रमाया तो साथ ही उस से नर्म बात केहने का हुक्म भी फ़रमाया ।(3) जब मुन्किरे ख़ुदा को नर्मी से नसीह़त करने की ताकीद है तो **अल्लाह** पाक पर ईमान लाने वाले नर्मी के ज़्यादा ह़क़दार हैं, लेहाज़ा नसीह़त करते हुवे नर्मी नर्मी और नर्मी कीजिए कि आख़िरी नबी صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो नर्मी से मेह़रूम हुवा वोह ख़ैर से मेह़रूम हुवा ।(4) एक मौक़ेअ़ पर येह भी इरशाद फ़रमाया : नर्मी को लाज़िम कर लो और सख़्ती व फ़ोह़श से बचो ! जिस चीज़ में नर्मी होती है, उस को ज़ीनत देती है और जिस चीज़ से जुदा कर ली जाती है उसे ऐबदार कर देती है ।(5)

दुरुस्त मौक़ेअ़ पर नसीह़त के लिए ख़राब और सख़्त लबो लेहजा इख़्तियार करने के उल्टे नताइज निकलते हैं जैसा कि एक मरतबा मस्जिद में जमाअ़त के दौरान एक नौजवान का फ़ोन बजने लगा, नमाज़ ख़त्म हुई तो लोगों ने प्यार व मह़ब्बत से नसीह़त करने के बजाए उसे बे इ़ज़्ज़त करना शुरूअ़ कर दिया जिस पर उस ने फ़ैसला किया कि वोह अब मस्जिद नहीं आएगा ।

4 नसीह़त करने के लिए मौक़अ़ और जगह का ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है कि हर जगह नसीह़तें करते फिरने से लोग आप से बेज़ार हो जाएंगे और अगर्चे सामने कुछ न कहें मगर दिल में तक्लीफ़ मेह़सूस करेंगे ।

5 सब के सामने नसीह़त करने के बजाए अकेले में करना ज़्यादा बेहतर है कि ह़ज़रते उम्मे दर्दा رضی اللہ عنہا फ़रमाती हैं : जिस ने अपने भाई को सब के सामने नसीह़त की उस ने उस को ज़लील कर दिया और जिस ने तन्हाई में नसीह़त की उस ने उस को मुज़य्यन (आरास्ता) कर दिया ।(6)

दौरे ह़ाज़िर में अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादरी का अन्दाज़े नसीह़त अपने बेहतरीन नताइज और दूर रस असरात के साथ हमारे सामने है, आप के शबो रोज़ हम पर नसीह़त की ज़रूरत व अहमियत वाज़ेह़ करते हैं लेहाज़ा अगर हम इस्लामी तालीमात के मुत़ाबिक़ उसूले नसीह़त को अ़मली त़ौर पर सीखना चाहते हैं तो आप के मदनी मुज़ाकरे देखने का मामूल बनाएं और दावते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता रहें, ऐसा करने से अपनी और सारी दुन्या की इस्लाह़ की कोशिश करने का जज़्बा मिलेगा और येही जज़्बा नसीह़त को कारआमद बनाने में मदद फ़राहम करेगा ।

---

(1)پ14، النحل:125(2)مسلم، ص919، حدیث:5651(3)پ16، طٰہٰ:44
(4) مسلم، ص 1073، حدیث:6602 (5) بخاری،4/108، حدیث:6030
(6)شعب الایمان،6/112، حدیث:7641۔

अह़कामे तिजारत

मुफ़्ती अबू मुह़म्मद अ़ली असग़र अ़त्तारी मदनी

कुरआने पाक पढ़ाने की उजरत लेना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि अगर कोई शख़्स इन्टरनेट पर ऑन लाइन कुरआने पाक पढ़ाए और इस पर उजरत भी ले तो क्या येह जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَایَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : जी हां ! कुरआने पाक पढ़ाने की उजरत लेना, जाइज़ व मुबाह़ है, ख़्वाह इन्टरनेट पर पढ़ाया जाए या किसी और ज़रीए़ से पढ़ाया जाए, क्यूंकि मुतअख़्ख़िरीन उ़लमा ए किराम ने दीनी ज़रूरत के पेशे नज़र तालीमे कुरआन, इमामत वग़ैरा उमूरे दीनिया की ख़िदमत सर अन्जाम देने पर उजरत लेने को जाइज़ क़रार दिया है।

अलबत्ता इजारे की बुन्यादी शराइत़ का पूरा होना ज़रूरी है मसलन वक़्त तै़ हो, मुआ़वज़ा तै़ हो और इजारा दुरुस्त होने की दीगर ज़रूरी शराइत़ पाई जानी चाहिएं।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

गेम ज़ोन का काम करना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि कोई शख़्स गेम ज़ोन (Game zone) खोलना चाहता है जिस में लोग आ कर कम्प्यूटर गेम्ज़ खेलेंगे और जितनी देर बैठेंगे उस के पैसे देंगे। क्या येह कमाई जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَایَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : गेम ज़ोन से ह़ासिल होने वाली आमदनी जाइज़ नहीं क्यूंकि येह लहवो लइ़ब है और ज़रूरी नहीं कि मोतबर दुन्यावी मनफ़ेअ़त के लिए ही लोग इसे इस्तेमाल करते हों फिर ऐसी चीज़ों में म्यूज़िक और ग़ैर शरई उमूर भी लाज़िम होते हैं लेहाज़ा इन के लहवो लइ़ब होने में शक नहीं और लहवो लइ़ब की उजरत जाइज़ नहीं।

अल्लाह तआ़ला कुरआने पाक में फ़रमाता है :

﴿وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یَّشْتَرِیْ لَهْوَ الْحَدِیْثِ لِیُضِلَّ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ بِغَیْرِ عِلْمٍ ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और कुछ लोग खेल की बातें ख़रीदते हैं कि **अल्लाह** की राह से बेहका दें बे समझे।

(پ21، لقمان:6)

आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ लिखते हैं : "हर खेल और अ़बस फे़ल जिस में न कोई ग़रज़े दीन न कोई मनफ़ेअ़ते जाइज़ा दुन्यवी हो, सब मकरूहे बेजा हैं, कोई कम कोई ज़्यादा।"

(फ़तावा रज़विया, 24/78)

बह़रुर्राइक़ में है :

“ولا يجوز الاجارة على شيئ من الغناء واللهو” **तर्जमा :** गाने और लहव (यानी खेल और फ़ुज़ूल कामों) पर इजारा जाइज़ नहीं।” (بحر الرائق، 8/36)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّى الله عليه واٰلهٖ وسلَّم

किसी को सिफ़ारिश कर के नौकरी दिलवाना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि किसी को सिफ़ारिश कर के नौकरी दिलवाना कैसा है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : अगर वोह इस नौकरी का अहल है और उस की सिफ़ारिश की तो येह सूरत जाइज़ है और अगर ऐसी सिफ़ारिश की, कि उस से किसी ह़क़दार का ह़क़ मारा गया या किसी ना अहल को सिफ़ारिश कर के नौकरी दिलवा दी तो येह जाइज़ नहीं। नीज़ येह वाज़ेह़ रहे कि नौकरी लगवाने के लिए रिश्वत का लेन देन हरगिज़ जाइज़ नहीं।

ह़दीसे पाक में है :

“لعن رسول الله صلى الله عليه وسلم الراشى والمرتشى” **तर्जमा :** रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रिश्वत देने वाले और लेने वाले पर लानत फ़रमाई है। (ترمذی، 3/66، حدیث:1342)

आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه सिफ़ारिश करने का हुक्म बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : नेक बात में किसी की सिफ़ारिश करना मसलन सिफ़ारिश कर के मज़्लूम को उस का ह़क़ दिला देना या किसी मुसलमान को ईज़ा से बचा लेना या किसी मोह़ताज की मदद करा देना शफ़ाअ़ते ह़सना है, ऐसी शफ़ाअ़त करने वाला अज्र पाएगा अगर्चे उस की शफ़ाअ़त कारगर न हो और बुरी बात के लिए सिफ़ारिश कर के कोई गुनाह करा देना शफ़ाअ़ते सय्यिआ है इस के फ़ाइल पर इस का वबाल है अगर्चे न मानी जाए।

(फ़तावा रज़विया, 23/407)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّى الله عليه واٰلهٖ وسلَّم

गिरवी रखी हुई चीज़ से नफ़्अ़ उठाना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़ैद ने बकर को कुछ लाख रुपिये क़र्ज़ दे कर उस का घर तीन साल के लिए रेहन पर ले लिया तीन साल के बाद बकर ज़ैद की रक़म लौटा कर अपना घर वापस ले लेगा और तीन साल तक उस मकान का किराया ज़ैद ह़ासिल करेगा। आया (क्या) इस त़रह़ का मुआ़मला करना जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : सवाल में मज़्कूरा सूरत नाजाइज़ व ह़राम है और येह सूद के ज़ुमरे में आती है। चुनान्चे आला ह़ज़रत इमामे एहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : रेहन में किसी त़रह़ के नफ़्ए़ की शर्त़ बिला शुबा ह़राम और ख़ालिस सूद है बल्कि इन दियार में मुर्तहिन का मरहून से इन्तेफ़ाअ़ बिला शर्त़ भी ह़क़ीक़तन ब हुक्मे उ़र्फ़ इन्तेफ़ाअ़ बिश्शर्त़ रिबाए मह़ज़ है।

قال الشامی قال ط قلت و الغالب من احوال الناس انهم انما یریدون عند الدفع الانتفاع و لولاہ لما اعطاہ الدراهم وهذا بمنزلة الشرط لان المعروف کالمشروط وهو مما یعین المنع

तर्जमा : अ़ल्लामा शामी फ़रमाते हैं कि त़ह़ावी ने फ़रमाया : मैं केहता हूं कि ग़ालिब ह़ाल लोगों का येह है कि वोह रेहन से नफ़्ए़ का इरादा रखते हैं अगर येह तवक़्क़ोअ़ न हो तो क़र्ज़ ही न दें और येह ब मन्ज़िला शर्त़ के है क्यूंकि मारूफ़ उ़र्फ़ मशरूत़ शर्त़ के हुक्म में होता है। येह बात अ़दमे जवाज़ को मुतअ़य्यन (नाजाइज़ होने को तै) करती है। (फ़तावा रज़विया, 25/57)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّى الله عليه واٰلهٖ وسلَّم

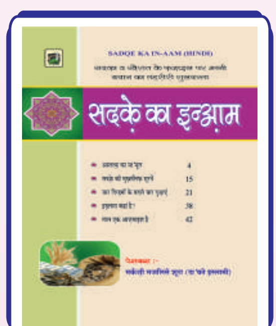

कारोबार में वादे की अहमियत

अ़ब्दुर्रह़मान अ़त्तारी मदनी

आज कल हर कोई येह चाहता है कि मेरा कारोबार ख़ूब फले फूले। कारोबार की कामयाबी के जहां और अस्बाब हैं वहां "**वादे**" की पासदारी भी बड़ी अहमियत की ह़ामिल है। कारोबार से तअ़ल्लुक़ रखने वाला कोई भी शख़्स उसी वक़्त कामयाब कारोबारी बन सकता है जब वोह अपना एतेमाद क़ाइम करने में कामयाब हो जाए और "**वादा**" पूरा करने से लोगों का एतेमाद बह़ाल होता है। एतेमाद की बह़ाली कारोबार की तरक़्क़ी में रीढ़ की हड्डी की ह़ैसियत रखती है। बाज़ लोग पार्टियों से उधारी पर माल लेते हैं, अगर वोह उन्हें किए गए "**वादे**" के मुत़ाबिक़ पैसे दे देते हैं तो पार्टियां मुत़मइन रेहती हैं और जब वोह दोबारा उन से माल लेने जाते हैं तो वोह ब ख़ुशी उन्हें उधार पर माल दे देती हैं। यूंही गाहक से ओर्डर लेते वक़्त जो चीज़ देने का "**वादा**" किया हो वोही दी जाए, इस का फ़ाइदा येह होगा कि गाहक का एतेमाद क़ाइम होगा और वोह अपने क़रीबी लोगों को भी आप के पास आने का मश्वरा देगा, अगर त़ै शुदा चीज़ न दी और "**वादा ख़िलाफ़ी**" की तो गाहक बदज़न हो जाएगा और दोबारा कभी आप की दुकान के क़रीब भी नहीं फटकेगा और न किसी को आने देगा और यूं बिक्री में कमी हो जाएगी और कारोबार ठप होने का आग़ाज़ हो जाएगा। कोशिश करें जब भी किसी से "**वादा**" करें उसे ज़ब्ते़ तेह़रीर में ले आएं या अपने मोबाइल फ़ोन में रिमाइन्डर (Reminder) रख लें ताकि भूल चूक न हो और "**वादा**" वक़्त पर पूरा हो सके।

बाज़ दुकानदार पैसे देने के बारे में सप्लायर्ज़ से झूटे "**वादे**" करते हैं कि कल आ जाना, परसों आ जाना लेकिन फिर उन को वक़्त पर पैसे नहीं देते और धक्के खिलाते रेहते हैं।

वादा ख़िलाफ़ी ह़राम है

याद रखिए! बद अ़हदी (यानी "**वादा**" पूरा न करने) की निय्यत से और फ़क़त़ टालने के लिए झूटा "**वादा**" करना नाजाइज़ो ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। ह़दीस शरीफ़ में है : जो किसी मुसलमान से अ़हद शिकनी करे, उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़रिश्तों और तमाम इन्सानों की लानत है और उस का कोई फ़र्ज़ क़बूल न होगा न नफ़्ल। (بخاری، 1/616، حدیث: 1870، ملتقطاً)

"**वादा**" करते वक़्त अगर किसी की निय्यत "**वादा ख़िलाफ़ी**" की हो मगर इत्तेफ़ाक़न पूरा कर दे तो फिर भी उस बद निय्यती की वज्ह से गुनहगार है। हर "**वादे**" में निय्यत का बड़ा दख़्ल है।

(ख़ुलासा अज़ मिरआतुल मनाजीह़, 6/492)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें "**वादा**" पूरा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

कुरआने पाक में मज़्कूर पेशे

(क़िस्त 01)

मौलाना अ़ब्दुर्रह़मान अ़त्तारी मदनी

प्यारे इस्लामी भाइयो ! कुरआने मजीद में हर चीज़ का बयान मौजूद है, इरशादे बारी तआ़ला है : ﴾وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَیْءٍ﴿ **तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** और हम ने तुम पर येह कुरआन उतारा जो हर चीज़ का रौशन बयान है।(1) ह़ज़रते सैयदना अबू बक्र बिन मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ما مِنْ شَیْءٍ فِی الْعَالَمِ اِلَّا وَهُوَ فِیْ كِتَابِ اللهِ यानी काइनात में ऐसी कोई चीज़ नहीं जिस का ज़िक्र कुरआने मजीद में मौजूद न हो।(2) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : अगर मेरे ऊंट की रस्सी गुम हो जाए तो ज़रूर मैं उसे किताबुल्लाह में पा लूंगा।(3) अल ग़रज़ येह कि कुरआने पाक में तमाम चीज़ों का इ़ल्म है लेकिन हमारी अ़क़्लें उसे समझने से क़ासिर हैं।

कुरआने करीम में मुख़्तलिफ़ पेशों का ज़िक्र : प्यारे इस्लामी भाइयो ! कुरआने करीम में जहां और बातों का बयान है वहीं इस में मुख़्तलिफ़ पेशों का ज़िक्र भी इशारतन मौजूद है, चुनान्चे अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी मायानाज़ किताब "اَلْاِتْقَان فِی عُلُوْمِ الْقُرْاٰن" में लिखते हैं : कुरआने पाक में पेशों की अस्ल मौजूद है और उन आलात के नाम भी मज़्कूर हैं जिन की ज़रूरत पेश आती है।(4) आइए कुरआने पाक से चन्द पेशों का ज़िक्र मुलाह़ज़ा करते हैं।

लोहे के काम का ज़िक्र : पारह 16, सूरए कहफ़ की आयत नम्बर 96 में इरशाद होता है : ﴾اٰتُوْنِیْ زُبَرَ الْحَدِیْدِ﴿ **तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** मेरे पास लोहे के टुकड़े लाओ।(5) आयते मुबारका का पस मन्ज़र कुछ यूं है कि दुन्या में गुज़रने वाले चार बड़े बादशाहों में से एक ह़ज़रते सैयदना सिकन्दर ज़ुल क़रनैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की दौराने सफ़र एक क़ौम से मुलाक़ात हुई थी जो याजूज माजूज के फ़सादात और उन की शरारतों से तंग आ चुकी थी। उन्हों ने आप से एक दीवार बनाने की दरख़्वास्त की थी ताकि याजूज माजूज उन के पास आ कर उन्हें तंग न कर सकें चुनान्चे आप ने दीवार बनाने के लिए उन से कहा था : मेरे पास लोहे के टुकड़े लाओ। जब वोह ले आए तो इस के बाद उन से बुन्याद खुदवाई, जब वोह पानी तक पहुंची तो उस में पथ्थर पिघलाए हुवे तांबे से जमाए गए और लोहे के तख़्ते ऊपर नीचे चुन कर उन के दरमियान लकड़ी और कोइला भरवा दिया और आग दे दी इस त़रह़ येह दीवार पहाड़ की बुलन्दी तक ऊंची कर दी गई और दोनों पहाड़ों के दरमियान कोई जगह न छोड़ी गई, फिर ऊपर से पिघलाया हुवा तांबा दीवार में पिला दिया गया तो येह सब मिल कर एक सख़्त जिस्म बन गया (यानी बहुत ही मज़बूत़ दीवार बन गई)।"(6) ✲ एक मक़ाम पर इरशाद होता है : ﴾وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِیْدَ﴿ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने उस (यानी ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام) के लिए लोहा नर्म किया।(7) (लोहा) ह़ज़रते सैयदना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के दस्ते मुबारक में आ कर मोम या गूंधे हुवे आटे की त़रह़ नर्म हो जाता था और आप उस से जो चाहते बग़ैर आग के और बग़ैर ठोंके पीटे बना लेते।(8)

काश्तकारी का ज़िक्र : इरशादे बारी तआ़ला है :

﴾اَفَرَءَیْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿۶۳﴾ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿۶۴﴾ لَوْ نَشَآءُ
لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿۶۵﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿۶۷﴾﴿

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो भला बताओ तो कि तुम जो बोते हो। क्या तुम उस की खेती बनाते हो या हम ही बनाने वाले हैं ? अगर हम चाहते तो उसे चूरा चूरा घास कर देते फिर तुम बातें बनाते रेह जाते कि हम पर तावान पड़ गया है। बल्कि हम बे नसीब रहे।(9)

---

(1) پ14، النحل:89 (2) الاتقان فی علوم القراٰن، 2/1027 (3) الاتقان فی علوم القراٰن، 2/1028 (4) الاتقان فی علوم القراٰن، 2/1031 (5) پ16، الکھف:96 (6) صراط الجنان، 6/36 (7) پ 22، سبا:10 (8) خزائن العرفان (9) پ27، الواقعہ:63 تا 67۔

मौलाना अ़दनान अह़मद अ़त्तारी मदनी

ह़ज़रते ख़ब्बाब बिन अरत رضی اللہ عنہ

एक सह़ाबी ए रसूल رضی اللہ تعالٰی عنہ मक्के में लोहे का काम करते थे और तलवारें बनाया करते थे उन्हों ने कुछ तलवारें बना कर एक काफ़िर आ़स बिन वाइल को फ़रोख़्त कर दीं जब उस काफ़िर से रक़म का मुत़ालबा किया तो वोह केहने लगा : मैं तुम्हें रक़म उस वक़्त तक नहीं दूंगा जब तक तुम मुह़म्मद (صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم) का इन्कार नहीं करोगे, सह़ाबी ए रसूल ने कहा : तुम मर जाओ और फिर ज़िन्दा किए जाओ तो फिर भी मैं मुह़म्मदे अ़रबी صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का साथ नहीं छोडूंगा। येह सुन कर उस काफ़िर ने कहा : फिर तुम मुझे छोड़ दो, मैं मर जाऊं फिर दोबारा ज़िन्दा किया जाऊं और मेरे पास माल व औलाद होगी तो अदा कर दूंगा।[1] प्यारे इस्लामी भाइयो ! इश्क़े रसूल और जज़्बए ईमानी से लबरेज़, सब्रो शुक्र के साथ इस्लाम पर साबित क़दम रेहने वाले येह बुलन्द मर्तबा सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते ख़ब्बाब बिन अरत رضی اللہ تعالٰی عنہ थे।

क़बूले इस्लाम : आप साबेक़ीने अव्वलीन में शामिल होने का एज़ाज़ रखते हैं आप छटे नम्बर पर इस्लाम लाए।[2] जबकि एक क़ौल के मुत़ाबिक़ आप ने 19 अफ़राद के बाद इस्लाम क़बूल किया यूं आप ने 20 के अ़दद को मुकम्मल किया[3] जिन 7 खुश नसीबों ने सब से पेहले अपने इस्लाम को ज़ाहिर किया उन में आप का शुमार भी होता है।[4]

मनाक़िब : आप رضی اللہ تعالٰی عنہ इल्मो फ़ज़्ल की दौलत से मालामाल थे[5] और सह़ाबा ए किराम علیہم الرضوان को क़ुरआने पाक पढ़ाते थे।[6] क़बूले इस्लाम से क़ब्ल जब ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ गुस्से की ह़ालत में अपनी बहन के घर पहुंचे तो उस वक़्त ह़ज़रते ख़ब्बाब رضی اللہ تعالٰی عنہ उन की बहन और बहनोई को क़ुरआने पाक की तालीम दे रहे थे।[7] ह़ज़रते ख़ब्बाब ने रसूलुल्लाह صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की हमराही में गज़्वए बद्र, उहुद और ख़न्दक़ समेत कई गज़्वात में शामिल होने का एज़ाज़ भी पाया है।[8] गज़्वए बद्र में रसूलुल्लाह صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की हम रकाबी का शरफ़ पाया तो पूरी रात प्यारे आक़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم (के ख़ैमे) की निगेहबानी करते रहे यहां तक कि फ़ज्र का वक़्त हो गया।[9] आप नबिय्ये करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का नेज़ा रखा करते थे।[10] जब माले ग़नीमत से आप का ह़िस्सा निकाला जाता तो आज़्माइश में पड़ जाने के ख़ौफ़ से आप रो पड़ते थे।[11]

राहे ख़ुदा में तकालीफ़ : आप की नस्ल अ़रबी है, ज़मानए जाहिलियत में कुछ लोगों ने आप को ग़ुलामी की ज़न्जीरों में जकड़ कर मक्के में बेच डाला था।[12] क़बूले इस्लाम के बाद मुशरिकीन ने आप को कमज़ोर पाया तो आप को सख़्त तकालीफ़ देनी शुरूअ़ कर दीं ताकि आप दीने इस्लाम को छोड़ दें मगर आप सब्रो इस्तेक़ामत का पहाड़ बन कर खड़े रहे,[13] कुफ़्फ़ारे मक्का आप को कांटों पर घसीटते फिरते थे,[14] आप को ज़िरह यानी लोहे का जंगी लिबास पेहना देते और तपती धूप में डाल देते थे। गर्म पथ्थरों पर लिटाते रहे यहां तक कि आप की पीठ का गोश्त (जगह जगह से) कम हो गया।[15] आप के जिस्म को दाग़ा जाता,[16] एक मरतबा मुशरिकीन ने आग जलाई (फिर आप को पकड़ कर उस पर लिटा दिया), आप की पीठ की (पिघलने वाली) चर्बी ही ने उस आग को बुझाया[17] एक मरतबा आप ने ह़ज़रते सैयदना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ को अपनी

तकालीफ़ की रूदाद यूं सुनाई : एक दिन मुशरिकीने मक्का ने मुझे पकड़ा, आग जलाई और मुझे उस पर पीठ के बल लिटा दिया, एक शख़्स मेरे सीने पर पाउं रख कर खड़ा हो गया, मैं ज़मीन से उस वक़्त अलग हुवा जब मेरी पीठ जल चुकी थी। फिर ह़ज़रते ख़ब्बाब ने अपनी पीठ से कपड़ा हटाया तो वहां बर्स (कोढ़) जैसे धब्बे थे।[18] रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप से बहुत उन्सियत रखा करते और आप के पास तशरीफ़ लाया करते थे, आप की मालिकन को इस की इत्तेलाअ़ मिलती तो वोह गर्म सलाख़ से आप के सर को दाग़ देती, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक इस की ख़बर पहुंची तो आप ने ह़ज़रते ख़ब्बाब के लिए दुआ़ की : ऐ **अल्लाह** ! तू ख़ब्बाब की मदद कर। (कुछ दिनों बाद) आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मालिकन के सर में कोई बीमारी हो गई जिस की वज्ह से वोह कुत्ते की त़रह़ भोंकने लग गई, किसी ने उसे सर को गर्म सलाख़ से दाग़ने का इलाज बताया, ख़ुदा की क़ुदरत कि अब ह़ज़रते ख़ब्बाब की येह ड्यूटी लग गई कि आप गर्म सलाख़ लेते और अपनी ज़ालिम मालिकन के सर को दाग़ा करते।[19] **इश्के़ रसूल :** आप फ़रमाते हैं : एक मरतबा रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे किसी लश्कर के साथ भेजा तो मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! आप मुझे दूर भेज रहे हैं हालांकि मैं (आप की हिफ़ाज़त की ग़रज़ से) आप की त़रफ़ से फ़िक्रमन्द रेहता हूं, इरशाद फ़रमाया : (मेरे बारे में) कितना फ़िक्रमन्द रेहते हो ? अ़र्ज़ की : सुब्ह़ करता हूं तो गुमान नहीं होता कि आप शाम कर पाएंगे, शाम करता हूं तो गुमान नहीं होता कि आप सुब्ह़ कर पाएंगे।[20] **करामत :** एक मरतबा प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जंग के लिए एक लश्कर रवाना फ़रमाया। राह में पानी ख़त्म हो गया और सब प्यास से बेचैन हो गए येह देख कर आप ने एक साथी की ऊंटनी को बिठाया, अचानक उस के थन (दूध से भर कर) मशकीज़े की त़रह़ फूल गए, सब ने सेर हो कर दूध पिया।[21] **इन्फ़िरादी कोशिश :** आप ने एक मर्द को मुलाह़ज़ा किया जो निस्फ़ुन्नहार के वक़्त नमाज़ पढ़ रहा था आप ने उसे रोका और इरशाद फ़रमाया : येह वोह घड़ी है जिस में जहन्नम के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं तुम इस वक़्त में नमाज़ मत पढ़ो।[22] **तिलावते क़ुरआन :** एक मरतबा आप का पड़ोसी मस्जिद से बाहर निकल रहा था तो आप ने उस का हाथ पकड़ा और फ़रमाया : जितनी त़ाक़त रखते हो उस से **अल्लाह** का क़ुर्ब ह़ासिल करो, बेशक ! तुम उस के कलाम (क़ुरआन) से बढ़ कर किसी चीज़ के ज़रीए उस का क़ुर्ब नहीं पा सकते।[23] आप जहां नेकी की दावत आ़म करते वहीं ह़द दर्जा मोह़तात़ भी थे। एक मरतबा कुछ लोग मस्जिद में बैठे हुवे थे कि आप मस्जिद में तशरीफ़ ले आए और ख़ामोशी से बैठ गए, लोगों ने अ़र्ज़ की : लोग आप के इर्द गिर्द जमा हो चुके हैं ताकि आप उन से गुफ़्तगू करें या उन को किसी बात का हुक्म दें। आप ने फ़रमाया : मैं उन्हें किस चीज़ का हुक्म दूं, शायद मैं उन्हें ऐसी बात का हुक्म दे बैठूं जिसे मैं ख़ुद नहीं करता।[24] **वफ़ात :** कूफ़ा में लोग अपने मुर्दों को घरों के सेह़न या दरवाज़े के पास दफ़्न करते थे। ह़ज़रते ख़ब्बाब कूफ़ा तशरीफ़ लाए तो आप को येह बात नागवार गुज़री लेहाज़ा आप ने अपने बेटे को वसियत की : तुम मुझे कूफ़ा से बाहर मैदान में दफ़्न करना, आप की वसियत पर अ़मल किया गया इस त़रह़ कूफ़ा के बाहर मैदान में बनने वाली सब से पेहली क़ब्र आप की थी, देखा देखी दीगर लोग भी अपने मर्ह़ूमीन को मैदान में दफ़नाने लगे।[25] आप की उ़म्र मुबारक 73 साल थी।[26] ह़ज़रते सैयदना मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه माहे सफ़र सिन 37 हिजरी में होने वाली जंगे सिफ़्फ़ीन से फ़ारिग़ हो कर वापस[27] कूफ़ा शेहर के दरवाज़े पर पहुंचे तो वहां सात क़ब्रें नज़र आईं, मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को आप की वफ़ात का इल्म हुवा तो फ़रमाने लगे : **अल्लाह** ख़ब्बाब पर रेह़म फ़रमाए ! वोह बख़ुशी इस्लाम लाए और राज़ी ब रिज़ा हो कर हिजरत की और मुजाहिद बन कर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारी।[28] आप से 32 अह़ादीसे करीमा रिवायत की गई हैं, 3 अह़ादीस बिल इत्तेफ़ाक़ बुख़ारी व मुस्लिम में हैं। 2 ह़दीसें इमाम बुख़ारी ने जबकि 1 ह़दीस इमाम मुस्लिम ने इन्फ़िरादी त़ौर पर रिवायत की है।[29]

---

(1) بخاری، 3/272، حدیث:4733، 4734، سیرت ابن ہشام، ص141 (2) اسد الغابہ، 2/141 (3) سیر اعلام النبلاء، 4/5 (4) تاریخ ابن عساکر، 43/366 (5) استیعاب، 2/21 (6) عمدۃ القاری، 11/583، تحت الحدیث:3867 (7) تاریخ ابن عساکر، 44/34 ملخصاً (8) مستدرک، 4/468، حدیث:5692 (9) نسائی، ص285، حدیث:1635 (10) معجم کبیر، 4/64 (11) حلیۃ الاولیاء، 1/194 (12) اسد الغابہ، 2/141 (13) الاعلام للزرکلی، 2/301 (14) در منثور، پ14، النحل، تحت الایۃ:106، 5/170 (15) اسد الغابہ، 2/141 (16) حلیۃ الاولیاء، 1/194 (17) الطبقات الکبریٰ للشعرانی، 1/35 (18) طبقات ابن سعد، 3/123 (19) اسد الغابہ، 2/142 (20) معجم کبیر، 4/81 (21) معجم کبیر، 4/78 (22) تخویف من النار، ص93 (23) مستدرک، 3/231، حدیث: 3704 (24) اسد الغابہ، 2/143 (25) معجم کبیر، 4/56، مستدرک، 4/468، حدیث: 5691 (26) سیر السلف الصالحین، ص178 (27) سیر السلف الصالحین، ص178، تاریخ ابن عساکر، 43/359 (28) معجم کبیر، 4/56 (29) شرح ابی داؤد للعینی، 3/460، تحت الحدیث:778۔

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए

मौलाना अबू माजिद मुहम्मद शाहिद अ़त्तारी मदनी

मज़ार शैख़ बुरहानुद्दीन ग़रीब हांसवी निज़ामी ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र इस्लामी साल का दूसरा महीना है । इस में जिन सह़ाबा ए किराम, औलिया ए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमा ए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है, इन में से 12 का मुख़्तसर तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

सह़ाबा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان **:**

(1) सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते सैयदना आ़मिर बिन फ़ुहैरा अज़्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ुलाम थे, एलाने नबुव्वत की इब्तेदा में इस्लाम ला कर اَلسَّابِقُوْنَ الْاَوَّلُوْن में शामिल हुवे, ज़ुल्मो सितम का निशाना बनाए गए, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़रीद कर आज़ाद कर दिया, हिजरत के दौरान नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुख़्तसर क़ाफ़िले का ह़िस्सा थे, अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा में शामिल हो कर क़ारी (आ़लिम) होने का शरफ़ पाया । बीरे मऊना सफ़र 4 हिजरी की मुहिम में शरीक हो कर चालीस साल की उ़म्र में जामे शहादत नोश कर गए, शहादत के बाद आप की लाशे मुबारका तलाश करने के बावुजूद न मिल सकी, या तो फ़िरिश्तों ने लाशे मुबारका को दफ़्न कर दिया या फिर आस्मान पर उठा लिया ।[(1)] (2) ह़ज़रते बीबी सुवैबा असलमिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अबू लहब की लौंडी थीं, जिस ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैदाइश की ख़ुशी में इन्हें आज़ाद कर दिया, आप ने ह़ज़रते ह़लीमा सअ़दिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पेहले नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को चार माह दूध पिलाया, ह़ज़रते ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब और ह़ज़रते अबू सलमा मख़ज़ूमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने भी इन से दूध पिया था । आप दौलते ईमान से मुशर्रफ़ हुईं, ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इन की ताज़ीम फ़रमातीं, ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन का इकराम फ़रमाते और मदीना शरीफ़ से कपड़े वग़ैरा बत़ौरे तह़ाइफ़ भेजते, आप का विसाल 7 हिजरी ग़ज़्वए ख़ैबर के बाद (ग़ालिबन सफ़र) में हुवा ।[(2)]

औलिया ए किराम رحمھم اللہ السَّلام **:**

(3) बुरहानुल औलिया शैख़ बुरहानुद्दीन ग़रीब हांसवी निज़ामी ह़नफ़ी की विलादत 654 हिजरी को हांसी (ज़िलअ़ ह़िसार सूबा हरियाणा) हिन्द में हुई और 12 सफ़र 738 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ार मुबारक ख़ुल्दाबाद (ज़िलअ़ औरंगाबाद सूबा महाराष्ट्र) हिन्द में है । आप ख़लीफ़ा व ख़ादिमे ख़ास ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया, आ़लिमे दीन, शैख़े त़रीक़त और ख़ानक़ाहे बुरहानुद्दीन ख़ुल्दाबाद के बानी हैं ।[(3)] (4) रईसुल उ़क़ला ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल्लाह क़ुरैशी सोहरवर्दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ शैख़ुल इस्लाम बहाउद्दीन के देहल्वी ख़ानदान के चश्मो चराग़ हैं, आप का विसाल 22 सफ़र 890 हिजरी को देहली में हुवा, आप का मक़्बरा पुरानी देहली में मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब सोहरवर्दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मक़्बरे से मुत्तसिल है । आप आ़ली मर्तबत घराने से तअ़ल्लुक़ रखने वाले, बहुत मुजाहदे करने वाले, सालिक, मजज़ूब और साह़िबे करामत वलिय्युल्लाह थे ।[(4)] (5) मर्जए ख़ासो आम ह़ज़रते सैयद ग़ियासुद्दीन बग़दादी अह़मदाबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत ख़ानदाने ग़ौसुल आज़म में हुई, बग़दाद से अह़मदाबाद तशरीफ़ लाए, साह़िबे इ़ज़्ज़तो जलाल बुज़ुर्ग, मुबल्लिग़े इस्लाम और बा करामत वलिय्युल्लाह थे, कसीर कुफ़्फ़ार ने आप के दस्ते अक़्दस पर इस्लाम क़बूल किया, 22 सफ़र 895 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ार क़स्बा सर समनी गुजरात हिन्द में है ।[(5)] (6) मोह़तसिबे उ़लमा व औलिया ह़ज़रते इमाम शैख़ अबुल अ़ब्बास अह़मद ज़र्रूक़ बुरनुसी मालिकी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 846 हिजरी तलीवान नज्द जबलुल बुरानुस, फ़ास, मग़रिब (यानी मराकिश) में हुई ।

मज़ार शैख़ अहमद ज़र्रूक़ बुरनुसी मालिकी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

मज़ार शैख़ हम्ज़ा रीना मख़दूम कुब्रवी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

18 सफ़र 899 हिजरी को विसाल फ़रमाया, तदफ़ीन मुसराता लीबिया में हुई । आप हाफ़िज़े कुरआन, फ़ाज़िले जामेअ़तुल अज़्हर, फ़क़ीहे मालिकी, 31 कुतुब के मुसन्निफ़, साहिबे विलायत और आ़बिदो ज़ाहिद थे ।[(6)] (7) मेहबूबुल आ़लम हज़रते शैख़ हम्ज़ा रीना मख़दूम कुब्रवी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 900 हिजरी तजर शरीफ़ (सौपुर ज़िल्अ़ बारहमूला) कश्मीर में हुई और 25 सफ़र 984 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ारे मुबारक महल्ला मख़दूम मन्डो तजर शरीफ़ में मर्जए़ ख़ासो आम है । एहले कश्मीर मसाइबो मुश्किलात में आप के अ़ताकर्दा ''वज़ीफ़ए ख़त्म शरीफ़'' पढ़ते हैं । येह ह़ल्ले मुश्किलात व दफ़्ए़ मसाइब के लिए मुजर्रब है ।[(7)]

उ़लमा ए इस्लाम رحمهمُ الله السَّلام **:**

(8) नबीरए ग़ौसुल आज़म हज़रते शैख़ अबुल मुहासिन फ़ज़्लुल्लाह जीलानी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ शेहज़ादए ग़ौसुल वरा हज़रते शैख़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ जीलानी के बेटे थे, आप ने अपने वालिदे गिरामी, अपने चचा शैख़ अ़ब्दुल वहहाब जीलानी और दीगर उ़लमा से इल्म हासिल किया । सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 656 हिजरी में तातारियों के हाथों शहीद हुवे ।[(8)] (9) ख़ती़बे ख़ुवारिज़्म हज़रते मुवफ़्फ़िक़ बिन अहमद मक्की हनफ़ी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत तक़रीबन 484 हिजरी में हुई और सफ़र 568 हिजरी को ख़ुवारिज़्म में विसाल फ़रमाया, आप बेहतरीन अदीबो ख़ती़ब, फ़ाज़िले ज़माना, फ़क़ीहे हनफ़ी, उस्ताज़ुल उ़लमा और कई कुतुब के मुसन्निफ़ हैं, आप ने अपनी तसनीफ़ ''मनाक़िबुल इमामुल आज़म अबी हनीफ़ा'' की वज्ह से शोहरत पाई ।[(9)] (10) शेरे इस्लाम हज़रते मौलाना गुलाम अहमद अख़गर अमृतसरी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश 1281 हिजरी को एक कश्मीरी घराने में हुई और विसाल 16 सफ़र 1346 हिजरी को अमृतसरी हिन्द में हुवा, आप जैयद आ़लिमे दीन, मुनाज़िरे एहले सुन्नत, बेहतरीन वाइज़, अच्छे शाइर, बानी ए अख़्बार एहले फ़िक़्ह अमृतसरी, आ़बिदो ज़ाहिद, हज़रते अमीरे मिल्लत पीर सैयद जमाअ़त अ़ली शाह मोहद्दिस अ़लीपुरी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मेहबूब और जांनिसार ख़लीफ़ा थे ।[(10)] (11) उस्ताज़ुल उ़लमा हज़रते मौलाना मुहम्मद करीम क़ादरी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत धेदवाल चकवाल में हुई और 5 सफ़र 1356 हिजरी को विसाल फ़रमाया, धेदवाल में तदफ़ीन हुई । आप जैयद आ़लिमे दीन, उस्ताज़ुल उ़लमा मौलाना क़ाज़ी हज़रते गुलाम जीलानी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दामाद और मुदर्रिसे मद्रसए इशाअ़तुल उ़लूम चकवाल थे, हज़रते सुल्तान बाहू رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सिलसिलए क़ादरिया में मुरीद थे ।[(11)] (12) हज़रते मौलाना अबुल मआ़नी अ़ब्दुस्सुबूर बेग मन्शूर हज़ारवी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 1341 हिजरी को बाग़दरा शरीफ़ (हरीपुर हज़ारा, KPK) के सूफ़ी घराने में हुई और यकुम सफ़र 1436 हिजरी को विसाल फ़रमाया । आप फ़ाज़िले दारुल उ़लूम मन्ज़रे इस्लाम बरैली शरीफ़, ख़लीफ़ा ए हुज्जतुल इस्लाम अ़ल्लामा हामिद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ, बानी ए जामेअ़ा अन्वारुल क़ुरआन हसन अब्दाल व इदारए इल्मिय्या (जामेअ़ मस्जिद आ़लिया सिद्दीक़ा गखटर मन्डी, गुजरानवाला), मुसन्निफ़े कुतुबे कसीरा, साहिबे दीवान शाइर और उस्ताज़ुल उ़लमा थे । अ़र्सए दराज़ तक गखटर मन्डी में ख़िता़बत फ़रमाई ।[(12)]

---

(1) الاستیعاب، 2/344 (2) طبقاتِ ابن سعد، 1/87، تاریخ الخمیس، 1/408، فتاویٰ رضویہ، 30/295 (3) اخبار الاخیار فارسی، ص93، نفائس الانفاس مترجم، ص10، 16 (4) اخبار الاخیار فارسی، ص214، 215 (5) تذکرۃ الانساب، ص115 (6) قواعد التصوف، ص7 تا 12 (7) تذکرہ اولیاء کشمیر، ص96 تا 104، تصوف اور کشمیری صوفیاء، ص281 تا 291 (8) اتحاف الاکابر، ص372 (9) الجواہر المضیۃ، 2/188، اعلام للزرکلی، 7/333 (10) تذکرہ خلفائے امیر ملت، ص67 تا 72 (11) تذکرہ علمائے اہلسنت ضلع چکوال، ص81 (12) تذکرہ علمائے اہل سنت ضلع اٹک، ص332، حسن ابدال کے صاحبِ کتاب، ص27۔

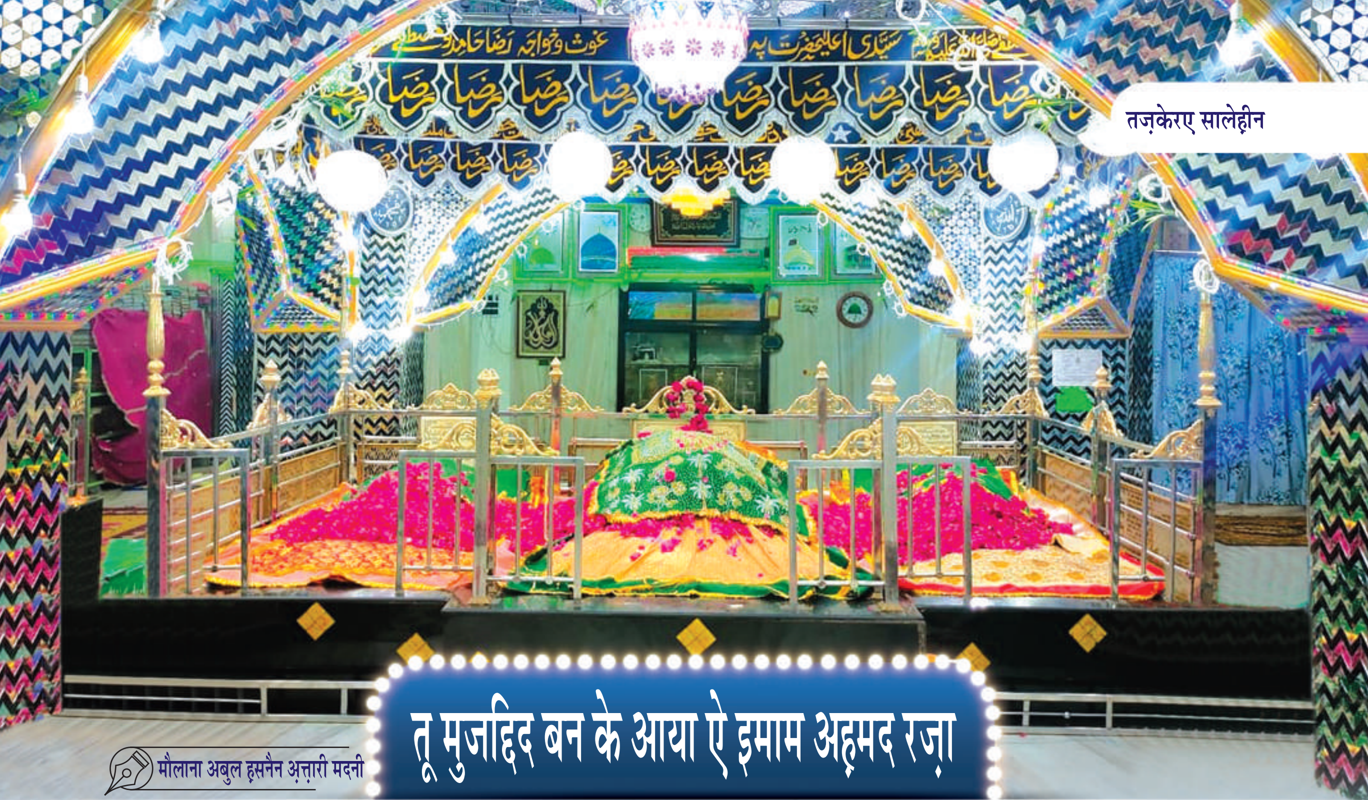

तू मुजद्दिद बन के आया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

मौलाना अबुल ह़सनैन अ़त्तारी मदनी

इब्तेदा ए इस्लाम से आज तक हर सदी के आख़िर में बड़े बड़े फ़ितने ज़ाहिर हुवे जिन पर क़ाबू पाने के लिए अल्लाह पाक ने ग़ैर मामूली सलाहि़यतों के ह़ामिल अपने मख़्सूस बन्दों को भेजा जिन्हों ने दीने इस्लाम की तालीमात को नए सिरे से तरो ताज़ा कर के मुसलमानों तक पहुंचाया। सदी के आख़िर में तशरीफ़ ला कर दीने इस्लाम को बाति़ल की आमेज़िश से पाक करने वाली मख़्सूस सिफ़ात की ह़ामिल इन शख़्सियात को मुजद्दिद कहा जाता है। इस अ़ज़ीम ख़िदमात के लिए 14 वीं सदी हिजरी में अल्लाह पाक ने हिन्दुस्तान के शेहर बरैली से एक अ़ज़ीम आ़शिक़े रसूल को मुन्तख़ब फ़रमाया जिन्हें दुन्या इमामे एहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के नाम से जानती है।

मुजद्दिद की तायीन कैसे होती है ? इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : किसी बुज़ुर्ग के मुजद्दिद होने का फ़ैसला उन के हम ज़माना उ़लमा के बयान से होता है जो उन बुज़ुर्ग की दीनी ख़िदमात और उन के इ़ल्म से लोगों को पहुंचने वाला फ़ाइदा देख कर अपने ग़ालिब गुमान के मुत़ाबिक़ उन्हें मुजद्दिद क़रार देते हैं।(1) मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : किसी (मख़्सूस फ़र्द) के मुजद्दिद होने पर अब कोई दलीले मन्सूस (यानी क़ुरआनो ह़दीस की दलील) नहीं हो सकती, वह़ी का सिलसिला मुन्क़ते़अ़ है। अब येही दलील है कि इस अ़हद (ज़माने) के उ़लमा, अ़वाम, ख़वास जिसे मुजद्दिद कहें वोह मुजद्दिद है।(2)

इमामे एहले सुन्नत के मुजद्दिद होने का एलान : सब से पेहले 1318 हिजरी में पटना शेहर में मुनअ़क़िदा एक अ़ज़ीम इज्लास जिस में उस वक़्त के तमाम अकाबिरे एहले सुन्नत मौजूद थे, उस में ह़ज़रते अ़ल्लामा क़ाज़ी अ़ब्दुल वह़ीद साह़ब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इमामे एहले सुन्नत की शान में एक क़सीदा पढ़ा जिस का एक मिस्रअ़ येह है : مُجَدِّدُ عَصْرِہٖ اَلْفَرْدُ الْفَرِیْد यानी येह अपने ज़माने के मुजद्दिद और यक्ता व यगाना हैं। उसी इज्लास में ख़ानक़ाहे क़ादरिया बदायूं शरीफ़ के सज्जादा नशीन मुत़ीउ़र्रसूल मौलाना शाह अ़ब्दुल मुक़्तदिर क़ादरी साह़ब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इमामे एहले सुन्नत का तज़्केरा इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाया : जनाब आ़लिमे एहले सुन्नत, मुजद्दिदे मिअते ह़ाज़िरा (मौजूदा सदी के मुजद्दिद) मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान साह़ब।

इन दोनों बुज़ुर्गों के येह इरशादात सुन कर तमाम उ़लमा ने क़बूल फ़रमाया, किसी ने रद्दो इन्कार नहीं फ़रमाया। येह ह़क़ीक़त में हिन्दुस्तान के उ़लमा ए एहले सुन्नत का इस पर इज्माअ़ है कि 14 वीं सदी के मुजद्दिद आला ह़ज़रत हैं।(3)

सूरज से ज़्यादा रौशन : मलिकुल उ़लमा, ख़लीफ़ा ए आला ह़ज़रत मौलाना ज़फ़रुद्दीन बिहारी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : येह बात सूरज से ज़्यादा रौशन है कि इमामे एहले सुन्नत के ज़माने के उ़लमा व मश्हूर शख़्सियात ने आप के उ़लूम से लोगों को पहुंचने वाला फ़ाइदा देख कर आप को मुजद्दिद माना। अगर इन तमाम ह़ज़रात के सिर्फ़ नाम ही लिखे जाएं जिन्हों ने आप को मुजद्दिद माना तो इस के लिए एक दफ़्तर दरकार हो।(4)

मुह़िये सुन्नत और मुजद्दिद इस सदी के आप हैं
ऐ इमामे मुफ़्तियां अह़मद रज़ा ख़ां क़ादरी(5)

मुजद्दिद की 5 अ़लामात और इमामे एहले सुन्नत की ज़ात : ऐ आ़शिक़ाने रज़ा ! मुजद्दिद की अ़लामात की रौशनी में इमामे एहले सुन्नत की सिफ़ात और तजदीदी कारनामे तफ़्सीलन बयान करने के लिए सेंकड़ों सफ़ह़ात दरकार हैं। शारेह़े बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की एक तेह़रीर की रौशनी में इख़्तेसार के साथ इमामे एहले सुन्नत की ज़ात में पाई जाने वाली मुजद्दिद की 5 अ़लामात मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

पेहली अ़लामत : मुजद्दिद वोह होगा जो एक सदी के आख़िर और दूसरी सदी के इब्तेदाई ह़िस्से में मौजूद हो।

इमामे एहले सुन्नत : इमामे एहले सुन्नत की विलादत 10 शव्वाल 1272 हिजरी बरोज़ पीर जबकि विसाल 25 सफ़र 1340 हिजरी जुम्अ़तुल मुबारक के दिन हुवा। इस त़रह़ आप ने 13 वीं सदी हिजरी के 28 साल 2 महीने 20 दिन जबकि 14 वीं सदी के 39 साल 1 महीना 25 दिन पाए।

दूसरी अ़लामत : मुजद्दिद अपने इल्मो फ़ज़्ल, वरअ़ व तक़्वा, इस्तेक़ामत फ़िद्दीन, तेह़रीर और तक़रीर में ऐसा यक्ता हो कि अ़वाम व ख़वास सब अपनी दीनी ज़रूरतों में उस की त़रफ़ रुजूअ़ करते हों और सब इस की बातों को तस्लीम करते हों।

इमामे एहले सुन्नत : आला ह़ज़रत ने 8 साल की उ़म्र में विरासत (Inheritance) का एक सह़ीह़ मस्अला तेह़रीर फ़रमाया। 10 साल की उ़म्र में **"हिदायतुन नह़व"** की अ़रबी शरह़ लिखी। शाबान 1286 हिजरी में उस वक़्त के दीनी निसाब में मुरव्वजा तमाम उ़लूमे दर्सिया से फ़रागत के बाद 13 साल 10 महीने 4 दिन की उ़म्र में वालिदे माजिद ने आप को फ़तवा लिखने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई।

13 वीं सदी के इख़्तेताम तक आप **अस्सायुल मश्कूर, ज़ौउन्निहायत, एतेक़ादुल अह़बाब, अनफ़सुल फ़िक्र, मत़्लउ़ल क़मरैन और इक़ामतुल क़ियामह** समेत कई अहम और तेह़क़ीक़ी रसाइल समेत हज़ारों सवालात के जवाबात लिख चुके थे।

1295 हिजरी में जब आप की उ़म्र का 23 वां साल जारी था, पेहले सफ़रे ह़ज के लिए ह़रमैने त़य्यिबैन ह़ाज़िर हुवे तो शैख़ ह़ुसैन बिन सालेह़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की दरख़्वास्त पर उन के रिसाले **अल जौहरतुल मदिय्यह** की अ़रबी शर्ह़ **अन नैय्यिरतुल वदिय्यह** सिर्फ़ 2 दिन में तेह़रीर फ़रमाई जिसे पढ़ कर उ़लमा ए किराम ह़ैरत ज़दा हो गए और आप के अन्वारे इ़ल्म का एतेराफ़ किया।

अल ग़रज़ 13 वीं सदी के आख़िर तक आप के इ़ल्मो फ़ज़्ल की शोहरत सर ज़मीने हिन्द से ले कर अर्ज़े ह़िजाज़ तक पहुंच चुकी थी। अ़वाम तो अ़वाम, मश्हूर उ़लमा ए किराम भी अहम मुआ़मलात और मज़हबी मसाइल में आप की त़रफ़ रुजूअ़ करने लगे थे।(6)

तीसरी अ़लामत : दीनी उ़लूमो फ़ुनून और जो उ़लूमो व फ़ुनून दीनी उ़लूमो फ़ुनून के लिए ज़रीआ़ हैं, सब का जामेअ़, माहिर और सब की तन्क़ीद व तसवीब का मलकए ताम्मह (मुकम्मल सलाह़ियत) रखता हो।

इमामे एहले सुन्नत : आला ह़ज़रत की तसानीफ़ का जो भी मुत़ालआ़ करेगा उस पर वाज़ेह़ हो जाएगा कि आप तमाम उ़लूमो व फ़ुनून में, ख़्वाह दीनी हों या दुन्यवी, सब में महारत रखते थे। येही वज्ह है कि तक़रीबन 51 या 52 उ़लूम व फ़ुनून में आप ने तक़रीबन एक हज़ार किताबें तस्नीफ़ फ़रमाईं और हर तस्नीफ़ अपनी जगह बे मिसाल व ला जवाब है।

सिर्फ़ फ़तावा रज़विया को ले लीजिए। जदीद तरतीब और तख़रीज के बाद इस की 30 ज़ख़ीम जिल्दें हैं। केहने को तो येह फ़तावा का मज्मूआ़ है मगर ह़क़ीक़त में इ़ल्मे क़ुरआन, तफ़्सीर, उसूले तफ़्सीर, ह़दीस, उसूले ह़दीस, अस्मा ए रिजाल, लुग़त, इ़ल्मे बयान, मआ़नी, बदीअ़, फ़िक़्ह, उसूले फ़िक़्ह, रस्मुल मुफ़्ती, सर्फ़, नह़व, इ़ल्मे कलाम, सियर, तारीख़, तसव्वुफ़, ह़िसाब, हैअत, इ़ल्मे तौक़ीत, जोग़ाराफ़िया, हैअते क़दीम, हैअते जदीद, अख़्लाक़, तजवीद, क़िराअत, इ़ल्मे फ़राइज़ वग़ैरा उ़लूम का ख़ज़ाना है। जिस का जी चाहे मुत़ालआ़ कर के इत़्मीनान कर ले। फिर ऐसी बारीक बह़सें फ़रमाईं और अ़क़्ल को ह़ैरान कर देने वाले ऐसे ईमान अफ़रोज़ निकात बयान फ़रमाए कि बड़े बड़े उ़लमा ह़ैरान हैं। अल ग़रज़ मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तमाम उ़लूमो फ़ुनून में यक्ताए रोज़गार, माहिर फ़ाइक़ थे, ख़्वाह वोह दीनी उ़लूम हों या दुन्यवी।

चौथी अ़लामत : सुन्नत की ह़िमायत व नुसरत और बिदअ़त का इस्तिसाल और इस की बैख़ कुनी (जड़ से उखाड़ने) में मसरूफ़ हो।

इमामे एहले सुन्नत : 14 वीं सदी के तमाम उ़लमा के कारनामों और इमामे एहले सुन्नत के जो कारनामे अब तक मन्ज़रे आ़म पर आ सके हैं उन का मुवाज़ना (Comparison) कीजिए तो ज़ाहिर हो जाएगा कि तन्हा आला ह़ज़रत के कारनामे पूरी सदी के तमाम उ़लमा के कारनामों पर भारी हैं। आला ह़ज़रत के फ़तावा और रसाइल का मुत़ालआ़ करें तो ज़ाहिर होता है कि आप ने एक नहीं सेंकड़ों सुन्नतों को ज़िन्दा फ़रमाया, इस की फ़ेहरिस्त इतनी त़वील है कि इन सब को ज़िक्र करने के लिए एक ज़ख़ीम किताब लिखने की ज़रूरत है।

सुन्नत ज़िन्दा करने के लिए बिदअ़त को ख़त्म करना ज़रूरी है और बिदअ़त की 2 क़िस्में हैं : एतेक़ादी और अ़मली। इमामे एहले सुन्नत ने एतेक़ादी बिदअ़तों और ग़ैर इस्लामी अ़क़ीदों के ख़िलाफ़ तक़रीबन 500 किताबें लिखीं और जुज़ई त़ौर पर हज़ारों फ़तावा लिखे जो छपे हुवे मौजूद हैं। अ़मली बिदआ़त में से आप ने सज्द ए ताज़ीमी, औ़रतों की औलिया ए किराम के मज़ारात पर ह़ाज़िरी, दाढ़ी मुन्डाना या कतरना, इस्लामी वज़्अ़ छोड़ कर अंग्रेज़ों की वज़्अ़ इख़्तियार करना वग़ैरा सेंकड़ों बिदआ़त की तरदीद फ़रमाई और अपने रूहानी तसर्रुफ़ात से करोड़ों बन्दगाने ख़ुदा को सुन्नत का पाबन्द बना कर बिदअ़तों से दूर फ़रमा दिया।

पांचवीं अ़लामत : ह़िफ़ाज़ते दीन की हर मुमकिन तदबीर इख़्तियार करे, इस्लाम दुश्मन अफ़्कार और तेह़रीकात के ख़िलाफ़ मसरूफ़ रहे।

इमामे एहले सुन्नत : दीन की ह़िफ़ाज़त करने, बुराइयों को ख़त्म करने के लिए इमामे एहले सुन्नत ने अपने ख़र्च से किताबें छपवाईं, प्रेस लगाया और मदारिस क़ाइम किए ताकि इस मिशन को चलाने वाले उ़लमा तैयार हों। ख़ुद दर्स दे कर बा सलाहियत, दीनदार मुख़्लिस उ़लमा तैयार किए, बड़े बड़े इज्लास किए, उ़लमा से गुमराहियत के ख़िलाफ़ तक़रीरें करवाईं, ख़ुद भी तक़रीरें कीं और मुख़्तलिफ़ तन्ज़ीमें क़ाइम फ़रमाईं। आप की क़ाइम कर्दा जमाअ़ते रज़ा ए मुस्त़फ़ा ने इस्लाम के अन्दरूनी और बैरूनी दुश्मनों का मुक़ाबला किया। जब मुसलमानों को मुर्तद बनाने के लिए बा क़ाइदा तेह़रीक चलाई गई तो इस तन्ज़ीम ने करोड़ों मुसलमानों को मुर्तद होने से बचाया और लाखों ग़ैर मुस्लिमों को मुसलमान किया।

ख़ुलासा येह कि उ़लमा ए किराम ने मुजद्दिद की जो निशानियां लिखी हैं वोह इमामे एहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ में मुकम्मल त़ौर पर मौजूद हैं जिस की बिना पर उ़लमा ए अ़रबो अ़जम, ह़िल्लो ह़रम ने आप को 14 वीं सदी का मुजद्दिद क़रार दिया है।[7]

ज़ोर बात़िल का, ज़लालत का था जिस दम हिन्द में
तू मुजद्दिद बन के आया ऐ इमाम अह़मद रज़ा[8]

उ़लमा ए अ़रब का इमामे एहले सुन्नत को मुजद्दिद क़रार देना : सिर्फ़ ग़ैर मुन्क़सिम हिन्दुस्तान ही नहीं बल्कि मक्कए मुकर्रमा, मदीनए मुनव्वरा, शाम, मिस्र और यमन वग़ैरा कई मुमालिक के अकाबिर उ़लमा ए किराम, मुफ़्तियाने इ़ज़ाम और शुयूख़ुल ह़दीस ने इमामे एहले सुन्नत की इ़ल्मी व दीनी ख़िदमात का एतेराफ़ किया और आप को मुजद्दिद क़रार दिया। तफ़्सील जानने के लिए ह़ुसामुल ह़रमैन और अद्दौलतुल मक्किय्यह वग़ैरा इमामे एहले सुन्नत की किताबों पर अ़रब दुन्या के उ़लमा ए किराम की तक़रीज़ात का मुत़ालआ़ फ़रमाएं। यहां नमूने के त़ौर पर सिर्फ़ एक अ़रब आ़लिमे दीन, मक्कए मुकर्रमा में मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ की किताबों के मुह़ाफ़िज़ (Librarian) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सैयद इस्माईल ख़लील رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के तास्सुरात मुलाह़ज़ा फ़रमाइए। ह़ुस्सामुल ह़रमैन पर अपनी तक़रीज़ में लिखते हैं :

اَقُوْلُ لَوْ قِيْلَ فِيْ حَقِّهٖ اَنَّهٗ مُجَدِّدُ هٰذَا الْقَرْنِ لَكَانَ حَقًّا وَّصِدْقًا

यानी मैं केहता हूं कि अगर इन के बारे में येह कहा जाए कि येह इस सदी के मुजद्दिद हैं तो येह बात ज़रूर ह़क़ और सच है।[9]

अल्लाह पाक इमामे एहले सुन्नत के फ़ुयूज़ो बरकात को मज़ीद आ़म फ़रमाए और तमाम मुसलमानों को आप के इ़ल्मी फ़ैज़ान से मुस्तफ़ीद होने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) اَلتَّنْبِئَۃُ، ص62 (2) فتاویٰ شارحِ بخاری، 3/350 (3) فتاویٰ شارحِ بخاری، 3/357 ملخصًا

(4) ह़याते आला ह़ज़रत, 3/151 तस्हीलन

(5) क़बालए बख़्शिश, स. 352

(6) इमामे एहले सुन्नत की त़रफ़ उ़लमा ए किराम के रुजूअ़ की तफ़्सील जानने के लिए फ़तावा रज़विया जिल्द 1 (ह़िस्सा अव्वल) के सफ़ह़ा 31 पर मौजूद शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़ाफ़िज़ ख़ादिम ह़ुसैन रज़वी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मक़ाला मुलाह़ज़ा फ़रमाइए।

(8) वसाइले बख़्शिश, स. 32 (9) ह़याते आला ह़ज़रत, 3/153

एक अ़ज़ीम इ़ल्मी शाहकार

فتاویٰ رضویہ

अह़मद रज़ा शामी अ़त्तारी मदनी

"फ़तावा रज़विया" आला ह़ज़रत, इमामे एहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن की ज़हानत व फ़त़ानत, तबह़्ह़ुरे इ़ल्मी और तफ़क़्क़ोह फ़िद्दीन का एक अ़ज़ीमुश्शान और फ़क़ीदुल मिसाल शाहकार है । कई दहाइयां गुज़रने के बा वुजूद अब तक फ़िक़्हे ह़नफ़ी के फ़तावा जात का ऐसा जामेअ़, मबसूत़, मुदल्लल और मुबरहन कोई दूसरा मजमूआ़ मुरत्तब न हो सका । जहाज़ी साइज़ की 12 जिल्दों पर मुश्तमिल फ़तावा रज़विया शरीफ़ जो अब तेह़क़ीक़ व तख़रीज और अ़रबी व फ़ारसी इ़बारतों के तर्जमे के बाद जदीद त़र्ज़े त़ब्अ़ से मुज़य्यन हो कर 33 मुख़र्रजा जिल्दों तक पहुंच गया है, जिसे हम बिला मुबालग़ा उर्दू ज़बान में दुन्या का ज़ख़ीम तरीन फ़तावा केह सकते हैं ।

फ़तावा रज़विया का तआ़रुफ़ इस बे मिसाल इ़ल्मी शाहकार का नाम इमामे एहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने "اَلْعَطَایَا النَّبَوِیَّہ فِی الْفَتَاوٰی الرِّضَوِیَّہ" रखा है, जो जदीद तेह़क़ीक़ व तख़रीज के साथ शाएअ़ होने के बाद तक़रीबन 22000 सफ़ह़ात, 6847 सवालात व जवाबात और 206 तेह़क़ीक़ी रसाइल पर मुश्तमिल है । जबकि हज़ारों मसाइल ज़िमनन ज़ेरे बह़स आए हैं । (फ़तावा रज़विया इशारिया, सफ़ह़ा 3)

फ़तावा रज़विया का मक़ाम फ़तावा रज़विया के बुलन्द इ़ल्मी मक़ाम का अन्दाज़ा लगाने के लिए सिर्फ़ येही बात काफ़ी है कि इस में अह़कामे शरीअ़त दरयाफ़्त करने वाले सिर्फ़ अ़वामुन्नास ही नहीं बल्कि आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बह़रे इ़ल्म से प्यास बुझाने वालों में मुल्क व बैरूने मुल्क से तअ़ल्लुक़ रखने वाले वक़्त के बड़े बड़े उ़लमा व फ़ुज़ला, मुफ़्तियाने इ़ज़्ज़ाम, मोह़द्दिसीने किराम, मुशाहिरे मुसन्निफ़ीन व मोअर्रिख़ीन, अस्ह़ाबे त़रीक़तो मारेफ़त, दानिश्वर व वुकला ह़त्ताकि मुख़ालिफ़ीन भी शामिल हैं, इन तिश्नगाने इ़ल्म की तादाद एक तेह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ 541 बनती है जिन्हों ने पेचीदा मसाइल में ग़ौरो ख़ौज़ करने के बाद इन मसाइल के काफ़ी व शाफ़ी ह़ल के लिए इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से राबेत़ा किया और आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन्हें तेह़क़ीक़ी और तसल्ली बख़्श जवाबात इ़नायत फ़रमाए । अगर फ़तावा रज़विया ग़ैर मुख़र्रजा की 9 जिल्दों में दरयाफ़्त किए गए इस्तिफ़्ता की तादाद को देखा जाए तो वोह 4095 है, जिस में से 3034 अ़वामुन्नास के इस्तिफ़्ता हैं जबकि 1061 इस्तिफ़्ता उ़लमा ए किराम ने भेजे हैं, इस का मत़लब येह हुवा कि आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से सवाल करने वालों में एक चोथाई (25%) तादाद सिर्फ़ उ़लमा व दानिशवरों की है । (फ़तावा रज़विया, 1/16)

फ़तावा रज़विया की नुमायां ख़ुसूसियात फ़तावा रज़विया उ़लूमो फ़ुनून के जवाहिर पारों से मुज़य्यन है । इस की एक छोटी सी नज़ीर ख़ुत़्बए फ़तावा रज़विया है जिस में अइम्मए मुज्तहिदीन व कुतुबे फ़िक़्ह के तक़रीबन 90 अस्मा ए गिरामी को सन्अ़ते बराअ़ते इस्तिहलाल इस्तेमाल करते हुवे इस अन्दाज़ से एक लड़ी में पिरो दिया है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना भी हो गई और उन अस्माए मुक़द्दसा से तबर्रुक भी ह़ासिल हो गया । इस ख़ुत़्बे से मुसन्निफ़ की फ़क़ाहत, क़ादिरुल कलामी और वुस्अ़ते इ़ल्मी का ब ख़ूबी अन्दाज़ा हो जाता है । इस में मौजूद फ़तावा जात क़ुरआनो ह़दीस, नुसूसे फ़िक़्हिया व अक़्वाले सलफ़ व ख़लफ़ से भरपूर नज़र आते हैं इस की चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

1 तयम्मुम की तारीफ़ व माहियते शरइया का ऐसा इ़ल्मी व तेह़क़ीक़ी मस्अला उस फ़तावा की ज़ीनत है कि दौरे ह़ाज़िर के बुलन्द जदीद मोह़क़्क़िक़ीन भी वर्त़ए ह़ैरत में पड़ जाते हैं, पेहले तयम्मुम की 7 तारीफ़ात ज़िक्र की गईं, फिर पानी से इ़ज्ज़ की तरतीब वार 175 सूरतें बयान फ़रमाईं, जो दीगर कुतुबे फ़िक़्ह में 40 या 50 से ज़ाइद न मिलेंगी नीज़ जिन चीज़ों से तयम्मुम किया जा सकता है पेहले कुतुबे फ़िक़्ह से तक़रीबन 74 अश्या के नाम बा ह़वाला ज़िक्र करने के बाद मुसन्निफ़े फ़तवा ने अपनी ख़ुदा दाद फ़क़ाहत की बदौलत उस में 107 का ख़ुद से इज़ाफ़ा फ़रमाया । जिन से तयम्मुम जाइज़ नहीं कुतुबे फ़िक़्ह से 58

का ज़िक्र बह़वाला फ़रमाने के बाद अपने तफ़क़्क़ोह से उस में 72 का इज़ाफ़ा फ़रमाया, जुम्ला अश्या का शुमार किसी क़ाबिले एतेमाद फ़िक़्ही किताब में मिलना तो दर किनार उन का निस्फ़ (आधा) भी एक साथ न मिल पाएगा। 2 सज्दए ताज़ीमी की हुरमत पर जब मुसन्निफ़े फ़तवा ने क़लम को जुम्बिश दी तो 40 अह़ादीस और डेढ़ सौ नुसूस (दलीलों) से अपने दावे को साबित किया। (फ़तावा रज़विया, 22/251) 3 दलाइल व इस्तिशहादात की कसरत की जो बहार फ़तावा रज़विया में है किसी और फ़तावा में उस का उ़श्रे अ़शीर भी नहीं मिलता जिस की एक झलक "لَمۡعَةُ الضُّحٰی فِی اِعۡفَاءِ اللُّحٰی" जैसा तेह़क़ीक़ी फ़तवा है जो एक मुठ्ठी दाढ़ी के वुजूब पर तेह़रीर किया गया है। इस में ज़वाइद के इ़लावा अस्ले मक़्सद में 18 आयतों, 72 ह़दीसों, 60 इरशादाते उ़लमा वग़ैरा कुल डेढ़ सौ नुसूस के ज़रीए बातिल का इब्त़ाल और ह़क़ का एह़क़ाक़ किया गया। (फ़तावा रज़विया, 22/607) 4 नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अफ़्ज़लुल मुर्सलीन होने पर एक आ़लिमे दीन ने सवाल किया कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अफ़्ज़लियत पर सराह़तन कोई आयते क़ुरआनी नहीं मिलती तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने 10 आयाते करीमा और 100 अह़ादीसे अ़ज़ीमा से ह़क़ को उजागर फ़रमाया। (फ़तावा रज़विया, 30/129) 5 नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे पाक पर अंगूठे चूमने के मस्अले पर "مُنِیۡرُ الۡعَیۡنِ فِیۡ حُکۡمِ تَقۡبِیۡلِ الۡاِبۡھَامَیۡنِ" के नाम से तक़रीबन 200 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल येह फ़तवा भी फ़तावा रज़विया का ह़िस्सा है जो 30 इफ़ादात और 12 फ़ाइदों पर मुश्तमिल है और हर फ़ाइदे में एक उसूले ह़दीस ज़िक्र करने के बाद उस के इस्बात में दलाइल का अम्बार लगा दिया, ह़दीसे ज़ईफ़ के क़बूल व रद पर इ़ल्मे उसूले ह़दीस के क़वाइद की रौशनी में ऐसा जामेअ़ और मुफ़स्सल कलाम किया कि देखने वाले अंगुश्त ब दन्दां रेह जाते हैं। (फ़तावा रज़विया, 5/429) 6 सवाल के हर पेहलू पर तन्क़ीह़ भी फ़तावा रज़विया का ख़ास्सा है जैसा कि एक सवाल त़लाक़ वाक़ेअ़ होने या न होने के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो जवाब में आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : जिस त़रह़ सवाल किया गया है और जो मुआ़मले की नोइ़यत है इस लेहाज़ से तो इस सवाल के 58 जवाब हो सकते हैं क्यूंकि इस की 58 शक्लें बनती हैं न जाने सवाल करने वाले को कौन सी शक्ल दरपेश हो। लेहाज़ा तमाम मुम्किना सूरतों का जवाब भी मरह़मत फ़रमाया और कहीं साइल 58 शक्लों के इस जवाब को देख कर परेशान न हो जाए और उसे फ़ैसला करना दुश्वार न हो जाए इन सब सूरतों का हुक्म चार अस्ल कुल्ली से निकाल कर इस जवाब को आसान भी फ़रमा दिया। (फ़तावा रज़विया, 12/436, मुलख़्ख़सन)

येह सिर्फ़ फ़िक़्ही फ़तावा जात की चन्द अम्सीला हैं अब एक **साइन्सी तेह़क़ीक़** का जल्वा भी मुलाह़ज़ा फ़रमाइए चुनान्चे 7 अमरीकी मुनज्जिम प्रोफ़ेसर अल्बर्ट ने 1338 हिजरी मुत़ाबिक़ 17 दिसम्बर 1919 ईसवी को एक हौलनाक पेशगोई की जिस में सूरज में सूराख़ होने और ज़मीन की तबाही के मुतअ़ल्लिक़ इन्केशाफ़ात थे, आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आयाते क़ुरआनिया और 17 दलाइले अ़क़्लिया के ज़रीए इस की पेशगोई को पारा पारा करने के बाद आख़िर में फ़रमाया : बयाने मुनज्जिम पर और मुवाख़ज़ात भी हैं मगर 17 दिसम्बर के लिए 17 पर ही इक्तेफ़ा करें। (फ़तावा रज़विया, 27/241 ता 242) और फिर सब ने देखा कि उस मुनज्जिम की पेशगोई झूटी और इमामे एहले सुन्नत का कलाम सच्चा साबित हुवा। 8 फ़तावा रज़विया का 15 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल मुख़्तसर तरीन रिसाला बनाम "اَلتَّحۡبِیۡرُ بِبَابِ التَّدۡبِیۡرِ" भी 21 आयाते क़ुरआनी, 40 अह़ादीसे नबवी और कसीर नुसूस व जुज़्इयात से मामूर है। इतना तेह़रीर करने के बाद साहिबे फ़तवा आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की शान देखिए आप फ़रमाते हैं : फ़क़ीर غَفَرَلَہٗ اللہ تعالٰی दावा करता है कि اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ अगर मेहनत की जाए तो, दस हज़ार से ज़ाइद आयात व अह़ादीस इस पर जम्अ़ हो सकती हैं। 9 इ़ल्मे कलाम, इ़ल्मे ह़दीस व उसूले ह़दीस, फ़िक़्ह के इ़लावा त़िब्ब, नुजूम, तारीख़, हैअत, फ़लसफ़ा और इस जैसे कई उ़लूमे जदीदा क़दीमा के मुतअ़ल्लिक़ फ़तावा जात व मसाइल भी फ़तावा रज़विया का ह़िस्सा हैं। 10 फ़तावा रज़विया की एक नुमायां ख़ुसूसियत येह भी है कि इस में मौजूद हर रिसाला का नाम तारीख़ी है जिस से इस रिसाले का सिने तेह़रीर निकाला जा सकता है।

क्या बयान कीजिए और क्या छोड़िए ! येह तो उस अ़ज़ीम व बे नज़ीर शाहकार के बह़रे बे करां में से चन्द क़ीमती मोती बत़ौरे नमूना ज़िक्र किए गए हैं वरना इस की गेहराइयों में से गोहरे नायाब निकालने के लिए मोह़क़्क़िक़ीन अब तक इस समुन्दर में ग़ोत़ा ज़न हैं और येह सिलसिला जारी व सारी रहेगा। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

मस्जिदे जुम्आ, मदीना शरीफ़ (प्यारे नबी ﷺ ने पेहली नमाज़े जुम्आ यहीं अदा फ़रमाई)

जुम्आ की 16 ख़ास बातें

मौलाना शाहज़ेब अ़त्तारी मदनी

जुम्आ़ का दिन **अल्लाह** पाक की एक अ़ज़ीम नेमत है जो सरवरे काइनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े आप की उम्मत को नसीब हुई है। अ़रबी ज़बान में इस दिन का नाम अ़रूबा था बाद में जुम्आ़ रखा गया और सब से पेहले जिस शख़्स ने इस दिन का नाम जुम्आ़ रखा वोह कअ़ब बिन लुवी हैं।(1)

इस मुबारक दिन की बहुत सी ख़स्लतें और ख़ास बातें हैं, ज़ैल में 16 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाहज़ा कीजिए :

(1) **ईद का दिन :** इस दिन (जुम्आ़) को **अल्लाह** ने मुसलमानों के लिए ईद बनाया है।(2)

(2) **दिनों का सरदार :** जुम्आ़ दिनों का सरदार है।(3)

(3) **बेहतरीन दिन :** बेहतरीन दिन जिस पर सूरज तुलूअ़ होता है वोह जुम्आ़ का दिन है।(4)

(4) **बख़्शिश का दिन :** जुम्आ़ और शबे जुम्आ़ की हर घड़ी में 600 लोग जहन्नम से नजात पाते हैं।(5)

(5) **साल भर के क़ियाम व सौम का सवाब :** जो कोई जुम्आ़ के दिन ग़ुस्ल करे, जल्द पैदल जाए क़रीब से तवज्जोह के साथ ख़ुत़बा सुने, कोई फ़ुज़ूल काम न करे उस के लिए हर क़दम पर एक साल के रोज़ों और शब भर की इ़बादत का सवाब है।(6)

(6) **जहन्नम नहीं भड़काया जाता :** जुम्आ़ के इ़लावा हर दिन जहन्नम को भड़काया जाता है और उस के दरवाज़ों को खोला जाता है।(7)

(7) **70 जुम्ओं का सवाब :** इ़मामे के साथ एक जुम्आ़ बग़ैर इ़मामा सत्तर जुम्आ़ के बराबर है।(8)

(8) **अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात :** जुम्आ़ या शबे जुम्आ़ को जिस मुसलमान का इन्तेक़ाल होता है **अल्लाह** उसे फ़ितनए क़ब्र से मेह़फ़ूज़ रखता है।(9)

(9) **मसाकीन का ह़ज :** जुम्आ़ मसाकीन का ह़ज है।(10)

(10) **उ़मरह का सवाब :** जुम्आ़ के बाद से नमाज़े अ़स्र का इन्तेज़ार करने वाले के लिए उ़मरह का सवाब है।(11)

(11) **क़बूलियत का वक़्त :** जुम्आ़ के दिन एक घड़ी है जिस में दुआ़ क़बूल होती है।(12)

(12) **सब्ते मोहर :** जुम्आ़ को छोड़ने वाले लोग बाज़ आ जाएं वरना **अल्लाह** उन पर मोहर लगा देगा फिर येह ग़ाफ़िलों में शुमार होंगे।(13)

(13) **कफ़्फ़ारे का हुक्म :** जो कोई बग़ैर उ़ज़्र जुम्आ़ क़ज़ा करे वोह एक दीनार वरना आधा दीनार सदक़ा करे।(14)

(14) **क़ियामत का दिन :** क़ियामत जुम्आ़ के दिन ही होगी।(15)

(15) **शहादत का सवाब :** जिस का इन्तेक़ाल जुम्आ़ को हुवा उस के लिए शहादत का सवाब है।(16)

(16) **मेह़शर में जुम्आ़ की शान :** क़ियामत के दिन **अल्लाह** पाक तमाम दिनों को उन की सूरत पर उठाएगा जबकि जुम्आ़ को चमकता हुवा रौशन रौशन उठाएगा।(17)

अल्लाह पाक हम सब को इस बा बरकत दिन की बरकात नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)صراط الجنان،10/152(2)ابن ماجہ،2/16،حدیث:1098(3)ابن ماجہ، 2/8، حدیث:1084 (4) مسلم، ص 331، حدیث :1977 (5) مسند ابی یعلیٰ، 3/235، حدیث: 3471 (6)ابن ماجہ،2/10، حدیث: 1087 (7)مسند الشامیین، 2/238، حدیث:9512(8)کنز العمال15/133، حدیث:41131 (9)ترمذی، 2/339،حدیث:1076 (10)جامع الصغیر، ص221،حدیث: 3635 (11)شعب الایمان،3/115،حدیث:3046 (12) مسلم، ص330، حدیث:1973(13) مسلم، ص433، حدیث:2002(14)ابوداؤد،1/393، حدیث: 1053 (15) مسلم، ص 331، حدیث:1977 (16)مرقاۃ المفاتیح، 3/461(17)المستدرک للحاکم،1/567، حدیث:1066 مختصراً۔

थेलीसीमिया और एनीमिया
(Thalassemia and Anemia)

डॉक्टर उम्मे सारिब अ़त्तारिया

एनीमिया जिस्म में ख़ून की कमी को कहा जाता है, एनीमिया की अक़्साम और वुजूहात बहुत ज़्यादा हैं। थेलीसीमिया भी एनीमिया की एक क़िस्म है। इस बीमारी में ख़ून में मौजूद लाल ख़लियों (Red Blood Cells) में हीमोग्लोबीन (एक क़िस्म की प्रोटीन) की सहीह़ मिक़्दार और सहीह़ मेयार बनने में मस्अला होता है और येह एक जीन की ख़राबी की वज्ह से होता है।

जीनियाती एतेबार से थेलीसीमिया की अक़्साम :

(1) अल्फ़ा थेलीसीमिया (A-Thalassemia)

(2) बीटा थेलीसीमिया (B-Thalassemia)

शिद्दत के लेहाज़ से थेलीसीमिया की अक़्साम :

(1) थेलीसीमिया मेजर (Major) **:** थेलीसीमिया मेजर सब से ज़्यादा शदीद है। येह एक ख़त़रनाक क़िस्म है जो नस्ल दर नस्ल भी हो जाती है। इस क़िस्म में ख़ून की कमी बहुत ज़्यादा होती है और अगर वक़्त पर ख़ून न लगवाया जाए तो जान जाने का ख़त़रा रेहता है।

(2) थेलीसीमिया इन्टर मीडिया (Intermedia) **:** थेलीसीमिया इन्टर मीडिया में शिद्दत दरमियानी होती है, इस में ख़ून लगवाने की ज़रूरत कम होती है, उ़मूमन हीमोग्लोबीन की मिक़्दार 7 से 9 तक रेहती है।

(3) थेलीसीमिया माइनर (Minor) **:** थेलीसीमिया माइनर में सब से कम शिद्दत पाई जाती है। येह मरीज़ उ़मूमन आ़म लोगों की त़रह़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। और इस क़िस्म में अ़लामात भी ज़ाहिर नहीं होतीं, सिर्फ़ लेबोरेटरी टेस्ट के ज़रीए़ ही मालूम हो सकता है। इस की तश्ख़ीस खुसूसन शादी से पेहले बहुत अहम है क्यूंकि अगर मियां बीवी दोनों इस के मरीज़ हों तो बच्चों को थेलीसीमिया मेजर हो सकता है।

थेलीसीमिया मेजर की अ़लामात आ़म त़ौर पर 6 माह की उ़म्र तक ज़ाहिर हो जाती हैं। चन्द अ़लामात येह हैं : ✲ बेचैनी ✲ पीलापन ✲ भूक न लगना ✲ बढ़ोतरी में नाकामी ✲ यरक़ान वग़ैरा।

थेलीसीमिया की तश्ख़ीस (Diagnosis) का तरीक़ा : ख़ून का एक टेस्ट जिस का नाम हीमोग्लोबीन इलेक्ट्रोफ़ोरेस (H.B. Electrophoresis) है येह सिर्फ़ ज़िन्दगी में एक ही दफ़्आ़ कराना ज़रूरी है, और छे महीने की उ़म्र के बाद किसी भी टाइम करवाया जा सकता है। अगर वालिदैन में से दोनों को थेलीसीमिया माइनर हो तो बच्चे को थेलीसीमिया मेजर होने का ख़त़रा रेहता है।

थेलीसीमिया के मरीज़ों के लिए ख़ूराक : कम चर्बी वाली गि़ज़ाएं और सब्ज़ियां वग़ैरा बिल उ़मूम सभी लोगों के लिए मुफ़ीद हैं। जबकि थेलीसीमिया के मरीज़ के लिए तो येह ज़रूरी है कि चर्बी व चिकनाई वाली गि़ज़ाएं बहुत कम खाए नीज़ अगर ख़ून में आयर्न की मिक़्दार पेहले ही मौजूद है तो मरीज़ को आयर्न से भरपूर खाने की अश्या को मज़ीद मेह़दूद करने की ज़रूरत है। मछली, गोश्त, दूध और ब्रेड वग़ैरा में आयर्न की मिक़्दार बहुत ज़्यादा होती है।

थेलीसीमिया फ़ोलिक एसिड की कमी का सबब बन सकता है। गेहरे सब्ज़ पत्तों वाली सब्ज़ियों और फलों में फ़ोलिक एसिड क़ुदरती त़ौर पर पाया जाता है, येह आला आयर्न लेवल के असरात को रोकने और ख़ून के सुर्ख़ ख़लियों की हि़फ़ाज़त के लिए ज़रूरी है। अगर मरीज़ को अपनी गि़ज़ा में काफ़ी फ़ोलिक एसिड नहीं मिल रहा है तो डॉक्टर से ज़रूर मश्वरा करे।

समाजी एतेबार से थेलीसीमिया की आगाही : 1 अ़वाम के लिए येह मालूमात ज़रूरी हैं कि रेहाइशी अ़लाक़े, तालीम, पेशे, आबोहवा, कपड़ों या साथ रेहने से येह मरज़ मुन्तक़िल नहीं होता 2 अगर वालिदैन में से किसी एक को थेलीसीमिया माइनर है तो बच्चे में भी सिर्फ़ थेलीसीमिया माइनर की मुन्तक़िली होगी 3 थेलीसीमिया माइनर हो या मेजर पैदाइश के वक़्त जिस्म में मौजूद होता है 4 थेलीसीमिया माइनर ता ज़िन्दगी माइनर यानी सग़ीरा ही रेहता है और थेलीसीमिया मेजर यानी कबीरा ता ज़िन्दगी मेजर ही रेहता है। येह दोनों अक़्साम कभी भी एक दूसरे में तब्दील नहीं हो सकतीं। 5 थेलीसीमिया माइनर जिन वालिदैन में हो तो उन के बच्चों में येह मुन्तक़िल होने का चान्स 50 फ़ीसद है और 25 फ़ीसद थेलीसीमिया मेजर का चान्स है। अगर्चे येह लोग बज़ाहिर तन्दुरुस्त होते हैं लेकिन येह मरज़ इन की आइन्दा नस्लों में मुन्तक़िल होता है।

ज़रूरी एह़तियात़ : बीमारियां और इन के इलाज **अल्लाह** करीम की त़रफ़ से हैं, वोही शिफ़ा देने वाला और मेह़फ़ूज़ रखने वाला है लेकिन जहां तक तेह़क़ीक़ व तजरिबात से मालूम हो इस में एह़तियात़ लाज़मी करनी चाहिए। थेलीसीमिया से बचत के लिए एक एह़तियात़ी तदबीर पर अ़मल किया जाए। शादी से पेहले मर्द व औ़रत का टेस्ट लाज़मी करवाएं, अगर दोनों में से किसी एक को माइनर हो तो मस्अला नहीं है लेकिन अगर दोनों को ही माइनर हो तो बच्चों को मेजर होने के भी चान्स हैं, इस लिए जिस के टेस्ट में थेलीसीमिया की मौजूदगी सामने आए तो उस की शादी उसी से की जाए जिस का टेस्ट नोर्मल हो।

नोट : तमाम इलाज अपने त़बीब (डॉक्टर) के मश्वरे से करें।

बच्चों के लिए मज़ेदार और दिलचस्प तस्वीरी कहानी (सबक़ के साथ)

मदनी क्लीनिक

तबीबों के लिए आला हज़रत के मदनी फूल

काशिफ़ शेहज़ाद अत्तारी मदनी

आला हज़रत इमामे एहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن की शोहरत अगर्चे एक आ़लिम व मुफ़्ती के तौ़र पर है लेकिन आप की तेह़रीरों में ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ शोबों से वाबस्ता अफ़राद के लिए राहनुमाई (Guideline) मौजूद है। ज़ैल में इमामे एहले सुन्नत رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعالٰی عَلَیْہ का एक ऐसा मक्तूब मअ़ ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है।(1) जिस में आप ने एक त़बीब को इ़लाज से मुतअ़ल्लिक़ राहनुमा मदनी फूल इनायत फ़रमाए। आज तक़रीबन 133 साल पेहले लिखा गया येह ख़त़ बिलख़ुसूस शोबए तिब्ब (Medical) से वाबस्ता अफ़राद और बिल उ़मूम तमाम मुसलमानों के लिए आज भी उतना ही मुफ़ीद है जितना उस ज़माने में था।

अज़: बरैली 4 जुमादल आख़र 1306 हिजरी

बरादरे अ़ज़ीज़ मौलाना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ سَلَّمَہُ الْعَزِیْزُ عَنْ کُلِّ رَجِیْز

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَ رَحْمَۃُ اللّٰہِ وَ بَرَکَاتُہٗ

आप का ख़त़ आया ख़ुश किया, अल्लाह तआ़ला आप को दस्ते शिफ़ा बख़्शे और जफ़ा ओ शिक़ा (ज़ुल्म और बद बख़्ती) से मेह़फ़ूज़ रखे। बरादरम (मेरे भाई)! तुम त़बीब हो, मैं इस फ़न से मेह़फ़ूज़ मगर वोह दिली मह़ब्बत जो मुझे तुम्हारे साथ है मजबूर करती है कि चन्द ह़र्फ़ तुम्हारे गोश गुज़ार करूं: (1) जाने बरादर! जिस त़रह़ फ़िक़्ह में सदहा ह़वादिस (सेंकड़ों वाक़ेआ़त) ऐसे पेश आते हैं जो कुतुब में नहीं और उन में हुक्म लगाना एक सख़्त व दुश्वार गुज़ार पहाड़ का उ़बूर करना है जिस में बड़े बड़े ठोकरें खाते हैं, बिऐनिही येही ह़ाल तिब्ब का है बल्कि इस से भी नाज़ुक तर, बिलकुल बे देखी चीज़ पर हुक्म करना है। फिर अगर आदमी क़ाबिलिय्यते ताम्मह नहीं रखता और बराए ख़ुद कुछ कर बैठा अगर्चे इत्तेफ़ाक़ से ठीक भी उतरी, गुनाहगार होगा। जिस त़रह़ तफ़्सीरे क़ुरआन के बारे में इरशाद हुवा: مَنْ قَالَ فِی الْقُرْاٰنِ بِرَاْیِہٖ فَاَصَابَ فَقَدْ اَخْطَاَ जो क़ुरआन में अपनी राए से कहे और ठीक ही कहे, जब भी ख़त़ा की। (ترمذی،4/440،حدیث:2961)

यूंही ह़दीस शरीफ़ में फ़रमाया: مَنْ تَطَبَّبَ وَلَمْ یُعْلَمْ مِنْہُ طِبٌّ فَھُوَ ضَامِنٌ जो तिब करने बैठा और उस का त़बीब होना मालूम न हो उस पर तावान है। (مشکوٰۃ،1/641،حدیث:3504) यानी उस के इ़लाज से कोई बिगड़ जाएगा तो उस का ख़ून बहा उस की गर्दन पर होगा। अगर्चे किसी उस्तादे शफ़ीक़ ने तुम्हें मजाज़ व माज़ून कर दिया हो (यानी इ़लाज करने की इजाज़त दे दी हो) मगर मेरी राए में तुम हरगिज़ हरगिज़ हनूज़ मुस्तक़िल तन्हा (इ़लाज) गवारा न करो और जब तक मुमकिन हो मत़ब (Clinic) देखते और इस्लाहें लेते रहो। मैं नहीं केहता कि जुदागाना मुआ़लजा (Medical treatment) के लिए न बैठो, बैठो मगर अपनी राए को हरगिज़ राए न समझो और ज़रा ज़रा में असातिज़ा से इस्तेआ़नत (मदद) लो। (2) राए लेने में किसी छोटे बड़े से आ़र (शर्म) न करो। कोई इ़ल्म (में) कामिल नहीं होता, आदमी (ने) बाद फ़राग़े दर्स (तालीम ह़ासिल करने के बाद) जिस दिन अपने आप को आ़लिमे मुस्तक़िल जाना उसी दिन उस से बढ़ कर कोई जाहिल नहीं। (3) कभी मह़ज़ तजरिबे पर बे तशख़ीसे ह़ादिसए ख़ास (बीमारी को Diagnose किए बग़ैर) एतेमाद न करो। इख़्तेलाफ़े फ़स्ल, इख़्तेलाफ़े बलद, इख़्तेलाफ़े उ़म्र, इख़्तेलाफ़े मिज़ाज (मोसम, शेहर, उ़म्र, मिज़ाज के मुख़्तलिफ़ होने) वग़ैरहा बहुत बातों से इ़लाज मुख़्तलिफ़ हो जाता है। एक नुस्ख़ा एक मरीज़ के लिए एक फ़स्ल में सदहा बार मुजर्रब (सेंकड़ों बार तजरिबा) हो चुका, कुछ है ज़रूरी नहीं कि दूसरी फ़स्ल में भी काम दे बल्कि मुमकिन है कि ज़रर (नुक़्सान) पहुंचाए وَعَلٰی ھٰذَا اِخْتِلَافُ الْبِلَادِ وَالْاَعْمَارِ وَالْاَمْزِجَۃِ وَغَیْرِھَا (शेहरों, उ़म्रों और मिज़ाजों के मुख़्तलिफ़ होने का भी येही मुआ़मला है)। (4) मरज़ कभी मुरक्कब होता है। मुमकिन है कि एक नुस्ख़ा एक मरज़ के लिए तुम ने फ़ुसूले मुख़्तलिफ़ा, बिलादे मुतअ़द्दिदा व आमारे मुतफ़ाविता व अमज़िजा मुतबाइना (मुख़्तलिफ़ मोसमों, शेहरों, उ़म्रों और मिज़ाजों) में तजरिबा किया और हमेशा ठीक उतरा मगर वोह मरज़ साज़िज (सादा, Simple) था या किसी ऐसे मरीज़ (Patient) के साथ जिसे येह मुज़िर (नुक़्सान, देह Harmful) न था, अब जिस शख़्स को रहे हो उस में (सादा मरज़) ऐसे मरज़ से मुरक्कब हो जिस के ख़िलाफ़ ज़रर (नुक़्सान) देगा और वोह तजरिबा सद (100) सालह लग़्व (बेकार) हो जाएगा। (5) अभी इब्तेदाए अम्र (Practice का आग़ाज़) है। कभी बाज़ दलालात (अ़लामतों)

पर मदारे तशख़ीस (बीमारी की पेहचान की बुन्याद) न रखो मसलन सिर्फ़ नब्ज़ या मुजर्रद तफ़्सीरह (सिर्फ़ क़ारूरा) या महज़ इस्तिमा ए हाल (हालत सुनने) पर क़नाअ़त न करो, क्या मुमकिन नहीं कि नब्ज़ देख कर एक बात तुम्हारी समझ में आए और जब क़ारूरा (पेशाब की शीशी, *Urine Bottle*) देखो, राए (*Opinion*) बदल जाए, तो बिज़्ज़रूर हत्तल इमकान ब तर्फ़े तशख़ीस (मरज़ की पेहचान के एक से ज़ाइद ज़राएअ़) को अ़मल में लाओ और हर वक़्त अपनी इल्मो फ़ेहम व हौलो कुव्वत से बरी हो कर **अल्लाह** तआ़ला की जनाब में इल्तेजा करो कि इल्क़ा ए हक़ (सहीह बात की तरफ़ रेहनुमाई) फ़रमाए । ⑥ कभी कैसे ही हल्के से हल्के मरज़ को आसान न समझो और उस की तशख़ीस व मुआ़लजे में सहल अंगारी (सुस्ती) न करो,

दुश्मन ना तुवां हक़ीर व बे चारा शुमरुद

(दुश्मन को छोटा और बे बस नहीं समझना चाहिए)

हो सकता है कि तुम ने बादिउन्नज़र में (सरसरी नज़र से) सहल (आसान) समझ कर जोहदे ताम्म न किया (ख़ूब कोशिश न की) और वोह बाइसे ग़लती तशख़ीस हुवा जिस ने सहल को दुश्वार कर दिया या फ़िल वाक़ेअ़ (दर हक़ीक़त) उसी वक़्त एक मरज़ अ़सीर (मुश्किल) था और तुम ने क़िल्लते तेहक़ीक़ से आसान समझ लिया । क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि दिक़ (टीबी) जैसा दुश्वार मरज़ وَالْعِيَاذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی अव्वल (शुरूअ़ में) सहल मालूम होता है । ⑦ मरीज़ या उस के तीमारदार जिस क़दर हाल बयान करें कभी उस पर क़नाअ़त न करो, उन के बयान में बहुत बातें रेह जाती हैं जिन्हें वोह नुक़्सान नहीं समझते या उन के ख़याल इस तरफ़ नहीं जाते । मुमकिन है कि वोह सब बयान में आए (तो) सूरते वाक़िआ़ दिगर गूं (कुछ और) मालूम हो । मैं ने मसाइल में सदहा (सेंकड़ों मरतबा) आज़्माया है कि साइल ने तक़रीरन या तेहरीरन (ज़बानी या तेहरीरी तौर पर) जो कुछ बयान किया उस का हुक्म कुछ और था, जब तफ़्तीश कर के तमाम **मा लहू वमा अ़लैह** (तफ़्सीलात) उस से पूछे गए, अब हुक्म बदल गया । बहुत मवाक़ेअ़ पर हम लोगों (मुफ़्तियाने किराम) को रुख़्सत है कि मुजर्रद (सिर्फ़) बयाने साइल पर फ़तवा दे दे मगर तबीब (*Doctor*) को हरगिज़ इजाज़त नहीं कि बे तशख़ीसे कामिल (मरज़ को अच्छी तरह *Diagnose* किए बग़ैर) ज़बान खोले । ⑧ तमाम अतिब्बा (*Doctors*) का मामूल है اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰہ (चन्द एक के इलावा) कि नुस्ख़ा लिखा और हवाला किया, तरकीबे इस्तेमाल ज़बान से इरशाद नहीं होती । बहुत मरीज़ जुहला ए ज़माना (बे पढ़े लिखे) होते हैं कि आप का लिखा हुवा न पढ़ सकेंगे । तबीब साहब (*Doctor*) को एतेमाद येह है कि अ़त्तार (दवा बेचने वाला) बता देगा, अ़त्तार की वोह हालत है कि मिज़ाज नहीं मिलते और हुजूमे मरीज़ (यानी मरीज़ों के हुजूम) से उस बेचारे के खुद हवास गुम हैं । उस जल्दी में उन्हों ने आधी चहारुम (ना मुकम्मल) बात कही और दाम सीधे किए और रुख़्सत । बारहा देखा गया है कि ग़लत इस्तेमाल से मरीज़ को मज़र्रतें पहुंच गईं (नुक़्सान पहुंच गया), लेहाज़ा बहुत ज़रूरी है कि तमाम तरकीबे दवा व तरीक़ए इस्लाह व इस्तेमाल ख़ूब समझा कर समझ कर हर मरीज़ से बयान करे, खुसूसन जहां एहतेमाल हो कि फ़र्क़ आने से नुक़्सान पहुंच जाएगा । ⑨ अक्सर अतिब्बा ने कज खुल्क़ी व बद ज़बानी व ख़र दिमाग़ी व बे एतेनाई अपना शिआ़र (पेहचान) कर ली, गोया तिब्ब किसी मरज़े मुज़्मिन (पुरानी बीमारी) का नाम है जिस ने यूं बद मिज़ाज कर लिया । येह बात तबीब के लिए दीनो दुन्या में ज़हर है । दीन में तो ज़ाहिर है कि तकब्बुर व रुऊ़नत व तशद्दुद व खुशूनत (सख़्ती) किस दर्जा मज़्मूम है खुसूसन हाजत मन्द के साथ और दुन्या में यूं कि रुजूए ख़ल्क़ (लोगों की आमद) उन की तरफ़ कम होगी, वोही आएंगे जो सख़्त मजबूर हो जाएंगे, लेहाज़ा तबीब पर अहम वाजिबात से है कि नेक खुल्क़, शीरीं ज़बान, मुतवाज़ेअ़, हलीम, मेहरबान हो, जिस की मीठी बातें शरबते हयात का काम करें । तबीब की मेहरबानी व शीरीं ज़बानी मरीज़ का आधा मरज़ खो देती है और ख़्वाही न ख़्वाही दिल उस की तरफ़ झुकते हैं और नेक निय्यत से होता है तो खुदा भी राज़ी होता है जो ख़ास जालिबे दस्ते शिफ़ा है । ⑩ बहुत जाहिल अतिब्बा का अन्दाज़ है कि नब्ज़ देखते ही मरज़ का अ़सीरुल इलाज (मुश्किल इलाज वाला) होना बयान करने लगते हैं अगर्चे वाक़ेई में **सहलुत्तदारुक** (आसान इलाज वाला) हो । मतलब येह है कि अच्छा हो जाएगा तो हमारा शुक्र ज़्यादा अदा करेगा और शोहरा भी होगा कि ऐसे बिगड़े को तन्दुरुस्त किया हालांकि येह महज़ जहालत है, बल्कि अगर वाक़ेअ़ में मरज़ दुश्वार भी होता हम हरगिज़ उस की बू आने न पाए (मरीज़ को इस बात का पता न चलने पाए) कि येह सुन कर दर्दमन्द दिल टूट

जाता है और सदमा पा कर ज़ोफ़े तबीअत बाइसे ग़ल्बए मरज़ होता है, बल्कि हमेशा ब कुशादा पेशानी तस्कीन व तसल्ली की जाए कि कोई बात नहीं, اِنْ شَآءَاللہ تَعَالٰی अब आप अच्छे हुवे। (11) बाज़ अहमक़ ना कर्दाकार येह ज़ुल्म करते हैं कि दवा को ज़रीअए तशख़ीसे मरज़ बताते हैं यानी जो मरज़ अच्छी तरह ख़याल में न आया उन्हों ने रजमन बिलग़ैब (अन्दाज़े से) एक नुस्ख़ा लिख दिया कि अगर नफ़अ़ किया तो फ़बिहा (अच्छी बात) वरना कुछ हाल तो खुलेगा, येह हरामे क़तई है। इलाज बादे तशख़ीस होना चाहिए न कि तशख़ीस बादे इलाज।

इस क़िस्म की सदहा बातें हैं मगर इस क़लील को कसीर पर हम्ल करो और मैं اِنْ شَآءَاللہ تَعَالٰی वक़्तन फ़ वक़्तन तुम्हें मुत्तलअ़ करता रहूंगा। बहुत बातें ऐसी हैं जिन का इस वक़्त बयान ज़रूरी नहीं, जब ख़ुदा ने किया कि तुम्हारा मतब (Clinic) चल निकला और रुजूए ख़लाइक़ हुई उस वक़्त اِنْ شَآءَاللہ الْعَظِیْم बयान करूंगा। अगर तुम्हें येह मेरी तेहरीर मक़्बूल (हो) तो इसे बतौरे दस्तूरुल अमल अपने पास रखो और इस के ख़िलाफ़ कभी न चलो, اِنْ شَآءَاللہ تَعَالٰی बहुत नफ़अ़ पाओगे और अगर येह समझ कर येह तिब्ब से जाहिल है, इस फ़न में इस की बात पर क्या ऐतेमाद, तो बेशक येह ख़याल तुम्हारा बहुत सहीह है। इस तक़रीर पर मुनासिब है कि अपने असातिज़ा को दिखा लो और वोह पसन्द करें (तो) मामूल येह करो।

वस्सलामु ख़ैर ख़िताम फ़क़ीर अहमद रज़ा क़ादरी عُفِیَ عَنْہُ

4 जुमादल आख़िर, रोज़े जुम्आ 1306 हिजरी

(कुल्लियात मकातिबे रज़ा दुवुम, सफ़्हा 147)

ख़ुलासा : (1) इल्मे फ़िक़्ह की तरह इल्मे तिब्ब का मुआमला भी इन्तेहाई नाज़ुक और दुश्वार है। एहतियात इस में है कि इल्मे तिब्ब के हुसूल के बाद फ़ौरन इलाज मुआलजा शुरूअ़ करने के बजाए कुछ अर्सा किसी माहिर डॉक्टर की सोहबत में रेह कर इलाज की मश्क़ की जाए। (2) तबीब को चाहिए कि किसी बड़े या छोटे से मश्वरा करने में शर्म न करे और वक़्तन फ़ वक़्तन माहिर डॉक्टरों से मश्वरा करता रहे। अपने आप को मश्वरे से बे परवाह और फ़न का माहिर समझना, ना समझी की पेहली सीढ़ी है। (3,4) एक दवा बसा अवक़ात एक मरीज़ के लिए फ़ाइदे मन्द और दूसरे के लिए नुक़्सान देह होती है लेहाज़ा बीमारी की पेहचान के बग़ैर हरगिज़ दवा का इस्तेमाल न करवाया जाए। यूंही बसा अवक़ात एक से ज़ाइद अमराज़ जम्अ़ हो जाते हैं, इस के एतेबार से भी दवा में फ़र्क़ होगा। उम्र, मिज़ाज और आबोहवा वग़ैरा के मुख़्तलिफ़ होने से भी इलाज मुख़्तलिफ़ हो सकता है। (5) मरज़ की पेहचान के लिए एक ज़रीए पर इन्हेसार न किया जाए बल्कि मुख़्तलिफ़ ज़राएअ़ से उस की तस्दीक़ की जाए नीज़ अपनी महारत पर भरोसा करने के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ की जाए। (6) किसी बीमारी को मामूली समझ कर उस के इलाज में कोताही न की जाए, टीबी जैसी ख़तरनाक बीमारी भी इब्तेदा में मामूली लगती है। (7) मरीज़ या उस के साथ आने वाले फ़र्द के बयान को काफ़ी न समझा जाए बल्कि तमाम ज़रूरी मालूमात हासिल कर के फिर इलाज शुरूअ़ किया जाए। (8) कौन सी दवा कितनी और कब इस्तेमाल करनी है नीज़ खाने पीने वग़ैरा में क्या एहतियातें करनी हैं इस के बारे में मरीज़ या उस के तीमारदार को अच्छी तरह समझाया जाए। मेडीकल स्टोर वाले के भरोसे पर या दीगर मरीज़ों को देखने की जल्दी में इस मुआमले से पेहलू तही न की जाए। (9) मरीज़ों के साथ बे एतेनाई और बद अख़्लाक़ी से पेश आना दीन के साथ साथ दुन्या में भी नुक़्सान देह है कि बद अख़्लाक़ आदमी से लोग दूर भागते हैं। रिज़ा ए इलाही पाने के लिए खुश अख़्लाक़ी को मामूल बनाया जाए तो इस की बरकत से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ लोग ज़्यादा रुजूअ़ करेंगे और उन्हें शिफ़ा भी हासिल होगी। (10) बीमारी अगर्चे ख़तरनाक और जान लेवा हो लेकिन हत्तल इमकान मरीज़ को तसल्ली और शिफ़ा की उम्मीद दिलाई जाए, उस की ढारस बन्धाई जाए। अपनी शोहरत (Publicity) की ख़ातिर मामूली बीमारी को भी बढ़ा चढ़ा कर पेश करना कि मरीज़ के ठीक होने पर मेरा नाम होगा शरई और अख़्लाक़ी एतेबार से इन्तेहाई ना मुनासिब अमल है। (11) बीमारी की तशख़ीस (Diagnose) किए बग़ैर अन्दाज़े से मरीज़ को दवा देना कि या तो ठीक हो जाएगा या फिर उस की बीमारी ज़ाहिर हो जाएगी, नाजाइज़ अमल है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आला हज़रत पर रेहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़ेरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) बाज़ मक़ामात पर मामूली तरमीम की गई है।

नए लिखारी (जुनियर कोलम निगार)

नए लिखने वालों के इन्ओ़ाम याफ़्ता मज़ामीन

(New Writers)

औ़रतों में पाई जाने वाली पांच बद शुगूनियां

शेहबाज़ अह़मद मिस्बाह़ी (जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने ताजुश्शरीआ़, बनारस)

ताजदारे रिसालत, मुस्त़फ़ा जाने रेह़मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बद शुगूनी कोई चीज़ नहीं, बेहतरीन चीज़ फ़ाल है। लोगों ने अ़र्ज़ की : फ़ाल क्या चीज़ है ? इरशाद फ़रमाया : वोह अच्छी बात है जिसे तुम में से कोई सुने। (بخاری،4/36،حدیث:5755)

बद शुगूनी की तारीफ़ और इस का हुक्म : शुगून का माना है फ़ाल लेना, यानी किसी चीज़, शख़्स, अ़मल आवाज़ या वक़्त को अपने ह़क़ में अच्छा या बुरा समझना (इसी वज्ह से बुरा फ़ाल लेने को बद शुगूनी केहते हैं)।

(बद शुगूनी, सफ़ह़ा 10)

नेक फ़ाल लेना सुन्नत है, इस में अल्लाह पाक से उम्मीद है और बद फ़ाली लेना ममनूअ़ है कि इस में रब से ना उम्मीदी है। उम्मीद अच्छी है, ना उम्मीदी बुरी।

(مراٰۃ المناجیح،6/255)

मर्दों की ब निस्बत औ़रतें ज़्यादा बद शुगूनी लेती हैं, हम इन की पांच क़िस्म की बद शुगूनी का तज़्केरा करते हैं :

बहुत सी औ़रतें सूरज ग्रहन से बद शुगूनी लेती हैं। उन का ख़याल है कि इस वक़्त ह़ामिला औ़रत छुरी से सब्ज़ी वग़ैरा कोई चीज़ काटेगी तो जो बच्चा पैदा होगा उस का हाथ या पाउं कटा होगा, इसी त़रह़ जब तक ग्रहन ख़त्म न हो उन्हें ज़मीन या बिस्तर पर बैठने नहीं दिया जाता है, उन्हें चूल्हे से दूर कर दिया जाता है कि बच्चे पर बुरा असर पड़ेगा। जबकि इन सारी बातों की कोई ह़क़ीक़त नहीं है। इस्लाम ने हमें सूरज व चांद के ग्रहन के वक़्त नमाज़े कुसूफ़ व ख़ुसूफ़ पढ़ने की तालीम दी है, इस के इ़लावा किसी भी तवहहुम परस्ती, मुस्बत या मन्फ़ी असरात मुरत्तब होने की नफ़ी की है।

बाज़ औ़रतें रात को बालों में कन्घी चोटी करने और आईना देखने को बुरा समझती हैं कि इस से चेहरा दाग़दार और बे रौनक़ हो जाता है।

आला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा क़ादरी मोह़द्दिसे बरेल्वी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : रात को आईना देखने की कोई मुमानअ़त नहीं, बाज़ अ़वाम का ख़याल है कि इस से मुंह पर झाइयां पड़ती हैं और इस का भी कोई सबूत न शरअ़न है न त़बअ़न न तजरिबतन। (फ़तावा रज़विया, 23/490)

शादी के बाद नई नवेली दुल्हन के घर आने पर ख़ानदान में किसी फ़र्द का इन्तेक़ाल हो जाए तो बाज़ औ़रतें केहती हैं कि फ़ुलां की बहू बहुत मन्ह़ूस है, उस के आते ही फ़ुलां का इन्तेक़ाल हो गया। इसी त़रह़ दुल्हन के हाथों से छूट कर कोई चीज़ टूट फूट जाए तो मन्ह़ूस समझा जाता है। इस में एक मुसलमान का दिल दुखाना है, जो नाजाइज़ो ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

ज़मानए जाहिलियत की त़रह़ आज भी बाज़ अ़लाक़ों में वेहमी तसव्वुरात की शिकार औ़रतें माहे सफ़र की इब्तेदाई तेरह तारीख़ों को (जिन्हें तेरह तेज़ी कहा जाता है) बहुत मन्ह़ूस तसव्वुर करती हैं। इस माह में अपनी बच्चियों की शादी नहीं होने देतीं, अगर तै हो जाए तो तुड़वा देती हैं, अगर हो भी जाए तो रुख़्सती केन्सल कर देती हैं। येह सब जहालत है।

कुछ अ़लाक़ों में औ़रतें ह़ामिला ख़ातून को मैयत के क़रीब जाने से मन्अ़ करती हैं कि इस औ़रत पर या इस के पैदा होने वाले बच्चे पर इस मैयत का साया हो सकता है। येह ग़लत़ है, इस लिए कि हर इन्सान को वोही पहुंचता है जो उस की तक़दीर में है।

अल्लाह करीम हमें किसी चीज़ को मन्ह़ूस समझने और उस से बद शुगूनी लेने से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

ख़त्मे नबुव्वत अह़ादीस की रौशनी में

मुह़म्मद नाज़िम रज़ा अ़त्तारी (दरजए ख़ामेसा, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त्तार, नेपाल गंज, नेपाल)

मस्अलए ख़त्मे नबुव्वत अ़क़ाइद के बाब में इन्तेहाई हुस्सास और बुन्यादी अहमियत का ह़ामिल है। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ातमुन्नबिय्यीन होना क़ुरआनो ह़दीस की सेंकड़ों नुसूस से साबित है और इस का मुन्किर काफ़िर है।

ख़त्मे नबुव्वत के बारे में 8 अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा हों :

اِنِّیْ عَبْدُ اللہ وَخَاتَمُ النَّبِیِّیْنَ यानी मैं **अल्लाह** का बन्दा हूं और नबियों का सिलसिला ख़त्म करने वाला हूं। (مسند احمد، 6/84،حدیث:17151)

اَنَا مُحَمَّدٌ، النَّبِیُّ الْاُمِّیُّ، اَنَا مُحَمَّدٌ، النَّبِیُّ الْاُمِّیُّ، ثلاثًا، وَلَا نَبِیَّ بَعْدِی मैं मुह़म्मद हूं, उम्मी नबी हूं तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया, और मेरे बाद कोई नबी नहीं। (مسند احمد، 2/665،حدیث:7000)

اَنَا خَاتَمُ النَّبِیِّیْنَ وَلَا فَخْرَ यानी मैं ख़ातमुन्नबिय्यीन हूं और येह बत़ौरे फ़ख़्र नहीं केहता। (معجم اوسط، 1/63،حدیث:170)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरी और मुझ से पेहले अम्बिया की मिसाल ऐसी है जैसे किसी ने घर तामीर किया और उसे ख़ूब आरास्ता किया लेकिन एक गोशे में एक ईंट की जगह छोड़ दी और लोग उस को देख कर ख़ुश होने लगे और केहने लगे : هَلَّا وُضِعَتْ هٰذِهِ اللَّبِنَةُ؟ येह ईंट भी क्यूं न रख दी गई ? फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं ही वोह ईंट हूं और मैं आख़िर नबी हूं। (بخاری، 2/484،حدیث:3535)

اِنَّ الرِّسَالَةَ وَالنُّبُوَّةَ قَدِ انْقَطَعَتْ فَلَا رَسُولَ بَعْدِی وَلَا نَبِیَّ बेशक रिसालत और नबुव्वत मुन्क़तेअ़ हो चुकी है, पस मेरे बाद न कोई रसूल होगा और न कोई नबी। (ترمذی،4/121،حدیث:2279)

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं **अल्लाह** पाक के नज़्दीक ख़ातमुन्नबिय्यीन लिखा हुवा था ह़ालांकि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का ख़मीर तैयार हो रहा था। (شرح السنة للبغوی،7/13،حدیث:3520)

ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी उम्मत में तीस झूटे पैदा होंगे और हर एक अपने नबी होने का दावा करेगा ह़ालांकि मैं ही आख़री नबी हूं और मेरे बाद कोई नबी नहीं। (سنن ترمذی، 4/93،حدیث:2226)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मस्जिद में एक नमाज़ दूसरी मसाजिद में एक हज़ार नमाज़ों से अफ़्ज़ल है सिवा ए मस्जिदे ह़राम के। बिला शुबा रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम अम्बिया में से आख़री हैं, और आप की मस्जिद (भी किसी नबी की तामीर कर्दा) आख़री मस्जिद है। (مسلم،ص553،حدیث:3376)

ह़ज़रते शुऐब علیہ السلام की क़ौम की ना फ़रमानियां

मुह़म्मद चांद मुस्तफ़ाई (दरजए ऊला, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त्तार, नेपाल गंज, नेपाल)

अल्लाह पाक ने ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام को मदयन शेहर की त़रफ़ भेजा तो आप ने अपनी क़ौम से इरशाद फ़रमाया :

﴿یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَیِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** की इबादत करो उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से रौशन दलील आई। (پ8، الاعراف: 85)

यानी मैं वाज़ेह़ दलील ले कर आया हूं जिस से मेरी तालीमात की सदाक़त साबित होती है और इस बात का सुबूत मिलता है कि **अल्लाह** पाक ने मुझे नबी बना कर भेजा है मगर क़ौम न मानी और त़रह़ त़रह़ की ख़राबियों में लगी रही। उन ख़राबियों में से कुछ यहां बयान की जाती हैं ताकि हम भी उन ख़राबियों से बचें : 1 ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम नाप तोल में डन्डी मारती थी 2 आपस में धोका देही करती थी 3 खाने पीने की चीज़ों में मिलावट करती थी, माले तिजारत में फ़रेब उन के लिए आ़म बात थी 4 आपस में सूद के लेन देन का रस्मो रवाज क़ाइम कर चुकी थी और इस मुआ़मले में वोह ह़द से बढ़ चुके थे और **अल्लाह** पाक ह़द से तजावुज़ करने वालों को पसन्द नहीं करता। ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम ने कहा :

﴿یٰشُعَیْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا یَعْبُدُ اٰبَآؤُنَاۤ اَوْ
اَنْ نَّفْعَلَ فِیْۤ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُاؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِیْمُ الرَّشِیْدُ(۸۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ शुऐब क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें येह हुक्म देती है कि हम अपने बाप दादा के ख़ुदाओं को छोड़ दें या अपने माल में जो चाहें न करें हां जी तुम्हीं बड़े अ़क़्ल मन्द नेक चलन हो। (پ12، هود: 87) तब ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा :

﴿یٰقَوْمِ اَرَءَیْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَ رَزَقَنِیْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًاؕ
وَ مَاۤ اُرِیْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَاۤ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُؕ اِنْ اُرِیْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُؕ
وَ مَا تَوْفِیْقِیْۤ اِلَّا بِاللّٰهِؕ عَلَیْهِ تَوَكَّلْتُ وَ اِلَیْهِ اُنِیْبُ(۸۸)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरी क़ौम भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की त़रफ़ से एक रौशन दलील पर होऊं और उस ने मुझे अपने पास से अच्छी रोज़ी दी और मैं नहीं चाहता हूं कि जिस बात से तुम्हें मन्अ़ करता हूं आप उस का ख़िलाफ़ करने लगूं मैं तो जहां तक बने संवारना ही चाहता हूं और मेरी तौफ़ीक़ **अल्लाह** ही की त़रफ़ से है मैं ने उसी पर भरोसा किया और उसी की त़रफ़ रुजूअ़ होता हूं। (پ12، هود: 88) और फ़रमाया :

﴿وَ یٰقَوْمِ لَا یَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِیْۤ اَنْ یُّصِیْبَكُمْ مِّثْلُ مَاۤ اَصَابَ قَوْمَ
نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍؕ وَ مَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِیْدٍ(۸۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरी क़ौम तुम्हें मेरी ज़िद येह न कमवा दे (बुरा काम करा दे) कि तुम पर पड़े जो पड़ा था नूह की क़ौम या हूद की क़ौम या सालेह़ की क़ौम पर लूत़ की क़ौम तो कुछ तुम से दूर नहीं। (پ12، هود: 89)

ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام की क़ौम ने कहा :

يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَ لَوْ لَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ٘ وَ مَاۤ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿۹۱﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ शुऐ़ब हमारी समझ में नहीं आतीं तुम्हारी बहुत सी बातें और बेशक हम तुम्हें अपने में कमज़ोर देखते हैं और अगर तुम्हारा कुम्बा न होता तो हम ने तुम्हें पथराव कर दिया होता और कुछ हमारी निगाह में तुम्हें इ़ज़्ज़त नहीं। (پ12، هود: 91)

इस मज़्मून से ह़ासिल होने वाले निकात :

लोगों को धोका देना, चीज़ों में मिलावट और नाप तोल में कमी करना **अल्लाह** पाक के नज़्दीक सख़्त ना पसन्दीदा काम हैं।

इस्लाम अ़द्लो इन्साफ़ और ईमानदारी की तल्क़ीन करता है, जो लोग दूसरों को धोका दे कर सामाने दुन्या जम्अ़ करते हैं उन्हें सख़्त वई़द सुनाई गई है।

नाप तोल में कमी करने वालों के लिए हलाकत है कि जब लोगों से लेते हैं नाप कर लेते हैं और जब किसी को देना हो तो कमी कर देते हैं।

अल्लाह पाक हमें इन बुराइयों से दूर रखे।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तेह़रीरी मुक़ाबले में मज़्मून भेजने वालों के नाम

मज़्मून भेजने वाले असातिज़ा ए किराम : (1) शेहबाज़ अह़मद मिस्बाह़ी (जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने ताजुश्शरीआ़, पड़ाव, बनारस) (2) अ़ब्दुल अ़लीम रज़वी मिस्बाह़ी (जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने इमाम शाफ़ेई, मेंगलोर)

मज़्मून भेजने वाले त़लबा ए किराम : (1) मुह़म्मद नाज़िम रज़ा अ़त्तारी (दरजए ख़ामेसा, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त्तार, नेपाल गंज, नेपाल) (2) मुह़म्मद इमरान रज़ा अ़त्तारी (दरजए दौरतुल ह़दीस, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त्तार, नेपाल गंज, नेपाल) (3) मुह़म्मद इस्लाम क़ादरी (दरजए सालिसा, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने रज़ा, बरैली शरीफ़) (4) मुह़म्मद उवैस अ़त्तारी (दरजए राबेआ़, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने रज़ा, बरैली शरीफ़) (5) मुह़म्मद क़ासिम अ़त्तारी (दरजए राबेआ़, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त्तार, नेपाल गंज, नेपाल) (6) मुह़म्मद अश्फ़ाक़ अ़त्तारी (दरजए सालेसा, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त्तार, नेपाल) (7) अलमास नूरी अ़त्तारी (दरजए सानिया, नेपाल गंज, नेपाल) (8) मुह़म्मद चांद मुस्त़फ़ाई (दरजए ऊला, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त्तार, नेपाल गंज, नेपाल) (9) मुह़म्मद इरशाद अ़त्तारी (जामेअ़तुल मदीना, फ़ैज़ाने अ़त्तार, नेपाल गंज, नेपाल) (10) मुह़म्मद क़मरुज़्ज़मां (दरजए राबेआ़, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त्तार, नेपाल गंज, नेपाल)।

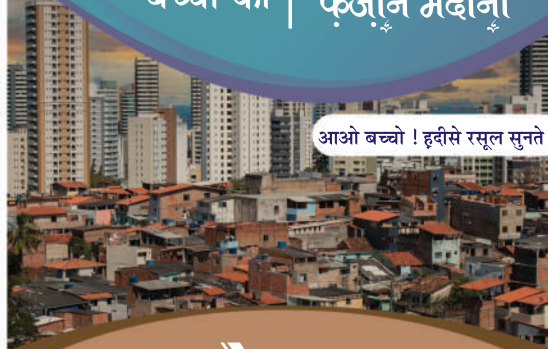

आओ बच्चो ! हदीसे रसूल सुनते हैं

सब्रो शुक्र

मौलाना मुहम्मद जावेद अ़त्तारी मदनी

अल्लाह पाक के आख़री नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اُنْظُرُوْا اِلٰى مَنْ هُوَ اَسْفَلَ مِنْكُمْ यानी (दुन्यावी एतेबार से) अपने से कम मर्तबा लोगों को देखो। (مسلم،ص1211،حدیث:7430)

प्यारे बच्चो ! दुन्या में हर त़रह़ के लोग पाए जाते हैं, बीमार और तन्दुरुस्त, ख़ुशह़ाल और तंगदस्त, अमीर और ग़रीब, येह सब अल्लाह पाक की तक़्सीम कारी है जिस को जैसे चाहे रखे।

एक मरतबा अल्लाह के नेक बन्दे शैख़ सअ़दी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास पेहनने के लिए जूते न थे तो थोड़ा ग़मज़दा हो गए। अल्लाह पाक की क़ुदरत कि उसी वक़्त उन की नज़र ऐसे शख़्स पर पड़ी जिस के दोनों पाउं ही न थे। येह देख कर उन्हों ने अल्लाह पाक का शुक्र अदा किया और जूते न होने पर सब्र किया। (ह़िर्स, स. 178 माख़ूज़न)

अच्छे बच्चो ! किसी के पास अच्छे कपड़े, पसन्दीदा खिलोने या कोई खाने पीने की चीज़ देख कर मायूस होने के बजाए हमें येह देखना चाहिए कि ऐसे बच्चे भी हैं जिन के पास खाने के लिए पैसे नहीं हैं, पेहनने के लिए कपड़े नहीं हैं, हमारे अब्बू ने जो हमें ले कर दिया है इस पर अल्लाह पाक का शुक्र अदा करना चाहिए, आप को पता है कि शुक्र करने से हमारा रब ख़ुश होता और मज़ीद नेमतें भी अ़त़ा फ़रमाता है।

अल्लाह पाक हम सब को सब्रो शुक्र के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बच्चों के लिए अमीरे एहले सुन्नत की नसीह़त

मौलाना उवैस यामीन अ़त्तारी मदनी

जूते कैसे पेहनें ?

अच्छे बच्चो ! अमीरे एहले सुन्नत अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास क़ादरी साह़ब फ़रमाते हैं :

1. जूते पेहनने से पेहले झाड़ लीजिए ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए।
2. पेहले सीधा जूता पेहनिए फिर उल्टा और उतारते वक़्त पेहले उल्टा जूता उतारिए फिर सीधा।

(रिसाला : 101 मदनी फूल, स. 20)

प्यारे बच्चो ! पता चला कि जूते पेहनने से पेहले झाड़ लेने चाहिएं ताकि उन में कोई नुक़्सान पहुंचाने वाला कीड़ा वग़ैरा हो तो निकल जाए वरना तक्लीफ़ पहुंच सकती है और येह भी पता चला कि जब भी जूते या चप्पल पेहनें तो पेहले सीधे पाउं वाली चप्पल या जूता पेहनिए और उतारते वक़्त पेहले उल्टे पाउं वाली चप्पल या जूता उतारिए। अल्लाह पाक के आख़री नबी मक्की मदनी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम में से कोई जूते पेहने तो दाईं (यानी सीधी) जानिब से इब्तेदा करनी चाहिए और जब उतारे तो बाईं (यानी उल्टी) जानिब से इब्तेदा करनी चाहिए ताकि दायां (यानी सीधा) पाउं पेहनने में अव्वल और उतारने में आख़री रहे। (بخاری،4/65،حدیث:5855) बाज़ बच्चे जल्दी जल्दी में इन बातों का ख़याल नहीं रखते, ऐसा नहीं करना चाहिए बल्कि जूते पेहनने के आदाब पर अ़मल करना चाहिए। (मज़ीद आदाब जानने के लिए मक्तबतुल मदीना का रिसाला "101 मदनी फूल" पढ़िए)

हाथी सब का साथी

मौलाना अबू मुआ़विया अ़त्तारी मदनी

मेरा मोटा दोस्त, दुब्ला क्यूं होता जा रहा है, कोई परेशानी है ? छोटे बन्दर ने दरख़्त से उतरते हुवे कहा ।

हां दोस्त ! परेशान हूं, समझ नहीं आ रहा क्या करूं, मोटे हाथी ने अमरूद के दरख़्त के नीचे बैठते हुवे जवाब दिया ।

छोटा बन्दर : मुझे बताओ ! क्या मस्अला है, मैं इस का ह़ल निकालूंगा आख़िर तुम्हारा दोस्त हूं, तुम्हारा परेशान बैठना मुझे गवारा नहीं ।

मोटा हाथी : दोस्त ! मैं चाहता हूं कि अपनी त़ाक़त को किसी इस्तेमाल में लाऊं, अपना वक़्त ऐसे कामों में ख़र्च करूं कि जिस से दूसरों को आराम पहुंचे, उन की तक्लीफ़ें कम हों, मुश्किलें ह़ल हों, लेकिन समझ नहीं आ रहा येह सब कैसे करूं और कौन सा काम करूं ?

छोटा बन्दर : शानदार मेरे दोस्त शानदार ! बहुत अच्छा सोचा है तुम ने, दूसरों की मदद करना और उन के काम आना उ़म्दा काम है । मेरे पास इस मस्अले का ह़ल तो नहीं है लेकिन ! ह़कीम कबूतर के पास ज़रूर इस का ह़ल होगा, कहो तो ! उस के पास ले चलूं ।

मोटा हाथी : ज़रूर क्यूं नहीं, चलो अभी चलते हैं । इस के बाद दोनों ने ह़कीम कबूतर के घर की त़रफ़ चलना शुरूअ़ कर दिया ।

कुछ देर बाद येह दोनों ह़कीम कबूतर के पास थे, ह़ाल व अह़वाल के बाद छोटे बन्दर ने कहा : जनाब ! येह मेरा दोस्त परेशान है और इस की परेशानी देख कर मैं भी परेशान हो गया हूं, बड़ी उम्मीद के साथ आप के पास आए हैं, फिर छोटे बन्दर ने ह़कीम कबूतर को सारी बात बता दी ।

ह़कीम ने तसल्ली देते हुवे कहा : परेशान न हो, मेरे पास इस का ह़ल है । जैसा कि आप को भी पता है कि जंगल में हर त़रह़ के जानवर रेहते हैं, कमज़ोर त़ाक़तवर, छोटे बड़े, दुब्ले पतले मोटे, किसी को खाने की ज़रूरत तो किसी को पानी की, किसी को ऊपर चढ़ना है तो किसी ने नीचे उतरना है, मत़लब कि तुम उन सब के काम आ सकते हो, बस तुम्हें येह करना होगा कि जंगल के दरमियान वाली जगह में अपना घर बनाओ और उस के बाहर इस त़रह़ की तख़्ती लगा लो :

"हर वक़्त मदद के लिए तैयार !! मोटा हाथी सब का साथी"

जिस को ज़रूरत होगी वोह आप के पास आ जाएगा और आप उस की मदद कर देना, इस त़रह़ दूसरों का काम भी हो जाएगा और आप की ख़्वाहिश भी पूरी हो जाएगी ।

बहुत ख़ूब, येह बेहतरीन त़रीक़ा है, दोनों दोस्तों ने ह़कीम कबूतर का शुक्रिया अदा किया और वहां से तख़्ती ले कर बताई हुई लोकेशन की त़रफ़ रवाना हो गए ।

प्यारे बच्चो ! फ़लाह़ी काम करना, अल्लाह पाक की मख़्लूक़ की ख़िदमत करना, उन की परेशानी के ह़ल के लिए ख़ुद को मसरूफ़ रखना बहुत अच्छा काम है, हमें इस में ज़रूर ह़िस्सा लेना चाहिए लेकिन मख़्लूक़ की ख़िदमत की वज्ह से ख़ालिक़ की बन्दगी को नहीं भूलना चाहिए, उस के अह़काम पर अ़मल करना चाहिए और उस की बातों को मानना चाहिए ।

चांद ग्रहन

मौलाना मुहम्मद अरशद अस्लम अ़त्तारी मदनी

इस बार भी सब बच्चे डिनर करने के बाद दादाजान के कमरे में चले गए। ख़ुबेब ने कहा : दादाजान ! मैं ने सुना है कि आज रात चांद ग्रहन होगा

सुहेब ने कहा : दादाजान ! येह चांद ग्रहन क्यूं होता है ? दादाजान ने कहा : सूरज और चांद ग्रहन **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से होता है, जब भी ऐसा हो तो हमें तौबा करनी चाहिए। हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी ऐसे मौक़ेअ़ पर इस्तिग़्फ़ार किया करते थे। येह तफ़रीह़ या एन्जोय का मौक़अ़ नहीं है।

ख़ुबेब ने कहा : दादाजान ! हमें चांद के मुतअ़ल्लिक़ कुछ बताइए। चाय थोड़ी ठन्डी हो चुकी थी, दादाजान ने जल्दी से चाय पी और कप साईड टेबल पर रख दिया।

दादाजान ने कहा : इस्लामी तारीख़ चांद से तब्दील होती है और चांद ही से महीने और साल बदलते हैं। इस के इलावा हमारी कुछ इ़बादतों का तअ़ल्लुक़ भी चांद से ही है। जैसे : रमज़ान के रोज़े, ई़द और बक़्र ई़द, क़ुरबानी व ह़ज वग़ैरा।

सुहेब फ़ौरन बोला : हां ! अब मैं समझ गया कि सब लोग रमज़ान और ई़द का चांद शौक़ से क्यूं देखते हैं। दादाजान ने कहा : हां भई ! तुम ठीक बोल रहे हो।

ख़ुबेब ने कहा : दादाजान ! क्या हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चांद से मुतअ़ल्लिक़ कोई मोजिज़ा है ? बिल्कुल है बेटा ! सुहेब ने ख़ुशी से बे क़ाबू होते हुवे कहा : दादाजान ! बस ! जल्दी से वाक़ेआ़ सुनाइए।

दादाजान ने थोड़ा सा सोचने के बाद कहा : अच्छा ! तो फिर सुनो :

जब हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लोगों को दीन की दावत दी तो आहिस्ता आहिस्ता लोग मुसलमान होने लग गए, जिस की वज्ह से काफ़िर बहुत परेशान हो गए। काफ़िरों ने एक चाल चली कि किस त़रह़ लोगों को आप से दूर रखा जाए इस के लिए उन्हों ने आप पर त़रह़ त़रह़ के इल्ज़ाम लगाए जैसे : कोई आप को जादूगर केहता तो कोई काहिन केहता।

एक रात कुछ काफ़िर हमारे नबी के पास आए। उन में से एक ने कहा : हमें कोई मोजिज़ा दिखाओ। आप ने कहा : तुम कौन सा मोजिज़ा देखना चाहते हो ? उस ने सोचा कि आज ऐसा मोजिज़ा बोलूं

जो बहुत ही मुश्किल हो। फिर बोला : आप हमें चांद के दो टुकड़े कर के दिखाइए।

दादाजान ने बच्चों की त़रफ़ देखा तो वोह हैरत से देख रहे थे। खुबेब ने कहा : “दादाजान क्या चांद दो टुकड़े हो सकता है ?” हमारे प्यारे नबी चाहें तो सब कुछ हो सकता है। दादाजान ने कहा : आगे तो सुनो फिर क्या हुवा :

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जैसे ही चांद को इशारा किया तो चांद दो टुकड़े हो गया। दादाजान ने कहा : आस्मान पर अब एक नहीं दो चांद नज़र आ रहे थे, आधे आधे दो चांद। सुहेब ने कहा : फिर आगे क्या हुवा दादाजान ?

काफ़िरों ने कहा : अब चांद को दोबारा जोड़ दो। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चांद को फिर इशारा किया तो वोह बिलकुल पेहले जैसा हो गया। उन काफ़िरों में से एक तो फ़ौरन कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया। (روح البیان، 9/263)

दादाजान एक लम्हे की ख़ामोशी के बाद केहने लगे : बच्चो ! एक और दिलचस्प वाक़ेआ सुनाऊं ? सब ने एक साथ कहा : जी दादाजान ! आज तो हमें बहुत मज़ा आ रहा है।

दादाजान ने कहा : येह वाक़िआ हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बचपन का है, मत़लब जब आप झूले में सोते होंगे, उस में खेलते होंगे तब की बात।

आप के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : या रसूलल्लाह ! मैं आप को झूले में चांद से बातें करते हुवे देखता था। आप उंगली से चांद को जिस त़रफ़ इशारा करते चांद उस त़रफ़ झुक जाता। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं चांद से और वोह मुझ से बातें करता था। वोह मुझे रोने से बेहलाता था और जब चांद सजदा करता तो मैं उस की तस्बीह़ की आवाज़ सुना करता था। (خصائص الکبریٰ، 1/91)

दादाजान ने बच्चों से कहा : शायद ! चांद को ग्रहन लग गया होगा आओ ! हम नमाज़ पढ़ते हैं और तौबा भी करते हैं।

क्या आप जानते हैं ?

मौलाना अबू मुह़म्मद अ़त्तारी मदनी

सवाल : क़ौमे समूद की त़रफ़ किस नबी को भेजा गया था ?

जवाब : ह़ज़रते सैयदना सालेह़ عَلَیْهِ السَّلَام। (پ19، النمل:45)

सवाल : मस्जिदे नबवी की पेहली तामीर के वक़्त कितने दरवाज़े बनाए गए थे ?

जवाब : तीन दरवाज़े। (طبقات ابن سعد، 1/185)

सवाल : वोह कौन से नबी थे जिन का हाथ मोजिज़े के त़ौर पर चमकने लगता था ?

जवाब : ह़ज़रते सैयदना मूसा عَلَیْهِ السَّلَام। (پ16، طٰهٰ:22)

सवाल : दोज़ख़ के कितने दरवाज़े हैं ?

जवाब : सात। (پ14، الحجر:44)

सवाल : अल्लाह करीम ने आस्मानों को किस चीज़ से बनाया ?

जवाब : धूएं से। (پ24، حٰمٓ السجدۃ:11)

सवाल : अल्लाह पाक ने ज़मीनो आस्मान और जो कुछ इन में है कितने दिन में बनाए ?

जवाब : छे दिन में। (پ19، الفرقان:59)

अफ़सोस नाक ह़ादसा

मौलाना बिलाल हुसैन अत्तारी मदनी

एक आ़लिमे दीन इमाम साह़ब का बयान है कि कुछ अ़र्से पेहले हमारे अ़लाक़े में एक अफ़्सोस नाक वाक़िआ़ पेश आया :

कटी हुई एक पतंग हवा में हिचकोले खाती हुई एक (Transformer) में जा फंसी, अफ़्सोस कि येह सारा मन्ज़र (तक़रीबन एक 8 सालह) बच्चे ने देख लिया, वोह पतंग लूटने के लिए उस (Transformer) से मुत्तसिल एक इ़मारत की छत पर जा पहुंचा मगर ट्रान्सफ़र्मर से पतंग उतारना उस के लिए इतना आसान न था, वोह बच्चा पतंग उतारने की कोई तदबीर (चाल) सोच ही रहा था कि इतने में उस की नज़र लोहे के एक वाइपर पर पड़ी जिस की मदद से उस बच्चे ने ट्रान्सफ़र्मर में फंसी पतंग को उतारना चाहा । बच्चे ने जैसे ही वाइपर पतंग की त़रफ़ बढ़ाया तो वोह ट्रान्सफ़र्मर की नंगी तारों से जा टकराया, बिजली ने ज़ोरदार झटके से बच्चे को ज़मीन पर दे मारा । बच्चे का एक हाथ इस क़दर झुलस चुका था कि मजबूरन काटना पड़ा । यूं एक ज़रा सी नादानी ने नन्हे बच्चे को हमेशा के लिए उस के हाथ से मेह़रूम कर दिया ।

मोह़तरम वालिदैन ! तजस्सुस, कुछ नया करना और हर दिलचस्प चीज़ तक पहुंचने की ज़िद बच्चों की फ़ित़रत का ह़िस्सा हुवा करती है । बच्चों को इस बात का कोई शुऊ़र नहीं होता कि क्या ग़लत़ है क्या सह़ीह़ और क्या नुक़्सान देह है क्या फ़ाइदेमन्द । बच्चा जब तक समझदार न हो जाए उसे ह़ादेसात का इमकान ज़्यादा लाह़िक़ रेहता है और वोह आप की निगेहदाश्त (Observation) का मोह़ताज रेहता है । बच्चों को किसी भी मुमकिना ह़ादिसे से बचाने के लिए आगे लिखी गई ह़िफ़ाज़ती तदाबीर पर अ़मल करना फ़ाइदेमन्द होगा ।

✲ बहुत छोटे बच्चों पर सोते, जागते, दूध पीते वक़्त नज़र रखना चाहिए, जब बच्चा करवट बदलने के क़ाबिल हो जाए तो उस पर और ज़्यादा नज़र रखिए क्यूंकि वोह किसी भी वक़्त बिस्तर से गिर सकता है या लुढ़क कर किसी चीज़ से टकरा सकता है ✲ जब बच्चा घुटनों के बल चलने लग जाए तो उस की पहुंच में कोई भी ऐसी चीज़ न रेहने दें जिस से उसे नुक़्सान पहुंचने का इमकान हो ✲ सीढ़ियों के साथ जो ग्रिल होती है उस की सलाखों का दरमियानी फ़ासिला (Gap) ज़्यादा न हो वरना बच्चा सीढ़ियों से गिर सकता है या अपना सर (Head) उस में फंसा सकता है ✲ जिन खिड़कियों में ग्रिल न लगी हो बच्चों को उन से दूर ही रखें, चूंकि खिड़की से बाहर की दुन्या बच्चे के लिए इन्तेहाई दिलचस्प होती है इस लिए ग़ैर मेह़फ़ूज़ खिड़कियों के पास कोई ऐसा फ़र्नीचर न रखें कि जिस पर चढ़ कर बच्चा खिड़की तक पहुंच सके ✲ छत पर बड़ी मुन्डेर (Boundary) लाज़मी तामीर करवाएं वरना छत की त़रफ़ जाने वाले दरवाज़े बच्चों के लिए मुकम्मल बन्द रखें ✲ बच्चों को अकेले बाहर न जाने दें और अपने साथ ले कर जाएं तो बच्चों का हाथ थामे रखें ✲ बच्चों को जब कार में ले कर बैठें तो चाइल्ड लॉक लगाने का लाज़मी एहतेमाम करें ✲ बच्चों को वक़्तन फ़ वक़्तन नुक़्सान देह अश्या का तआ़रुफ़ (Introduction) कराते रहें ।

अल्लाह करीम हमारे कल के मेहकते इन फूलों को अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे । आमीन

ज़रूरत मन्दों की मदद

मौलाना हैदर अ़ली मदनी

नन्हे मियां आज बहुत ख़ुश थे कि उन की सायकल आने वाली है। दर अस्ल कुछ महीने पेहले मार्केट से गुज़रते वक़्त नन्हे मियां को एक प्यारी सी सायकल नज़र आई थी, जब उन्हों ने अब्बूजान से ख़रीदने का कहा तो वोह बोले : बेटा अभी तो पैसे नहीं हैं, ऐसा करते हैं मैं हर महीने की तनख़्वाह से कुछ पैसे अलग रख लिया करूंगा यूं तीन माह में आप की सायकल आ जाएगी और रात खाना खाते हुवे अब्बूजान ने बताया था कि आज तनख़्वाह मिल जाएगी तो पैसे पूरे हो जाएंगे।

नन्हे मियां सायकल के ख़यालों में गुम थे जब अम्मीजान ने आवाज़ दी और कहा : येह नियाज़ का ज़र्दा सामने वालों के घर दे आओ !

नन्हे मियां : अम्मीजान ! मुहर्रम का महीना तो गुज़र गया है फिर नियाज़ किस की ?

बेटा ! येह नियाज़ तो हम ने आला हज़रत के ईसाले सवाब के लिए दिलवाई है जो इसी माह यानी सफ़र की 25 तारीख़ को फ़ौत हुवे थे, अब जल्दी से ज़र्दा दे आओ वरना ठन्डा हो जाएगा।

मग़रिब के बाद अब्बू जान घर आए लेकिन ख़ाली हाथ। खाना खाने बैठे तो नन्हे मियां बोले : अब्बूजान आज तो आप ने सायकल लानी थी।

अब्बूजान : जी बेटा ! मुझे याद था लेकिन ऑफ़िस में ज़रूरी काम आ गया था, आप बस कुछ महीने और सब्र कर लें फिर मैं अपने बेटे को अच्छी सी सायकल दिलवाऊंगा।

नन्हे मियां से तो कल तक सब्र नहीं हो रहा था, मज़ीद कुछ माह का सुन कर तो चेहरे का रंग ऐसे बदलने लगा जैसे बस अभी रोने लग जाएंगे।

दादीजान : लेकिन बेटा ! तुम ने तो कहा था इस महीने आ जाएगी।

अब्बूजान : दर अस्ल पैसे तो इकठ्ठे हो गए थे अम्मीजान ! लेकिन आज सुब्ह ड्यूटी पर आते हुवे हमारे ऑफ़िस स्वेपर का एक्सीडन्ट हो गया था, अ़स्र के बाद हम सब कलिग्ज़ (Colleagues) उसी की इ़यादत के लिए गए थे उस बेचारे की तो टांग की हड्डी में फ़्रेक्चर हो गया है डॉक्टरों ने बेड रेस्ट का कहा है।

अल्लाह पाक उसे जल्द शिफ़ा ए कामिला अ़ता फ़रमाए, दादीजान की दुआ़ पर अम्मी और अब्बूजान दोनों ने आमीन कहा।

ऊपर से बाईक का नुक़्सान अलग, घर में कोई भी कमाने वाला नहीं है। तभी हम सब ने मिल कर अपनी अपनी सेविंग्ज़ उसे दे दी ताकि इलाज भी अच्छे तरीक़े से हो जाए और घर के ज़रूरी अख़राजात भी चलते रहें।

इतना सुनना था कि नन्हे मियां मुंह बसोर कर बैठ गए।

दादी अम्मां ने देखा तो ज़र्दे की प्लेट हाथ में लिए नन्हे मियां के क़रीब हुईं और प्यार करते हुवे कहा : नन्हे मियां अब आला ह़ज़रत की नियाज़ के साथ भी नाराज़ हो क्या ?

नन्हे मियां मुंह बसोरते हुवे दादी अम्मां के हाथ से प्लेट पकड़ने लगे तो वोह बोलीं : नहीं ! आज मैं अपने बेटे को अपने हाथों से खिलाऊंगी।

छोटे छोटे लुक़्मे खिलाते हुवे दादी अम्मां ने पूछा : आप को पता है आला ह़ज़रत कौन थे ? नन्हे मियां : जी वोही ! जिन्हों ने एक माह में कुरआने पाक ह़िफ़्ज़ कर लिया था, बहुत बड़े आ़शिक़े रसूल थे।

दादी ने नन्हे मियां को समझाते हुवे कहा : शाबाश बेटा, तो आप मेरी बताई हुई बातें याद रखते हो, आज मैं आप को उन की एक और बात बताती हूं, आला ह़ज़रत **अल्लाह** पाक के ज़रूरत मन्द और ग़रीब बन्दों का भी बहुत ख़याल रखते थे, एक बार रात में ह़वेली के फ़ाटक तक आए तो सर्दी के मौसम में मुलाज़िम को वैसे ही बैठे देख कर ह़ैरान हुवे और पूछा : कोई रज़ाई वग़ैरा नहीं है तुम्हारे पास क्या ? वोह बेचारा चुप हो गया। आप अन्दर गए और अपनी रज़ाई ला कर उस मुलाज़िम को दे दी।

नन्हे मियां : वाह, लेकिन अपनी रज़ाई क्यूं दे दी ?

दादी ने ज़र्दे का एक लुक़्मा नन्हे मियां के मुंह में डालते हुवे कहा : हां जी ! तभी तो वोह आला ह़ज़रत थे, **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे ग़रीबों की मदद करते हैं और **अल्लाह** पाक को राज़ी करने के लिए अपनी ज़रूरत की चीज़ें ज़रूरत मन्दों को दे देते हैं। तो नन्हे मियां बुज़ुर्गों की नियाज़ खाने के साथ उन की सीरत भी अपनाने की कोशिश करनी चाहिए।

दादी ! अब मुझे कोई ग़म नहीं, सायकल का क्या है वोह तो बाद में भी आ सकती है। येह केह कर नन्हे मियां ने अपने नन्हे मुन्ने हाथ से ज़र्दे का एक लुक़्मा दादी के मुंह में डाल दिया तो दादी ने नन्हे मियां को अपने सीने से लगाया।

हुरूफ़ मिलाइए !!!

प्यारे बच्चो ! हमारे प्यारे नबी ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** पाक के आख़री नबी हैं, हमारे सच्चे नबी ने ख़ुद बताया है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा और मैं आख़री नबी हूं। दुन्या के सारे मुसलमान भी आप को आख़री नबी जानते और मानते हैं और जो ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद किसी और को नबी मानता है तो वोह मुसलमान नहीं है। मुसलमान इस अ़क़ीदे को "**अ़क़ीदए ख़त्मे नबुव्वत**" केहते हैं। हमें ऐसे लोगों से दूर रेहना चाहिए जो हमारे प्यारे नबी को आख़री नबी नहीं मानते।

आप ने ऊपर से नीचे और सीधी से उल्टी त़रफ़ हुरूफ़ मिला कर नाम तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "अल्लाह पाक" तलाश किया गया है।

येह नाम तलाश कीजिए :

1 मुह़म्मद 2 आख़री नबी 3 अ़क़ीदा 4 ख़त्मे नबुव्वत 5 मुसलमान

آ	ق	ے	ت	ر	ع	و	ق	ئ
خ	ک	ا	پ	ہ	ل	ل	ا	ی
ر	ا	ت	خ	م	گ	ھ	ج	ہ
ی	ا	س	د	ح	ف	ا	ۃ	پ
ن	ز	ن	ا	م	ل	س	م	ل
ب	ش	ب	ہ	د	ی	ق	ع	ک
ی	چ	ت	و	ب	ن	م	ت	خ

1 محمد 2 آخری نبی 3 عقیدہ 4 نبوت 5 مسلمان۔

रूहे़ आमाल

उम्मे मीलाद अ़त्तारिया

हर मुसलमान की सब से अहम और अ़ज़ीज़ तरीन चीज़ उस का ईमान होता है, येही वज्ह है कि शैता़न की भरपूर कोशिश मुसलमान को उस के ईमान से मेह़रूम करना होती है । दीन में ईमान की अहमियत इसी बात से जान लीजिए कि कु़रआने करीम में **अल्लाह** पाक ने कई मक़ामात पर "اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ" फ़रमा कर आमाल से पेहले ईमान का ज़िक्र फ़रमाया है जो इस बात का वाज़ेह़ सुबूत है कि ईमान व अ़क़ीदे की पुख़्तगी और दुरुस्ती के बग़ैर नेकियों और इबादात का कोई फ़ाइदा नहीं क्यूंकि अ़क़ीदे ही पर तमाम मज़हबी आमाल और रूह़ानी अह़वाल की इमारत खड़ी होती है । यूं समझिए कि जिस त़रह़ कोई इमारत कमज़ोर बुन्यादों पर क़ाइम नहीं रेह सकती, इसी त़रह़ आमाल व इबादात की इमारत की मज़बूती के लिए अ़क़ीदे की बुन्यादों का पुख़्ता होना निहायत ज़रूरी है ।

याद रखिए ! ईमान का एक लुग़वी माना तस्दीक़ करना यानी सच्चा मानना है । (تفسیر قرطبی، البقرۃ، تحت الآیۃ:3، 1/174)

और एक माना अम्न देना है । चूंकि मोमिन अच्छे अ़क़ीदे इख़्तियार कर के अपने आप को हमेशा वाले अ़ज़ाब से अम्न दे देता है इस लिए अच्छे अ़क़ीदों के इख़्तियार करने को ईमान केहते हैं । (تفسیر نعیمی، البقرۃ، تحت الآیۃ:3، 1/98)

और इस्ते़लाहे़ शर्अ़ में ईमान से मुराद सच्चे दिल से उन सब बातों की तस्दीक़ करना है जो ज़रूरियाते दीन से हैं । (बहारे शरीअ़त, 1/172 ब तग़य्युरिन) जबकि ज़रूरियाते दीन से मुराद इस्लाम के वोह अह़काम हैं जिन को हर ख़ासो आ़म जानते हों, जैसे **अल्लाह** पाक का एक होना, अम्बिया ए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नबुव्वत, नमाज़, रोज़े, ह़ज, जन्नत, दोज़ख़, क़ियामत में उठाया जाना, ह़िसाबो किताब लेना वग़ैरा, मसलन येह अ़क़ीदा रखना (भी ज़रूरियाते दीन में से है) कि हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं, हु़ज़ूर के बाद कोई नया नबी नहीं हो सकता । ज़रूरियाते दीन का मुन्किर बल्कि इन में अदना शक करने वाला बिल यक़ीन काफ़िर होता है ऐसा कि जो इस के कुफ़्र में शक करे वोह भी काफ़िर । (फ़तावा रज़विया, 29/413 मुलख़्ख़सन)

प्यारी इस्लामी बहनो ! ग़ौर फ़रमाइए ! क्या हमें अपने अ़क़ाइद मालूम हैं ? या फिर हम ने कभी इन्हें सीखने की कोशिश की ? या कम अज़ कम येह जानने की कोशिश की, कि वोह कौन सी बातें हैं जो अ़क़ीदे की ख़राबी का बाइ़स बन कर हमें दाइरए इस्लाम से ख़ारिज कर सकती हैं ? याद रखिए ! जहालत व नादानी के बाइ़स कई ख़्वातीन की ज़बान से कुफ़्रिया कलेमात तक सुनने को मिलते हैं, तवज्जोह दिलाई जाए तो मालूम होता है कि ऐसा वोह अपनी बड़ी बूढ़ी औ़रतों से सुनती आई हैं । लेहाज़ा अपने बड़ों की ऐसी ख़िलाफ़े शरीअ़त बातों से बचना और अपने बच्चों को बचाना ज़रूरी है । चुनान्चे ज़रूरी व बुन्यादी अ़क़ाइद से ख़ुद भी आगाह रहें और अपने बच्चों के सामने भी इन का तज़्केरा करती रहें कि हमें पैदा करने वाला **अल्लाह** है, हम सब उस के बन्दे हैं, हमारे प्यारे नबी ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** के आख़री नबी हैं, उन के बाद कोई नबी नहीं आएगा, प्यारे नबी के तमाम सह़ाबी जन्नती हैं । इसी त़रह़ जन्नत और दोज़ख़ का ज़िक्र करें और आख़ेरत की ज़िन्दगी के मुतअ़ल्लिक़ भी इन्हें बचपन से ही बताती रहें कि बचपन की सिखाई हुई बात आख़री उ़म्र तक ज़ेहन में पुख़्ता रेहती है नीज़ मामूलाते एहले सुन्नत पर अ़मल करें और करवाएं, हो सके तो हर माह घर में बारहवीं, ग्यारहवीं का एहतेमाम करें, बुज़ुर्गाने दीन के उ़र्स पर नियाज़ का एहतेमाम करने के इलावा इन का कुछ न कुछ ज़िक्रे ख़ैर भी करें, इस से बच्चों के दिलों में बुज़ुर्गाने दीन की अ़क़ीदत व मह़ब्बत पैदा होगी और दुन्या ओ आख़ेरत की बरकतें भी मिलेंगी । **अल्लाह** पाक हमें अह़सन अन्दाज़ में दीन के अ़क़ाइदो आमाल का इ़ल्म सीखने और बच्चों की इस्लामी तरबियत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और कुफ़्रिया कलेमात बोलने सुनने से हमेशा मेह़फ़ूज़ फ़रमाए नीज़ हमारा ख़ातेमा ईमान पर फ़रमाए ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ह़ज़रते सुमैय्या बिन्ते ख़ुब्बात़ رضی اللہ عنہا

मौलाना मुह़म्मद बिलाल सईद अ़त्तारी मदनी

ह़ज़रते सुमैया बिन्ते ख़ुब्बात़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का शुमार उन अ़ज़ीमुश्शान हस्तियों में होता है जिन्हों ने इब्तेदाई दौर में ही इस्लाम क़बूल कर के कुफ़्रो शिर्क के अन्धेरे से ऐसी दूरी इख़्तियार की, कि फिर कोई क़ुव्वत और त़ाक़त आप को वापस न खींच सकी।

तआ़रुफ़ : आप अबू हुज़ैफ़ा बिन मुग़ीरा मख़्ज़ूमी की कनीज़ थीं, इस ने ख़ुद आप का निकाह़ अपने ह़लीफ़ ह़ज़रते यासिर बिन आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से किया और जब इन के यहां ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत हुई तो आप को आज़ाद कर दिया, ह़ज़रते अ़म्मार और इन के वालिदैन का शुमार भी जल्द इस्लाम क़बूल करने वालों में होता है।[1]

इस्लाम की ख़ात़िर तकालीफ़ पर सब्र : ह़ज़रते सुमैया बिन्ते ख़ुब्बात़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا और आप के शौहर चूंकि उन सात लोगों में से थे जिन्हों ने सब से पेहले अपना मुसलमान होना ज़ाहिर किया तो कुफ़्फ़ारे मक्का ने आप और आप के घराने पर ज़ुल्मो सितम की ह़द कर दी। मसलन वोह इन सब को लोहे की ज़िरह पेहना कर तपती रेत पर धूप में खड़ा कर देते, लेकिन ऐसी सूरते ह़ाल में भी आप ने सब्रो इस्तेक़लाल से काम लिया, नाशुक्री का कोई भी कलेमा अदा न किया, एक मरतबा नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस त़रफ़ से गुज़र रहे थे तो इन्हें तपते सेहरा में ईज़ाएं पाता देख कर इरशाद फ़रमाया : صَبْرًا اٰلَ یَاسِرٍ مَوْعِدُکُمُ الْجَنَّۃ यानी ऐ आले यासिर ! सब्र का दामन थामे रेहना, तुम्हारे लिए जन्नत का वादा है।[2]

इस्लाम की शहीदए अव्वल : आप वोह पेहली ख़ातून हैं जिन का ख़ून राहे ख़ुदा में सब से पेहली बार बहाया गया, वोह इस त़रह़ कि अबू जहल ने आप को नेज़ा मारा जिस से आप शहीद हो गईं।[3]

आले यासिर के लिए ख़ुश ख़बरी : जब ह़ज़रते सुमैया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को शहीद किया गया तो आप के बेटे ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا सख़्त सदमे की ह़ालत में आक़ा ए करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुशरिकीन ने ज़ुल्म की इन्तेहा कर दी, ह़ुज़ूर ने इन्हें सब्र की तल्क़ीन की और इन के लिए इन अल्फ़ाज़ में दुआ फ़रमाई : اَللّٰھُمَّ لَا تُعَذِّبْ اَحَدًا مِنْ اٰلِ یَاسِرٍ بِالنَّارِ यानी ऐ **अल्लाह** ! आले यासिर को दोज़ख़ के अ़ज़ाब से मेह़फ़ूज़ फ़रमा।[4] जब जंगे बद्र में अबू जहल मारा गया तो ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को बुला कर मुबारक बाद दी और इरशाद फ़रमाया : قَدْ قَتَلَ اللہُ قَاتِلَ اُمِّکَ यानी **अल्लाह** पाक ने तेरी वालिदा के क़ातिल से बदला ले लिया।[5]

ज़रा ग़ौर कीजिए कि जाहो जलाल वाले अ़ज़ीम सरदाराने क़ुरैश के सामने एक बूढ़ी और नादार ग़ुलामाना ज़िन्दगी बसर करने वाली ह़ज़रते सुमैया बिन्ते ख़ुब्बात़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا कैसे ख़म ठोंक कर खड़ी रहीं और रूअसा ए क़ुरैश के ज़ुल्मो सितम से भी न डगमगाईं, बल्कि राहे ख़ुदा में जान का नज़राना तक पेश कर दिया, इस से उन इस्लामी बहनों को दर्स ह़ासिल करना चाहिए जो त़रह़ त़रह़ की सहूलतें और आसानियां होने के बा वुजूद दीन से दूर हैं और **अल्लाह** करीम की ना फ़रमानियों में लगी हुई हैं उन में न फ़राइज़ो वाजिबात का इ़ल्म सीखने का जज़्बा है न सुन्नतों पर अ़मल का शौक़।

अल्लाह करीम हमारे ह़ाल पर रेह़म फ़रमाए और सह़ाबियात के नक़्शे क़दम पर चलने और दीन पर अ़मल पैरा होने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، 8/190 (2) اسد الغابہ، 7/167 ملخصاً (3) الاستیعاب، 4/419 ملخصاً (4) الاستیعاب، 4/419 ملخصاً (5) طبقات ابن سعد، 8/208۔

औ़रत का इ़द्दत में पर्दे का एहतेमाम कितना ज़रूरी ?

मुफ़्ती फुज़ैल रज़ा अ़त्तारी

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस बारे में कि अगर किसी औ़रत के शौहर का इन्तेक़ाल हो जाए तो उसे अपनी इ़द्दत के दौरान किन लोगों से पर्दा करना ज़रूरी है और किन से नहीं ? नीज़ इस दौरान भतीजों भांजों यानी सगे भाई और बहनों के बच्चों से भी पर्दा करना लाज़िम है या नहीं ? इसी त़रह़ दामाद से पर्दा है या नहीं ? बाज़ लोग येह भी समझते हैं कि इ़द्दते वफ़ात में आस्मान से भी पर्दा है, क्या येह दुरुस्त है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

बाज़ लोग बर बिनाए जेहालत येह समझते हैं कि इ़द्दत में पर्दे के कोई ख़ुसूसी अह़काम होते हैं, वोह सख़्त ग़लत़ी पर हैं। दर अस्ल शरीअ़त में औ़रत के लिए जिन मर्दों से पर्दा करने का हु़क्म है उन से हर ह़ाल में पर्दा करना है। औ़रत इ़द्दत में हो या न हो। और जिन मर्दों से पर्दे का हु़क्म नहीं है उन से इ़द्दत में भी पर्दा नहीं। यानी इ़द्दत से पर्दे के साबेक़ा अह़कामात बदलते नहीं हैं बल्कि वोही रेहते हैं।

किन से पर्दा करना है और किन से नहीं इस ह़वाले से शरई उसूल येह है कि :

1 ग़ैर मेह़रम यानी अजनबी मर्द, मसलन देवर, जेठ, चचाज़ाद, फूफीज़ाद, ख़ालाज़ाद, मामूंज़ाद, बहनोई वग़ैरा से पर्दा हर ह़ाल में वाजिब है चाहे औ़रत इ़द्दत में हो या आ़म ह़ालत में हो।

2 मह़ारिम नसबी यानी भाई, बेटा, चचा, मामूं और वालिद वग़ैरा से पर्दा न करना वाजिब, अगर इन से पर्दा करेगी तो गुनहगार होगी।

3 सहरी मह़ारिम यानी सुसराली रिश्ते से जो मह़ारिम हैं जैसे सुसर वग़ैरा यूंही रिज़ाई मह़ारिम जैसे रिज़ाई भाई और रिज़ाई वालिद वग़ैरा से पर्दा करना वाजिब नहीं, पर्दा करे, तो भी जाइज़ है न करे, तो भी जाइज़ है, अलबत्ता जवानी की ह़ालत में पर्दा करना ही मुनासिब है। और मुज़िन्नए फ़ितना यानी फ़ितने का ज़न्ने ग़ालिब हो तो पर्दा करना वाजिब है।

इस तफ़्सील की रौशनी में पूछी गई सूरत का जवाब वाज़ेह़ है वोह यूं कि भतीजे और भांजे चूंकि नसबी मह़ारिम में दाख़िल हैं इस लिए इन से इ़द्दत के दौरान पर्दा न करना वाजिब है यानी करेगी तो गुनहगार होगी। और दामाद चूंकि सुसराली रिश्ते के एतेबार से मेह़रम है इस लिए इस से पर्दा करना न करना दोनों ही जाइज़ है अलबत्ता सास के जवान होने की ह़ालत में पर्दा करना मुनासिब व बेहतर है और अगर फ़ितने का ग़ालिब गुमान हो तो पर्दा करना वाजिब होगा। येह हु़क्म भी मुत़लक़न है इ़द्दत के साथ ही ख़ास नहीं है। और शरीअ़त में आस्मान से पर्दे का कोई तसव्वुर नहीं है। लेहाज़ा इ़द्दत में औ़रत अपने घर की चार दीवारी में रेहते हुवे मकान के खुले ह़िस्से यानी सेह़न वग़ैरा में आ सकती है इस को देख भी सकती है। हां इस सूरत में जिन मर्दों से पर्दा करना ज़रूरी है इन से बे पर्दगी न हो इस बात का ज़रूर ध्यान रखा जाए।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दुआ ए अ़त्तार पर मदनी रसाइल के मुत़ालए़ (Reading) की धूम

शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी دامت برکاتہم العالیہ ने शव्वालुल मुकर्रम और ज़ुल क़ादतिल ह़राम 1442 हिजरी में दर्जे ज़ैल मदनी रसाइल पढ़ने / सुनने की तरग़ीब दिलाई और पढ़ने / सुनने वालों को दुआ़ओं से नवाज़ा : 1 या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला **"फ़ैज़ाने इमाम बुख़ारी"** पढ़ या सुन ले उसे इमाम बुख़ारी के इश्क़े रसूल से ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमा और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे, आमीन 2 या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला **"इरशादाते इमाम अह़मद रज़ा"** पढ़ या सुन ले उसे इमाम अह़मद रज़ा ख़ान के फ़ैज़ान से माला माल फ़रमा कर बिला ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला नसीब फ़रमा, आमीन 3 या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला **"अपनी परेशानी ज़ाहिर करना कैसा ?"** पढ़ या सुन ले उसे अपनी रिज़ा के लिए मुसीबतों पर सब्र और बहुत ज़्यादा अज्र अ़त़ा कर और उसे जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे नबी ह़ज़रते अय्यूब علیہ السلام का पड़ोस नसीब फ़रमा। आमीन। 4 या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला **"बादशाह की सड़ी हुई लाश"** पढ़ या सुन ले उस के सारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा और उसे अपना मक़्बूल बन्दा बना कर बे ह़िसाब मग़्फ़िरत से नवाज़ दे, आमीन। 5 या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला **"काम के अवराद"** पढ़ या सुन ले उसे गुनाहों और फ़ुज़ूल कामों से बचा और उस को ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल रेहने वाली ज़बान अ़त़ा फ़रमा और उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत कर, आमीन। 6 या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला **"इमाम मालिक का इश्क़े रसूल"** पढ़ या सुन ले उसे इमाम मालिक के सदक़े इश्क़े मदीना से मालामाल फ़रमा, उसे बारबार मदीनए पाक की बा अदब ह़ाज़िरी नसीब फ़रमा, उस को बे ह़िसाब बख़्श दे। आमीन। 7 या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला **"घरेलू झगड़ों का इलाज"** पढ़ या सुन ले उस के घरबार और रोज़गार में बरकतें अ़त़ा फ़रमा कर उसे अपनी राह में ख़र्च करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। आमीन। 8 या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला **"क़ुरबानी क्यूं करते हैं ?"** पढ़ या सुन ले उसे हर साल ख़ुश दिली से क़ुरबानी करने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमा और उस की क़ुरबानी को उस के लिए पुल सिरात़ की सवारी बना। اٰمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ والہ وسلم

रिसाला	पढ़ने / सुनने वाले इस्लामी भाई	इस्लामी बहनें	कुल तादाद
फ़ैज़ाने इमाम बुख़ारी	21 लाख 49 हज़ार 504	8 लाख 3 हज़ार 497	29 लाख 53 हज़ार 1
इरशादाते इमाम अह़मद रज़ा	20 लाख 76 हज़ार 574	7 लाख 72 हज़ार 959	28 लाख 49 हज़ार 533
अपनी परेशानी ज़ाहिर करना कैसा ?	22 लाख 55 हज़ार 937	7 लाख 13 हज़ार 87	29 लाख 69 हज़ार 24
बादशाह की सड़ी हुई लाश	20 लाख 5 हज़ार 337	7 लाख 57 हज़ार 562	27 लाख 62 हज़ार 899
काम के अवराद	18 लाख 36 हज़ार 127	7 लाख 96 हज़ार 884	26 लाख 33 हज़ार 11
इमाम मालिक का इश्क़े रसूल	21 लाख 6 हज़ार 864	8 लाख 29 हज़ार 948	29 लाख 36 हज़ार 812
घरेलू झगड़ों का इलाज	22 लाख 24 हज़ार 549	7 लाख 46 हज़ार 113	29 लाख 70 हज़ार 662
क़ुरबानी क्यूं करते हैं ?	21 लाख 31 हज़ार 150	8 लाख 71 हज़ार 349	30 लाख 2 हज़ार 499

अल्लाह की नेमत है, येह दावते इस्लामी

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

अल्लाह की नेमत है, येह दावते इस्लामी
आक़ा की इनायत है, येह दावते इस्लामी

रह़मान की रेह़मत है, येह दावते इस्लामी
शैत़ां की हलाकत है, येह दावते इस्लामी

इस्लाम की ज़ीनत[1] है, येह दावते इस्लामी
और दीन की इ़ज़्ज़त है, येह दावते इस्लामी

इस्लाम की क़ुव्वत है, येह दावते इस्लामी
और दीन की शौकत[2] है, येह दावते इस्लामी

इस्लाम की दावत है, येह दावते इस्लामी
और दाई ए[3] सुन्नत है, येह दावते इस्लामी

सब नबियों की, वलियों की, अस्ह़ाब की, एहले बैत
की ख़ास इनायत है, येह दावते इस्लामी

फ़ैज़ाने रज़ा है और, येह ग़ौस का फ़ैज़ां है
ख़्वाजा की हि़मायत है, येह दावते इस्लामी

उ़श्शाक़े मुह़म्मद की ठन्डक है येह आंखों की
हर दिल में सरायत[4] है, येह दावते इस्लामी

मौजूदा सियासत से है इस को अ़लाक़ा[5] क्या !
बस नेकी की दावत है, येह दावते इस्लामी

अल्लाह के डर में और उल्फ़त में मुह़म्मद صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم की
करवाती ज़्यादत है, येह दावते इस्लामी

दीदारे मुह़म्मद صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم की ह़सरत में तमन्ना में
करवाती ज़्यादत है, येह दावते इस्लामी

सरकार के रौज़े के दीदार की ह़सरत में
करवाती ज़्यादत है, येह दावते इस्लामी

आपस की मह़ब्बत के येह जाम पिलाती है
और दाफ़ेए़[6] नफ़रत है, येह दावते इस्लामी

मलह़ूज़[7] शरीअ़त है, तो पासे त़रीक़त है
सर ता पा सआ़दत[8] है, येह दावते इस्लामी

इस्लाम की तालीमात और दीन के अह़कामात
सिखलाती शरीअ़त है, येह दावते इस्लामी

क़ुरआं की तिलावत है, नातों की ह़लावत[9] है
अज़्कार की लज़्ज़त है, येह दावते इस्लामी

आ जाओ गुनहगारो ! बदकारो ! सियहकारो !
बेशक रहे जन्नत है, येह दावते इस्लामी

सरकार की दुख्यारी उम्मत की है ख़ैर अंदेश[10]
और ख़ादिमे मिल्लत है, येह दावते इस्लामी

अल्लाह की रेह़मत से दुन्या में भी उ़क़्बा[11] में
अ़त्तार की राह़त है, येह दावते इस्लामी

---

(1) ख़ूब सूरती (2) शान (3) जो दावत दे (4) समा जाना (5) तअ़ल्लुक़ (6) दूर करने वाला (7) लेह़ाज़ किया गया (8) ख़ुश नसीबी (9) मिठास, लज़्ज़त (10) भलाई चाहने वाला (11) आख़ेरत

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिए और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिए !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही़ (Reformatory), फ़लाही़ (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है